(106) हमसे अली बिन जअदी ने बयान किया, उन्हें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्होंने रबई बिन हिराश से सुना कि मैंने हज़रत अली (रज़ि.) को यह फ़र्माते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझ पर झूठ मत बोलो क्योंकि जो मुझ पर झूठ बांधे वो दोज़ख़ में दाख़िल हो।

M-09825696131

١٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْصُورٌ قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَكْذِبُوا عَلَيَّ، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَلِجِ النَّارَ)).

यानी मुझ पर झूठ बाँधने वाले को चाहिए कि वो दोज़ख़ मे दाख़िल होने को तैयार रहे।

(107) हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने, उनसे जामेअ बिन शद्दाद ने, वो आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से और वो अपने बाप अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। उन्होंने कहा मैंने अपने बाप यानी ज़ुबैर (रज़ि.) से पूछा कि मैंने कभी आपसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की अहादीष़ नहीं सुनीं। मैंने आपको यह भी फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स मुझ पर झूठ बांधेगा वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ لِلزُّبَيْرِ: إِنِّي لاَ أَسْمَعُكَ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَمَا يُحَدِّثُ فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ. قَالَ: أَمَا إِنِّي لَمْ أُفَارِقْهُ، وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

इसीलिये मैं हदीष़े रसूल (ﷺ) बयान नहीं करता कि मुबादा कहीं ग़लतबयानी न हो जाए।

(108) हमसे अबू मअमर ने बयान किया, उनसे अब्दुल वारिष़ ने अब्दुल अज़ीज़ के वास्ते से नक़ल किया कि अनस (रज़ि.) फ़र्माते थे कि मुझे बहुत सी हदीष़ें बयान करने से यह बात रोकती है कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स मुझपर जान—बूझकर झूठ बांधे तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قَالَ أَنَسٌ: إِنَّهُ لَيَمْنَعُنِي أَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

(109) हमसे मक्की इब्ने इब्राहीम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) के वास्ते से बयान किया, वो कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स मेरे नाम से वो बात बयान करे जो मैंने नहीं कही तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।

١٠٩- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ هُوَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يَقُلْ عَلَيَّ مَا لَمْ أَقُلْ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

ये हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) की पहली ष़लाष़ी ह़दीष़ है। ष़लाष़ी वो ह़दीष़ हैं जिनमें रसूले करीम (ﷺ) और इमाम बुख़ारी (रह़) तक दरम्यान में सिर्फ़ तीन ही रावी हों। ऐसी ह़दीष़ों को ष़लाष़ियाते इमाम बुख़ारी (रह़) कहा जाता है। और जामेअ

बाब 11 : इस मसले में कि पैशाब और पाखाना के वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुँह नहीं करना चाहिये लेकिन जब किसी इमारत या दीवार वग़ैरह की आड़ हो तो कुछ हर्ज नहीं

١١ - بَابُ لاَ تُسْتَقْبَلُ الْقِبْلَةُ بِغَائِطٍ أَوْ بَوْلٍ، إِلاَّ عِنْدَ الْبِنَاءِ : جِدَارٍ أَوْ نَحْوِهِ

(144) हमसे आदम ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने ज़िब ने, कहा कि हमसे ज़ुहरी ने अ़त्ता बिन यज़ीद अल लैष़ी के वास्ते

से नक़ल किया, वो हज़रत अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुममें से कोई पाख़ाने में जाए तो क़िब्ले की तरफ़ मुँह करे न उसकी तरफ़ पीठ करे (बल्कि) मश्रिक़ की तरफ़ मुँह कर लो या मग़्रिब की तरफ़।
(दीगर मक़ाम : 394)

١٤٤ - حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيْدَ اللَّيْثِيِّ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ الْغَائِطَ فَلاَ يَسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ وَلاَ يُوَلِّهَا ظَهْرَهُ، شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا)).

[طرفه في : ٣٩٤].

M-09825696131

तश्रीह : ये हुक्म मदीना वालों के लिए ख़ास़ है क्योंकि मदीना मक्का से शिमाल (उत्तर दिशा) की त़रफ़ वाक़ेअ़ है। इसलिए आपने क़ज़ा–ए–ह़ाजत के वक़्त पश्चिम या पूरब की त़रफ़ चेहरा करने का हुक्म दिया, ये बैतुल्लाह का अदब है। इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़दीष़ के उ़न्वान से ये षा़बित करना चाहा है कि अगर कोई आड़ सामने हो तो क़िब्ला की त़रफ़ चेहरा कर सकता है। आपने जो ह़दीष़ इस बाब में ज़िक्र की है वो बाब के तर्जुमा के मुत़ाबिक़ नहीं होती क्योकि ह़दीष़ से मुत़्लक़ मुमानअ़त निकलती है और बाब के तर्जुमा में इमारत को मुस्तष़्ना (अलग) किया है। कुछ ने कहा है कि आपने ये ह़दीष़ मह़ज़ मुमानअ़त षा़बित करने के लिए ज़िक्र की है और इमारत का इस्तिष़्ना आगे वाली ह़दीष़ से निकाला है जो इब्ने उ़मर से मरवी है। कुछ ने लफ़्ज़े ग़ायत़ से सिर्फ़ मैदान मुराद लिया है और इस मुमानअ़त से समझा गया कि इमारत में ऐसा करना दुरुस्त है।

ह़ज़रत अ़ल्लामा शैख़ुल ह़दीष़ मौलाना उ़बैदुल्लाह मुबारकपुरी ने इस बारे में दोनों तरफ़ की दलीलों पर मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) रोशनी डालते हुए अपना आख़िरी फ़ैसला ये दिया है, **'व इन्दी अल इहतिराज़ु अनिल इस्तिक़्बालि वल इस्तिदबारि फ़िल बुयूति अहवतु वुजूबन ला नुदुबन'** यानी मेरे नज़दीक भी वजूबन एह़तियात़ का तक़ाज़ा है कि घरों में भी बैतुल्लाह की त़रफ़ पीठ या मुँह करने से परहेज़ किया जाए। (मिर्आत जिल्द अव्वल पेज नं. 241) अ़ल्लामा मुबारकपुरी (रह़) स़ाह़िबे **तोह़फ़तुल अह़वज़ी** ने भी ऐसा ही लिखा है।

अबू अवाना ने अपनी सहीह में निकाला है। अबू अवाना की रिवायत के लिये हदीष नं. 260 मुलाहज़ा की जा सकती है।

बाब 22 : इस बयान मेंकि जब औरत को एहतलाम हो तो उस पर भी ग़ुस्ल वाजिब है

٢٢- بَابٌ إِذَا احْتَلَمَتِ الْمَرْأَةُ

M-09825696131

(282) हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने हिशाम बिन उर्वा के वास्ते से, उन्होंने अपने वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर से, वो ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा से, उन्होंने उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) से, आपने फ़र्माया कि उम्मे सुलैम अबू तलहा (रज़ि.) की औरत रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और कहा कि अल्लाह तआला हक़ से हया नहीं करता। क्या औरत पर भी जबकि उसे एहतलाम हो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। तो रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ अगर (अपनी मनी का) पानी देखे (तो उसे भी ग़ुस्ल करना होगा)

(राजेअ : 130)

٢٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنَّهَا قَالَتْ: جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ امْرَأَةُ أَبِي طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ إِنَّ اللهَ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ، هَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْ غُسْلٍ إِذَا هِيَ احْتَلَمَتْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((نَعَمْ، إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ)). [راجع: ١٣٠]

इस हदीष से मा'लूम हुआ कि औरत को भी एहतलाम होता है। इसके लिये भी मर्द का सा हुक्म है कि जागने पर मनी की तरी अगर कपड़े या जिस्म पर देखे तो ज़रूर ग़ुस्ल कर लें तरी न पाए तो ग़ुस्ल वाजिब नहीं।

बाब 23 : इस बयान में कि जुनुबी का पसीना और मुसलमान नापाक नहीं होता

٢٣- باب عَرَق الجُنُبِ، وَأَنَّ المسْلمَ لاَ يَنْجُسُ

(283) हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे हुमैद तवील ने, कहा हमसे बक्र बिन अब्दुल्लाह ने अबू राफ़ेअ के वास्ते से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि मदीना के किसी रास्ते पर नबी करीम (ﷺ) से उनकी मुलाक़ात हुई। उस समय अबू हुरैरह जनाबत की हालत में थे। अबू हरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं पीछे रह कर लौट गया और ग़ुस्ल करके वापस आया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि ऐ अबू हुरैरह! कहाँ चले गए थे? उन्होंने जवाब दिया कि मैं जनाबत की हालत में था इसलिये मैंने आपके साथ बग़ैर ग़ुस्ल के बैठना बुरा समझा। आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! मोमिन हर्गिज़ नजिस नहीं हो सकता।

(दीगर मक़ाम : 285)

٢٨٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ: حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا بَكْرٌ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَقِيَهُ فِي بَعْضِ طَرِيْقِ الْمَدِيْنَةِ وَهُوَ جُنُبٌ، فَانْخَنَسْتُ مِنْهُ، فَذَهَبْتُ فَاغْتَسَلْتُ ثُمَّ جَاءَ، فَقَالَ: أَيْنَ كُنْتَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: كُنْتُ جُنُبًا فَكَرِهْتُ أَنْ أُجَالِسَكَ وَأَنَا عَلَى غَيْرِ طَهَارَةٍ. فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ، إِنَّ الْمُؤْمِنَ لاَ يَنْجُسُ)).

[أطرافه في : ٢٨٥].

M-09825696131

सुफ़यान ने बयान किया कि हिरक़्ल ने नबी करीम (ﷺ) के नाम-ए-गिरामी को तलब किया और उसे पढ़ा। उसमें लिखा हुआ था, शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है और ऐ किताबवालों! एक ऐसे कलिमे की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच मुश्तरक (कॉमन) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बंदगी न करें और उसका किसी को शरीक न ठहराएँ। अल्लाह तआला के क़ौल मुस्लिमून तक। अ़ता ने जाबिर के हवाले से बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) को (हज्ज में) हैज़ आ गया तो आपने तमाम मनासिक पूरे किये सिवाय बैतुल्लाह के तवाफ़ के और आप नमाज़ भी नहीं पढ़ती थीं और हकम ने कहा मैं जुनुबी होने के बावजूद ज़िब्ह करता हूँ। जबकि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है, 'जिस ज़बीहे पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसे न खाओ।' (अल अन्आम : 121)

دَعَا بِكِتَابِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَرَأَهُ فَإِذَا فِيهِ: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. ﴿وَيَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ أَنْ لاَ نَعْبُدَ إِلاَّ اللهَ وَ لاَ نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا إِلَى قَوْلِهِ مُسْلِمُوْنَ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ عَنْ جَابِرٍ: حَاضَتْ عَائِشَةُ فَنَسَكَتِ الْمَنَاسِكَ كُلَّهَا غَيْرَ الطَّوَافِ بِالْبَيْتِ وَلاَ تُصَلِّي. وَقَالَ الْحَكَمُ: إِنِّي لأَذْبَحُ وَأَنَا جُنُبٌ. وَقَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَلاَ تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ﴾ [الأنعام: ١٢١].

इसलिये हुक्म की मुराद भी जब्ह करने में अल्लाह के ज़िक्र को जनुबी होने की हालत में करना है।

(305) हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम से, उन्होंने क़ासिम बिन मुहम्मद से, वो हज़रत आइशा से, आपने फ़र्माया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हज्ज के लिये इस तरह निकले कि हमारी ज़ुबानों पर हज्ज के अलावा और कोई ज़िक्र ही न था। जब हम मुक़ामे सरिफ़ पहुँचे तो मुझे हैज़ आ गया। (इस ग़म से) मैं रो रही थी कि नबी (ﷺ) तशरीफ़ लाए, आपने पूछा क्यूँ रो रही हो? मैंने कहा काश! मैं इस साल हज्ज का इरादा ही नहीं करती। आपने फ़र्माया, शायद तुम्हें हैज़ आ गया है। मैंने कहा, जी हाँ! आपने फ़र्माया ये चीज़ तो अल्लाह तआला ने आदम की बेटियों के लिये मुक़र्रर कर दी है। इसलिये तुम जब तक पाक न हो जाओ तवाफ़े बैतुल्लाह के अलावा हाजियों की तरह तमाम काम अंजाम दो।

(राजेअ़ : 294)

٣٠٥- حَدَّثَنَا أَبُونُعَيْمٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لاَ نَذْكُرُ إِلاَّ الْحَجَّ. فَلَمَّا جِئْنَا سَرِفَ طَمِثْتُ، فَدَخَلَ عَلَيَّ النبيُّ ﷺ وَأَنَا أَبْكِي، فَقَالَ: ((مَا يُبْكِيْكِ؟)) قُلْتُ: لَوَدِدْتُ وَاللهِ أَنِّي لَمْ أَحُجَّ الْعَامَ. قَالَ: ((لَعَلَّكِ نُفِسْتِ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ : ((فَإِنَّ ذَلِكِ شَيْءٌ كَتَبَهُ اللهُ عَلَى بَنَاتِ آدَمَ، فَافْعَلِي مَا يَفْعَلُ الْحَاجُّ، غَيْرَ أَنْ لاَ تَطُوفِي بِالْبَيْتِ حَتَّى تَطْهُرِي)). [راجع: ٢٩٤]

तश्रीह : सय्यिदुल मुहद्दिसीन हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद ये बयान करना है कि हाइज़ा और जुनुबी के लिये क़ुर्आने करीम की तिलावत की इजाज़त है जैसा कि हज़रत मौलाना अ़ब्दुर्रहमान साहब मुबारकपुरी मरहूम फ़र्माते हैं, 'इअलम अन्नल बुख़ारी अक़द बाबन फ़ी सहीहिही यदुल्लु अला अन्नहू क़ाइलुन बिजवाज़ि क़िरातिल क़ुर्आनि

M-09825696131

عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: كَانَ رِجَالٌ يُصَلُّونَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَاقِدِي أُزُرِهِمْ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ كَهَيْئَةِ الصِّبْيَانِ، يُقَالُ لِلنِّسَاءِ: ((لاَ تَرْفَعْنَ رُؤُوسَكُنَّ حَتَّى يَسْتَوِيَ الرِّجَالُ جُلُوسًا)). [طرفاه في : ٨١٤، ١٢١٥].

हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया सहल बिन सअ़द सअ़दी से, उन्होंने कहा कि कई आदमी नबी करीम (ﷺ) के साथ बच्चों की तरह अपनी गर्दनों पर इज़ारें बाँधे हुए नमाज़ पढ़ते थे और औरतों को (आपके ज़माने में) हुक्म था कि अपने सरों को (सज्दे से) उस समय तक न उठाएँ जब तक कि मर्द सीधे होकर बैठ न जाएँ।

(दीगर मक़ाम : 814, 1215)

क्योंकि मर्दों के बैठ जाने से पहले सर उठाने में कहीं औरतों की नजर मर्दों के सतर पर न पड़ जाए इसीलिये औरतों को पहले सर उठाने से मना फर्माया। उस जमाने में औरतें भी मर्दों के साथ नमाज़ों में शरीक होती थी और मर्दों का लिबास भी इसी किस्म का होता था। आजकल ये सूरतें नहीं है, फिर औरतों के लिये अब ईदगाह में भी पर्दे का बेहतरीन इन्तेजाम कर दिया जाता है।

٧- بَابُ الصَّلاَةِ فِي الْجُبَّةِ الشَّامِيَّةِ

وَقَالَ الْحَسَنُ فِي الثِّيَابِ يَنْسُجُهَا الْمَجُوسُ لَمْ يَرَ بِهَا بَأْسًا، وَقَالَ مَعْمَرٌ: رَأَيْتُ الزُّهْرِيَّ يَلْبَسُ مِنْ ثِيَابِ الْيَمَنِ مَا صُبِغَ بِالْبَوْلِ. وَصَلَّى عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فِي ثَوْبٍ غَيْرِ مَقْصُورٍ.

बाब 7 : शाम के बने हुए चोग़े में नमाज़ पढ़ने के बयान में

इमाम हसन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि जिन कपड़ों को पारसी बुनते हैं उसके इस्ते'माल करने में कोई क़बाहत नहीं। मअ़मर राशिद ने फ़र्माया कि मैंने इब्ने शिहाब ज़ुहरी को यमन के कपड़े को पहने देखा जो (हलाल जानवरों के) पेशाब से रंग जाते थे और अ़ली बिन अबी त़ालिब ने नए बग़ैर धुले कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ी।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़सद ये है कि शाम में उन दिनों काफ़िरों की हुकूमत थी ओर वहां से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के कपड़े यहाँ मदीना में आया करते थे, इसलिये इन मसाइल के बयान की ज़रूरत हुई। पेशाब से हलाल जानवरों का पेशाब मुराद है जिसको रंगाई के मसालों में डाला जाता था।

٣٦٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ مُغِيرَةَ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ فَقَالَ: ((يَا مُغِيرَةُ خُذِ الإِدَاوَةَ)). فَأَخَذْتُهَا. فَانْطَلَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى تَوَارَى عَنِّي فَقَضَى حَاجَتَهُ، وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَّةٌ، فَذَهَبَ لِيُخْرِجَ يَدَهُ مِنْ كُمِّهَا فَضَاقَتْ، فَأَخْرَجَ يَدَهُ مِنْ أَسْفَلِهَا،

(363) हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआ़विया ने अअ़मश के वास्ते से, उन्हों ने मुस्लिम बिन स़बीह़ से, उन्होंने मसरूक़ बिन अज्दअ़ से, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअ़बा से, आपने फ़र्माया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक) में था। आपने एक मौक़े पर फ़र्माया। मुग़ीरह! पानी की छागल उठा ले। मैंने उसे उठा लिया। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) चले और मेरी नज़रों से छुप गए। आपने क़ज़ा-ए-ह़ाजत की। उस समय आप शामी जुब्बा पहने हुए थे। आप हाथ खोलने के लिये आस्तीन ऊपर चढ़ाना चाहते थे लेकिन वो तंग थी इसलिये आस्तीन के अंदर से हाथ निकाला। मैंने आपके हाथों

बतलाया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को रात की किसी नमाज़ में बैठकर क़ुर्आन पढ़ते नहीं देखा। यहाँ तक कि आप (ﷺ) बूढ़े हो गए तो बैठ कर क़ुर्आन पढ़ते थे। लेकिन जब तीस-चालीस आयतें रह जाती तो खड़े हो जाते फिर उनको पढ़कर रुकूअ करते थे। (राजेअ: 1118)

قَالَتْ: ((مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي شَيْءٍ مِنْ صَلاَةِ اللَّيْلِ جَالِسًا، حَتَّى إِذَا كَبِرَ قَرَأَ جَالِسًا، فَإِذَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنَ السُّورَةِ ثَلاَثُونَ أَوْ أَرْبَعُونَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهُنَّ، ثُمَّ رَكَعَ)). [راجع: ١١١٨]

बाब 18 : दिन और रात में बावुज़ू रहने की फ़ज़ीलत और वुज़ू के बाद रात और दिन में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत का बयान

١٧- بَابُ فَضْلِ الصَّلاَةِ بَعْدَ الْوُضُوءِ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

1149. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) से फ़ज्र के वक़्त पूछा कि ऐ बिलाल! मुझे अपना सबसे ज़्यादा उम्मीद वाला नेक काम बताओ, जिसे तुमने इस्लाम लाने के बाद किया है, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे जूतों की चाप सुनी है। ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया मैंने तो अपने नज़दीक इससे ज़्यादा उम्मीद का कोई काम नहीं किया कि जब मैंने रात या दिन में किसी वक़्त भी वुज़ू किया तो मैं उस वुज़ू से नफ़्ल नमाज़ पढ़ता रहता, जितनी मेरी तक़दीर में लिखी गई थी।

١١٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِبِلاَلٍ عِنْدَ صَلاَةِ الْفَجْرِ: ((يَا بِلاَلُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِي الإِسْلاَمِ، فَإِنِّي سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ)). قَالَ : مَا عَمِلْتُ عَمَلاً أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لَمْ أَتَطَهَّرْ طُهُورًا فِي سَاعَةِ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ إِلاَّ صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُورِ مَا كُتِبَ لِي أَنْ أُصَلِّيَ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : دَفَّ نَعْلَيْكَ، يَعْنِي تَحْرِيْكَ.

तश्रीह : या'नी जैसे तू जन्नत में चल रहा है और तेरी जूतियों की आवाज़ निकल रही है। ये अल्लाह तआ़ला ने आप (ﷺ) को दिखला दिया जो नज़र आया वो होने वाला था। उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जन्नत में बेदारी के आ़लम में इस दुनिया में रहकर आँह़ज़रत (ﷺ) के सिवा और कोई नहीं गया, आप (ﷺ) मेअ़राज की शब में वहाँ तशरीफ़ ले गए। इसी त़रह़ दोज़ख़ में और ये जो कुछ फ़ुक़रा से मन्क़ूल है कि उनका ख़ादिम हुक़्क़ा की आग लेने जहन्नम में गया ये मह़ज़ ग़लत़ है। बिलाल (रज़ि.) दुनिया में भी बत़ौरे ख़ादिम के आँह़ज़रत (ﷺ) के आगे सामान वग़ैरह लेकर चला करते, वैसे ही अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर को दिखला दिया कि बहिश्त में भी होगा। इस ह़दीष़ से बिलाल (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकली और उनका जन्नती होना षाबित हुआ। (वह़ीदी)

बाब 18 : इबादत में बहुत सख़्ती उठाना मकरूह है

١٨- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّشْدِيدِ فِي الْعِبَادَةِ

1150. हमसे अबू मअ़मर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि

١١٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ

1303. हमसे ह़सन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यह्या बिन ह़स्सान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे क़ुरैश ने जो ह़य्यान के बेटे हैं, ने बयान किया और उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अबू यूसुफ़ लोहार के यहाँ गये। ये इब्राहीम (रसूलुल्लाह ﷺ के स़ाहबज़ादे) को दूध पिलाने वाली आया के ख़ाविन्द थे। आँह़ज़रत ने इब्राहीम (रज़ि.) को गोद में लिया और प्यार किया और सूंघा। फिर इसके बाद हम उनके यहाँ घर गये। देखा कि उस वक़्त इब्राहीम (रज़ि.) दम तोड़ रहे हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) की आँखें आँसुओं से भर आईं तो अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) बोल पड़े कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप भी लोगों कि त़रह बेस़ब्री करने लगे? हुज़ूरे-अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने औ़फ़! ये बेस़ब्री नहीं, ये तो रह़मत है। फिर आप (ﷺ) दोबारा रोए और फ़र्माया, आँखों से आँसू जारी है और दिल ग़म से निढाल है, पर ज़बान से हम कहेंगे वही जो हमारे परवरदिगार को पसन्द है और ऐ इब्राहीम! हम तुम्हारी ज़ुदाई से ग़मगीन हैं। इस ह़दीष़ को मूसा बिन इस्माईल ने सुलैमान बिन मुग़ीरा से, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

١٣٠٣- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ قَالَ حَدَّثَنَا قُرَيْشٌ هُوَ ابْنُ حَيَّانَ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى أَبِي سَيْفٍ الْقَيْنِ - وَكَانَ ظِئْرًا لإِبْرَاهِيمَ - فَأَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِبْرَاهِيمَ فَقَبَّلَهُ وَشَمَّهُ ثُمَّ دَخَلْنَا عَلَيْهِ بَعْدَ ذَلِكَ - وَإِبْرَاهِيمُ يَجُودُ بِنَفْسِهِ - فَجَعَلَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللهِ ﷺ تَذْرِفَانِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: ((يَا ابْنَ عَوْفٍ إِنَّهَا رَحْمَةٌ)). ثُمَّ أَتْبَعَهَا بِأُخْرَى فَقَالَ ﷺ: ((إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ، وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ، وَلاَ نَقُولُ إِلاَّ مَا يَرْضَى رَبُّنَا، وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا إِبْرَاهِيمُ لَمَحْزُونُونَ)). رَوَاهُ مُوسَى عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तश्रीह: ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ये बतलाना चाहते हैं कि इस त़रह़ आँखों से आंसू निकल आएँ और दिल ग़मगीन हो और ज़ुबान से कोई अल्फ़ाज़ अल्लाह की नाराज़गी का न निकले तो ऐसा रोना बेस़ब्री नहीं ये आंसू रह़मत हैं और ये भी षाबित हुआ कि मरने वाले को मुह़ब्बत आमेज़ लफ़्ज़ों से मुख़ात़ब करके उसके ह़क़ में कलिम-ए-ख़ैर कहना चाहिये। आँह़ज़रत (ﷺ) के ये स़ाहबज़ादे मारिया क़िब्तिया (रज़ि.) के बत़न से पैदा हुए थे जो मशिय्यते ऐज़दी के तह़त ह़ालते शीर-ख़्वारगी (दूध पीने की उ़म्र में) ही में इंतिक़ाल कर गए। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहा)

बाब 44 : मरीज़ के पास रोना कैसा है?

٤٤- بَابُ الْبُكَاءِ عِنْدَ الْمَرِيضِ

1304. हमसे अस़्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन वुहैब ने कहा कि मुझे ख़बर दी अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने, उन्हें सईद बिन ह़ारिष़ अन्सारी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) किसी मर्ज़ में मुब्तला हुए। नबी करीम (ﷺ) इयादत के लिये अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास और

١٣٠٤- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ الأَنْصَارِيِّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((اشْتَكَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ شَكْوَى لَهُ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ

तरोताज़गी नसीब फ़र्मा और क़यामत के दिन जन्नत में दाख़िल फ़र्माइया और दोज़ख़ से हम सबको महफ़ूज़ रखियो। आमीन!

बाब 90 : मय्यित का चारपाई पर बात करना

٩٠- بَابُ كَلاَمِ الْمَيِّتِ عَلَى الْجَنَازَةِ

1380. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि रसूले-करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब जनाज़ा तैयार हो जाता है, फिर मर्द उसको अपनी गर्दनों पर उठा लेते हैं तो अगर वो मुर्दा नेक हो तो कहता है कि हाँ आगे ले चलो, मुझे बढ़ाए चलो और अगर नेक नहीं होता तो कहता है, हाय रे ख़राबी! मेरा जनाज़ा कहाँ ले जा रहे हो। इस आवाज़ को इन्सान के सिवा तमाम मख़्लूक़ सुनती है। अगर कहीं इन्सान सुन पाए तो बेहोश हो जाएँ।

(राजेअ़ : 1314)

١٣٨٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا وُضِعَتِ الْجَنَازَةُ فَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ، فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: قَدِّمُونِي، قَدِّمُونِي. وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، أَيْنَ تَذْهَبُونَ بِهَا؟ يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلاَّ الإِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهَا الإِنْسَانُ لَصَعِقَ)). [راجع: ١٣١٤]

तशरीह : जनाज़ा उठाए जाते वक़्त अल्लाह पाक बरज़ख़ी ज़ुबान मय्यत को अ़ता कर देता है। जिसमें वो अगर जन्नती है तो जन्नत के शौक़ में कहता है कि मुझको जल्दी-जल्दी ले चलो ताकि जल्द अपनी मुराद को हासिल करूँ और अगर वो जहन्नमी है तो वो घबराकर कहता है कि हाय मुझे कहाँ लिये जा रहे हो। उस वक़्त अल्लाह पाक उनको इस तौर पर मख़्फ़ी (पोशीदा, गुप्त) तरीक़े से बोलने की ताक़त देता है और उस आवाज़ को इंसान और जिन्न के अ़लावा तमाम मख़्लूक़ात सुनती है।

इस हदीष से सिमाअ़े-मौता पर कुछ लोगों ने दलील पकड़ी है जो बिल्कुल ग़लत है। क़ुर्आन मजीद में साफ़ सिमाअ़े मौता की नफ़ी मौजूद है। **इन्नक ला तुस्मिउल मौता** (अन् नम्ल : 80) अगर मरनेवाले हमारी आवाज़ें सुन पाते तो उनको मय्यत ही न कहा जाता। इसीलिये तमाम अइम्म-ए-हुदा ने सिमाअ़े मौता का इंकार किया है। जो लोग सिमाअ़े मौता के क़ायल हैं उनके दलाइल बिल्कुल बेवज़न हैं । दूसरे मक़ाम पर उसका तफ़्सीली बयान होगा।

बाब 91 : मुसलमानों की नाबालिग़ औलाद कहाँ रहेगी?

٩١- بَابُ مَا قِيْلَ فِي أَوْلاَدِ الْمُسْلِمِيْنَ

और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि जिस के तीन नाबालिग़ बच्चे मर जाएँ तो ये बच्चे उसके लिये दोज़ख़ से रोक बन जाएँगे या ये कहा कि वो जन्नत में दाख़िल होगा।

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ مَاتَ لَهُ ثَلاَثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ كَانَ لَهُ حِجَابًا مِنَ النَّارِ أَوْ دَخَلَ الْجَنَّةَ)).

1562. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ह़ज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले। कुछ लोगों ने उ़म्रह का एह़राम बाँधा था, कुछ ने ह़ज्ज और उ़म्रह दोनों का और कुछ ने सिर्फ़ ह़ज्ज का। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (पहले) सिर्फ़ ह़ज्ज का एह़राम बाँधा था, फिर आपने उ़म्रह भी शरीक कर लिया, फिर जिन लोगों ने ह़ज्ज का एह़राम बाँधा था या ह़ज्ज या उ़म्रह दोनों का, उनका एहराम दसवीं तारीख़ तक न खुल सका।

(राजेअ़ 294)

١٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوفَلٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ: وَمِنَّا مِنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ، وَأَهَلَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْحَجِّ. فَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةِ لَمْ يَحِلُّوا حَتَّى كَانَ يَوْمُ النَّحْرِ)). [راجع: ٢٩٤]

1563. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे अ़ली बिन हुसैन (ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन) ने और उनसे मरवान बिन ह़कम ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़ष्मान और अ़ली (रज़ि.) को मैंने देखा है। उ़ष्मान (रज़ि.) ह़ज्ज और उ़म्रह को एक साथ करने से रोकते थे लेकिन ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उसके बावजूद दोनों का एक साथ एह़राम बाँधा और कहा लब्बैक बिउ़म्रतिन व ह़ज्जतिन आपने फ़र्माया था कि मैं किसी एक शख़्स की बात पर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ह़दीष़ को नहीं छोड़ सकता।

١٥٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ قَالَ: ((شَهِدْتُ عُثْمَانَ وَعَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، وَعُثْمَانُ يَنْهَى عَنِ الْمُتْعَةِ وَأَنْ يُجْمَعَ بَيْنَهُمَا، فَلَمَّا رَأَى عَلِيٌّ، أَهَلَّ بِهِمَا: لَبَّيكَ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، قَالَ: مَا كُنْتُ لأَدَعَ سُنَّةَ النَّبِيِّ ﷺ لِقَولِ أَحَدٍ)). [طرفه في: ١٥٦٩].

तशरीह़: ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) शायद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की तक़्लीद से तमत्तोअ़ को बुरा समझते थे उनको भी यही ख़्याल हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज्ज को फ़स्ख़ कराकर जो हुक्म उ़म्रह का दिया था वो ख़ास़ था स़ह़ाबा (रज़ि.) से। कुछ ने कहा मकरूहे तंज़ीही समझा और चूँकि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) का ये ख़्याल ह़दीष़ के ख़िलाफ़ था। इसलिये ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने इस पर अ़मल नहीं किया और फ़र्माया कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ को किसी के क़ौल से नहीं छोड़ सकता।

मुसलमान भाइयों! ज़रा ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के इस क़ौल को ग़ौर से देखो, ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ख़लीफ़-ए-वक़्त और ख़लीफ़ा भी कैसे? ख़लीफ़ा-ए-राशिद और अमीरुल मोमिनीन। लेकिन ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उनका क़ौल भी फैंक दिया गया और ख़ुद उनके सामने उनका ख़िलाफ़ किया गया। फिर तुमको क्या हो गया है जो तुम इमाम अबू ह़नीफ़ा या शाफ़िई के क़ौल को लिये रहते हो और स़ह़ीह़ ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उनके क़ौल पर अ़मल करते हो, ये स़रीह़ गुमराही है। अल्लाह के लिये

हराम बिन अ़म्र बिन ज़ैद, मनात बिन अ़दी बिन अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार ह़स्सान और अबू त़लह़ा को मिला देता है और उबई बिन कअ़ब छठी पुश्त में या'नी अ़म्र बिन मालिक में अबू त़लह़ा से मिलते हैं, उबई बिन कअ़ब के बेटे, वो क़ैस के, वो उ़बैद के, वो ज़ैद के, वो मुआ़विया के, वो अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार के तो अ़म्र बिन मालिक ह़स्सान और अबू त़लह़ा और उबई तीनों को मिला देता है और कुछ ने (इमाम अबू यूसुफ़ इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द ने) कहा अ़ज़ीज़ों के लिये वसिय्यत करे तो जितने मुसलमान बाप दादा गुज़रे हैं वो सब दाख़िल होंगे।

عَمْرِو بْنِ زَيْدِ مَنَاةَ بْنِ عَدِيِّ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَهُوَ يُجَامِعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيٌّ إِلَى سِتَّةِ آبَاءٍ إِلَى عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، وَهُوَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبِ بْنِ قَيْسِ بْنِ عُبَيْدِ زَيْدِ بْنِ مُعَاوِيَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَعَمْرُو بْنُ مَالِكٍ يَجْمَعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيًّا. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِذَا أَوْصَى لِقَرَابَتِهِ فَهُوَ إِلَى آبَائِهِ فِي الإِسْلاَمِ.

2752. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू त़लह़ा से फ़र्माया, (जब उन्होंने अपना बाग़ बीरे ह़ाअ अल्लाह की राह में देना चाहा) मैं मुनासिब समझता हूँ तू ये बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों को दे दे। अबू त़लह़ा ने कहा बहुत ख़ूब ऐसा ही करूँगा। फिर अबू त़लह़ा ने वो बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों और चचा के बेटों में बांट दिया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी और अपने क़रीब के नाते वालों को (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराओ तो आँह़ज़रत (ﷺ) क़ुरैश के ख़ानदानों में बनी फ़हर, बनी अ़दी को पुकारने लगे (उनको डराया) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब ये आयत उतरी वन्ज़िर अ़शीरतकल अक़्रबीन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ क़ुरैश के लोगों! (अल्लाह से डरो) (राजेअ़ : 1461)

٢٧٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِيْنَ))، قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَسَّمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي : ((يَا بَنِي فِهْرٍ: يَا بَنِي عَدِيٍّ، لِبُطُونِ قُرَيْشٍ)). وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: لَمَّا نَزَلَت: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ)). [راجع: ١٤٦١]

बाब 11 : क्या अ़ज़ीज़ों मे औरतें और बच्चे भी दाख़िल होंगे

١١- بَابُ هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالْوَلَدُ فِي الأَقَارِبِ؟

2753. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत अल्लाह तआ़ला ने उतारी

٢٧٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ

बाब 11 : क्या अ़ज़ीज़ों मे औरतें और बच्चे भी दाख़िल होंगे

١١- بَابُ هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالْوَلَدُ فِي الأَقَارِبِ؟

2753. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत अल्लाह तआ़ला ने उतारी

और अपने नज़दीक नातेदारों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डरा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुरैश के लोगों ! या ऐसा ही कोई और कलिमा तुम लोग अपनी अपनी जानों को (नेक आ़माल के बदल) मोल ले लो (बचा लो) मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा (या'नी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का) अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों ! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अ़ब्बास बिन मुत्तलिब के बेटे! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। स़फ़िया मेरी फूफी! अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। फ़ातिमा (रज़ि.) बेटी तू चाहे मेरा माल मांग ले लेकिन अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम नहीं आएगा। अबुल यमान के साथ ह़दीष़ को अस्बग़ ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन वहब से, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3527, 4771)

٢٧٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَاهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِيْنَ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ، لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا عَبَّاسُ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِيْنِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. [طرفاه في: ٣٥٢٧، ٤٧٧١].

तश्रीह : पिछली ह़दीष़ में पहले आपने क़ुरैश के कुल लोगों को मुख़ात़ब किया जो ख़ास़ आपकी क़ौम के लोग थे। फिर अ़ब्दे मुनाफ़ अपने चौथे दादा की औलाद को। फिर ख़ास़ अपने चचा और फूफी या'नी दादा की औलाद को फिर ख़ास़ अपनी औलाद को। इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़राबत वालों मे औरतें दाख़िल हैं क्योंकि ह़ज़रत स़फ़िया अपनी फूफी को भी आप (ﷺ) ने मुख़ात़ब किया और बच्चे भी इसलिये कि ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) जब ये आयत उतरी कमसिन बच्ची थीं, आप (ﷺ) ने उनको भी मुख़ात़ब किया।

أَبَاهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِيْنَ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ، لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا عَبَّاسُ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِيْنِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. [طرفاه في: ٣٥٢٧، ٤٧٧١].

और अपने नज़दीक नातेदारों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डरा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुरैश के लोगों ! या ऐसा ही कोई और कलिमा तुम लोग अपनी अपनी जानों को (नेक आमाल के बदल) मोल ले लो (बचा लो) मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा (या'नी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का) अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों ! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अ़ब्बास बिन मुत्तलिब के बेटे! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। स़फ़िया मेरी फूफी! अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। फ़ातिमा (रज़ि.) बेटी तू चाहे मेरा माल मांग ले लेकिन अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम नहीं आएगा। अबुल यमान के साथ हदीष़ को अस्बग़ ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन वहब से, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3527, 4771)

तश्रीह : पिछली ह़दीष़ में पहले आपने क़ुरैश के कुल लोगों को मुख़ातब किया जो ख़ास़ आपकी क़ौम के लोग थे। फिर अ़ब्दे मुनाफ़ अपने चौथे दादा की औलाद को। फिर ख़ास़ अपने चचा और फूफी या'नी दादा की औलाद को फिर ख़ास़ अपनी औलाद को। इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़राबत वालों मे औरतें दाख़िल हैं क्योंकि ह़ज़रत स़फ़िया अपनी फूफी को भी आप (ﷺ) ने मुख़ातब किया और बच्चे भी इसलिये कि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) जब ये आयत उतरी कमसिन बच्ची थीं, आप (ﷺ) ने उनको भी मुख़ातब किया।

बाब 12 : क्या वक़्फ़ करने वाला अपने वक़्फ़ से ख़ुद भी वो फ़ायदा उठा सकता है?

١٢- بَابُ هَلْ يَنْتَفِعُ الْوَاقِفُ بِوَقْفِهِ؟

وَقَدِ اشْتَرَطَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: لاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ. وَقَدْ يَلِي الْوَاقِفُ وَغَيْرُهُ. وَكَذَلِكَ كُلُّ مَنْ جَعَلَ بَدَنَةً أَوْ شَيْئًا للهِ فَلَهُ أَنْ يَنْتَفِعَ بِهِ كَمَا يَنْتَفِعُ غَيْرُهُ وَإِنْ لَمْ يَشْتَرِطْ.

और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने शर्त लगाई थी (अपने वक़्फ़ के लिये) कि जो शख़्स़ उसका मुतवल्ली हो उसके लिये उस वक़्फ़ में से खा लेने से कोई ह़र्ज न होगा। (दस्तूर के मुताबिक़) वाक़िफ़ ख़ुद भी वक़्फ़ का मुहतमिम हो सकता है और दूसरा शख़्स़ भी। इसी तरह़ अगर किसी शख़्स़ ने ऊँट या कोई और चीज़ अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ की तो जिस तरह़ दूसरे उससे फ़ायदा उठा सकते हैं ख़ुद वक़्फ़ करने वाला भी उठा सकता है अगरचे (वक़्फ़ करते वक़्त) उसकी शर्त न लगाई हो।

तश्रीह : वाक़िफ़ अपने वक़्फ़ से फ़ायदा उठा सकता है जब उस चीज़ को ख़ुद अपने ऊपर और नीज़ दूसरों पर वक़्फ़ कर दिया हो या वक़्फ़ में ऐसी शर्त कर ली हो या उसमें से एक ह़िस्सा अपने लिये ख़ास़ कर लिया हो या मुतवल्ली

فُلَانًا وَفُلَانًا فَأَحْرِقُوهُمَا بِالنَّارِ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَرَدْنَا الْخُرُوجَ: ((إِنِّي أَمَرْتُكُمْ أَنْ تُحْرِقُوا فُلَانًا وَفُلَانًا، وَإِنَّ النَّارَ لَا يُعَذِّبُ بِهَا إِلَّا اللهُ، فَإِنْ وَجَدْتُمُوهُمَا فَاقْتُلُوهُمَا)). [راجع: ٢٩٥٤]

हमने रवानगी का इरादा किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें हुक्म दिया था कि फ़लाँ और फ़लाँ को जला देना। लेकिन आग एक ऐसी चीज़ है जिसकी सज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआला ही दे सकता है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिलें तो उन्हें क़त्ल करना (आग में न जलाना)। (राजेअ : 2954)

तश्रीह : कुछ सहाबा (रज़ि.) ने उसको मुत्लक़न मना जाना है गो बतौरे क़िसास के हो, कुछ ने जाइज़ रखा है जैसे हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से मन्क़ूल है। मुहलिब ने कहा कि ये मुमानअत तहरीमो नहीं, बल्कि बतौर तवाज़ाअ के है। हमारे ज़माने में तो आलाते हर्ब तोप और बन्दूक़ और डायनामाइट, मिसाइल वग़ैरह सब अंगार हैं और चूँकि काफ़िरों ने उनका इस्ते'माल शुरू कर दिया है, लिहाज़ा मुसलमानों को भी उनका इस्ते'माल दुरुस्त है। (वहीदी)

मुतर्जिम के ख़्याले-नाक़िस में उन जदीद हथियारों का इस्ते'माल अम्रे दीगर है और मुत्लक़ आग में जलाना अम्रे दीगर है जिसे शरअन व अख़्लाक़न पसन्द नहीं किया जा सकता।

٣٠١٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَرَّقَ قَوْمًا، فَبَلَغَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحَرِّقْهُمْ، لِأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَا تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ اللهِ))، وَلَقَتَلْتُهُمْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)).

[طرفه في : ٦٩٢٢].

3017. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने कि अली (रज़ि.) ने एक क़ौम को (जो अब्दुल्लाह बिन सबा की पैरोकार थी और हज़रत अली रज़ि. को अपना ख़ुदा कहती थी) जला दिया था। जब ये ख़बर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) को मिली तो आपने कहा कि अगर मैं होता तो कभी उन्हें न जलाता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि अल्लाह के अज़ाब की सज़ा किसी को न दो, अल्बत्ता मैं उन्हें क़त्ल ज़रूर करता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है जो शख़्स अपना दीन तब्दील कर दे उसे क़त्ल कर दो। (दीगर मक़ाम : 6922)

ये लोग सबाइया थे। अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी के ताबेदार जो मुसलमानों को ख़राब कर डालने के लिये बज़ाहिर मुसलमान हो गया था और अंदर से काफ़िर था। उस मर्दूद ने अपने ताबेदारों को ये ता'लीम की थी कि हज़रत अली (रज़ि.) मआज़अल्लाह आदमी नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद अल्लाह हैं। कुछ कहते हैं कि ये बुतों की परस्तिश करते थे। राफ़ज़ियों में एक फ़िर्क़ा नसीरी है जो हज़रत अली (रज़ि.) को ख़ुदा-ए-बुज़ुर्ग और इमाम जा'फ़र सादिक़ को ख़ुदा-ए-ख़ौरिद कहता है, **ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह.** (वहीदी)

١٥٠- بَابُ ﴿فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً﴾ [محمد: ٤]

बाब 150 : (अल्लाह तआला का सूरह मुहम्मद में ये फ़र्माना) कि क़ैदियों को मुफ़्त एहसान रखकर छोड़ दो या फ़िदया लेकर

فِيهِ حَدِيثُ ثُمَامَةَ. وَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ تَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ -حَتَّى يَغْلِبَ فِي الْأَرْضِ-

इस बाब में ष़मामा की हदीष़ है और अल्लाह तआला का इर्शाद कि, नबी के लिये मुनासिब नहीं कि क़ैदी अपने पास रखे, जब तक काफ़िरों का ख़ूब सत्यानास न कर दे।

हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जो शख़्स किसी चीज़ का भी जोड़ा दे, तो जन्नत के चौकीदार फ़रिश्ते उसे बुलाएँगे कि ऐ फ़लाँ इस दरवाज़े से अंदर आ जा। अबूबक्र (रज़ि.) ने इस पर कहा कि ये तो वो शख़्स होगा जिसे कोई नुक़्सान न होगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तू भी उन्हीं में से होगा। (राजेअ : 1897)

قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللهِ دَعَتْهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ: أَيْ فُلُ هَلُمَّ)). فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ ذَاكَ الَّذِي لاَ تَوَى عَلَيْهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ)). [راجع: ١٨٩٧]

अल्लाह की राह में जो चीज़ भी ख़र्च की जाए वो जोड़े की शक्ल में ज़्यादा बेहतर है जैसे कपड़ों के दो जोड़े या दो रुपये या दो क़ुर्आन शरीफ़ वग़ैरह वग़ैरह। ये बेहतरीन सदक़ा होगा। यहाँ फ़रिश्तों का अहले जन्नत को बुलाना उनका वजूद और उनका हम कलाम होना षाबित करना मक़्सूद है।

3217. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए हैं, तुमको सलाम कह रहे हैं। आइशा (रज़ि.) ने जवाब में कहा, व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि बरकातुहू। आप वो चीज़ें देखते हैं जिन्हे मैं नहीं देख सकती, आइशा (रज़ि.) की मुराद नबी करीम (ﷺ) से थी। (दीगर मक़ाम : 3768, 6201, 6249, 6153)

٣٢١٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((يَا عَائِشَةُ، هَذَا جِبْرِيلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ))، فَقَالَتْ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ تَرَى مَا لاَ أَرَى. تُرِيْدُ النَّبِيَّ ﷺ)).

[أطرافه في: ٣٧٦٨، ٦٢٠١، ٦٢٤٩، ٦١٥٣].

3218. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन ज़र ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन ज़र्र ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलै.) से एक मर्तबा फ़र्माया, हमसे मुलाक़ात के लिये जितनी मर्तबा आप आते हैं उससे ज़्यादा क्यूँ नहीं आते? बयान किया कि उस पर ये आयत नाज़िल हुई, और हम नहीं उतरते लेकिन तेरे रब के हुक्म से, उसी का है जो कुछ कि हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीछे है, आख़िर आयत तक। (दीगर मक़ाम : 4731, 7455)

٣٢١٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ. ح. قَالَ: وَحَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيْعٌ عَنْ عُمَرَ بْنِ ذَرٍّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِجِبْرِيْلَ: ((أَلاَ تَزُورُنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟ قَالَ : فَنَزَلَتْ : ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ، لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا﴾)). [مريم: ٦٤]. [طرفاه في: ٤٧٣١،

किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्यूँ न मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में एक ऐसी बात बता दूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वो काना होगा और जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लाएगा। पस जिसे वो जन्नत कहेगा दरहक़ीक़त वही जहन्नम होगी और मैं तुम्हें उसके फ़ित्ने से इसी तरह डराता हूँ, जैसे नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम को डराया था। (राजेअ़ : 3057)

يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا عَنِ الدَّجَّالِ مَا حَدَّثَ بِهِ نَبِيٌّ قَوْمَهُ: إِنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّهُ يَجِيْءُ مَعَهُ بِمِثَالِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَالَّتِي يَقُولُ إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ، وَإِنِّي أُنْذِرُكُمْ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ)). [راجع: ٣٠٥٧]

तश्रीह : अल्लाह पाक अपने बन्दों को आज़माने के लिये दज्जाल को पहले कुछ कामों की त़ाक़त दे देगा फिर बाद में उसकी आजिज़ी ज़ाहिर कर देगा, ऐसी सूरत ख़ुद बता देगी कि वो अल्लाह नहीं है। अह़ादीष़ में नूह़ (अलै.) का ज़िक्र आया है बाब से यही मुनासबत है।

3339. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) नूह़ (अलै.) बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होंगे। अल्लाह तआ़ला दरयाफ़्त करेगा, क्या (मेरा पैग़ाम) तुमने पहुँचा दिया था? नूह़ (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, ऐ रब्बुल इ़ज़्ज़त! अब अल्लाह तआ़ला उनकी उम्मत से पूछेगा, क्या (नूह़ अलै. ने) ने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो जवाब देंगे नहीं, हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया। इस पर अल्लाह तआ़ला नूह़ (अलै.) से पूछेगा, इसके लिये आपकी त़रफ़ से कोई गवाही भी दे सकता है? वो अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत (के लोग मेरे गवाह हैं) चुनाँचे हम उस बात की शहादत देंगे कि नूह़ (अलै.) ने पैग़ामे अल्लाह अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था और यही मफ़्हूम अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू के इस इर्शाद का है कि, और इसी त़रह हमने तुम्हें उम्मते वस्त़ बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाही दो और वस्त़ के मा'नी दरम्यानी के हैं। (दीगर मक़ाम : 4487, 7349)

٣٣٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجِيْءُ نُوحٌ وَأُمَّتُهُ. فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى : هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيْ رَبِّ. فَيَقُولُ لأُمَّتِهِ : هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ : لاَ، مَا جَاءَنَا مِنْ نَبِيٍّ. فَيَقُولُ لِنُوحٍ مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ ﷺ وَأُمَّتُهُ، فَنَشْهَدُ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ، وَهُوَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [البقرة: ١٤٣] وَالْوَسَطُ الْعَدْلُ.

[طرفاه في : ٤٤٨٧، ٧٣٤٩].

3340. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, हमसे अबू ह़य्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)

٣٣٤٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

मुराद वो लोग हैं जो आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में मुर्तद हो गये थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे जिहाद किया। ये देहात के वो बदवी थे जो बराए नाम इस्लाम में दाख़िल हो गये थे और आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के साथ ही फिर मुर्तद होकर इस्लाम के ख़िलाफ़ मुक़ाबले के लिये खड़े हो गये थे जो या तो मुनाफ़िक़ थे या इस्लाम के ग़लबा से ख़ौफ़ज़दा होकर इस्लाम में दाख़िल हो गए थे और उन्होंने इस्लाम से कभी कोई दिलचस्पी सिरे से ली ही नहीं थी। उन मुर्तदीन ने ख़िलाफ़ते इस्लामिया के ख़िलाफ़ जंग की और शिकस्त खाई या क़त्ल किये गये।

٣٣٥٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَخِي عَبْدُ الْحَمِيدِ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَلْقَى إِبْرَاهِيمُ أَبَاهُ آزَرَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَى وَجْهِ آزَرَ قَتَرَةٌ وَغَبَرَةٌ، فَيَقُولُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ: أَلَمْ أَقُلْ لَكَ لاَ تَعْصِنِي؟ فَيَقُولُ: فَالْيَوْمَ لاَ أُعْصِيكَ. فَيَقُولُ إِبْرَاهِيمُ: يَا رَبِّ إِنَّكَ وَعَدْتَنِي أَنْ لاَ تُخْزِيَنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ، فَأَيُّ خِزْيٍ أَخْزَى مِنْ أَبِي الأَبْعَدِ؟ فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ((إِنِّي حَرَّمْتُ الْجَنَّةَ عَلَى الْكَافِرِينَ. ثُمَّ يُقَالُ: يَا إِبْرَاهِيمُ مَا تَحْتَ رِجْلَيْكَ، فَيَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ بِذِيخٍ مُلْتَطِخٍ، فَيُؤْخَذُ بِقَوَائِمِهِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ)).

[طرفاه في : ٤٧٦٨، ٤٧٦٩].

3350. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मुझे मेरे भाई अ़ब्दुल हमीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी ज़िब ने, उन्हें सईद मक़्बरी ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) अपने वालिद आज़र से क़यामत के दिन जब मिलेंगे तो उनके (वालिद के) चेहरे पर स्याही और ग़ुबार होगा। हज़रत इब्राहीम (अलै.) कहेंगे कि क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि मेरी मुख़ालफ़त न कीजिए। वो कहेंगे कि आज मैं आपकी मुख़ालफ़त नहीं करता। हज़रत इब्राहीम (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! तूने वा'दा किया था कि मुझे क़यामत के दिन रुस्वा नहीं करेगा। आज इस रुस्वाई से बढ़कर और कौनसी रुस्वाई होगी कि मेरे वालिद तेरी रहमत से सबसे ज़्यादा दूर हैं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मैंने जन्नत काफ़िरों पर हराम क़रार दी है। फिर कहा जाएगा कि ऐ इब्राहीम! तुम्हारे क़दमों के नीचे क्या चीज़ है? वो देखेंगे तो एक ज़िबह किया हुआ जानवर ख़ून में लथड़ा हुआ वहाँ पड़ा होगा और फिर उसके पाँव पकड़कर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (दीगर मक़ाम : 4768, 4769)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से उन नामोनिहाद मुसलमानों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये जो औलिया अल्लाह के बारे में झूठी हिकायात व करामात गढ़-गढ़कर उनको बदनाम करते हैं। मष़लन ये कि बड़े पीर जीलानी स़ाह़ब ने रूहों की थैली ह़ज़रत इ़ज़राईल (अलै.) से छीन ली जिनमें मोमिन व काफ़िर सबकी रूहें थीं और वो सब जन्नत में दाख़िल हो गये। ऐसे बहुत से क़िस्से बहुत से बुज़ुर्गों के बारे में मुश्रिकीन ने गढ़ रखे हैं। जब ह़ज़रत ख़लीलुल्लाह जैसे पैग़म्बर क़यामत के दिन अपने बाप के काम न आ सकेंगे तो और दूसरे किसी की क्या मजाल है कि बग़ैर इज़्ने इलाही किसी मुरीद या शागिर्द को बख़्शवा सकें।

٣٣٥١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ بُكَيْرًا حَدَّثَهُ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ

3351. हमसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने ख़बर दी, उनसे बुकैर ने बयान किया, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)

3351. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्र बिन हारिष़ ने ख़बर दी, उनसे बुकैर ने बयान किया, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)

٣٣٥١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ بُكَيْرًا حَدَّثَهُ عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ

ने कि नबी करीम (ﷺ) बैतुल्लाह में दाख़िल हुए तो उसमें ह़ज़रत इब्राहीम और ह़ज़रत मरयम (अलै.) की तस्वीरें देखीं, आपने फ़र्माया कि कुरैश को क्या हो गया? हालाँकि उन्हें मा'लूम है कि फ़रिश्ते किसी ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें तस्वीरें रखी हों, ये ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) की तस्वीर है और वो भी पांसा फेंकते हुए। (राजेअ़ : 398)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْبَيْتَ فَوَجَدَ فِيْهِ صُورَةَ إِبْرَاهِيْمَ وَصُورَةَ مَرْيَمَ فَقَالَ: ﷺ: أَمَّا هُمْ فَقَدْ سَمِعُوا أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيْهِ صُورَةٌ، هَذَا إِبْرَاهِيْمُ مُصَوَّرٌ، فَمَا لَهُ يَسْتَقْسِمُ)). [راجع: ٣٩٨]

तश्रीह : अ़रब के मुश्रिकों ने ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) की मूति बनाकर उनके हाथ में पांसे का तीर दिया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीर को पांसा बनाना, उससे जुआ खेलना या फ़ाल निकालना किसी भी नबी की शान नहीं हो सकती। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि मक्का के काफ़िर जब सफ़र वग़ैरह पर निकलते तो उन पांसों से फ़ाल निकाला करते थे। इस ह़दीष़ से ये भी मा'लूम हुआ कि बत़ौरे मा'बूद किसी बुत को पूजा जाए या किसी नबी और वली की क़ब्र या मूरत को, शिर्क होने में दोनों बराबर हैं। जो नादान मुसलमान कहते हैं कि कुर्आन शरीफ़ में जिस शिर्क की मज़म्मत है वो क़ाफ़िरों की बुतपरस्ती मुराद है। हम मुसलमान औलिया अल्लाह को महज़ बत़ौरे वसीला पूजते हैं। उन नादानों का ये कहना सरासर फ़रेब नफ़्स है।

3352. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हे मअ़मर ने, उन्हें अय्यूब ने, उन्हे इक्रिमा ने और उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब बैतुल्लाह मे तस्वीरें देखीं तो अंदर उस वक़्त तक दाख़िल न हुए जब तक वो मिटा न दी गईं और आपने इब्राहीम (अलै.) और इस्माईल (अलै.) की तस्वीरें देखीं कि उनके हाथों में तीर (पांसे के) थे तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह उन पर बर्बादी लाए। वल्लाह उन ह़ज़रात ने कभी तीर नहीं फेंके। (राजेअ़ : 398)

٣٣٥٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ لَمَّا رَأَى الصُّوَرَ فِي الْبَيْتِ لَمْ يَدْخُلْ حَتَّى أَمَرَ بِهَا فَمُحِيَتْ. وَرَأَى إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ بِأَيْدِيْهِمَا الأَزْلاَمُ فَقَالَ: قَاتَلَهُمُ اللهُ، وَاللهِ إِنِ اسْتَقْسَمَا بِالأَزْلاَمِ قَطُّ)). [راجع: ٣٩٨]

या'नी उन बुज़ुर्गों ने फ़ाल निकालने के लिये कभी तीर इस्ते'माल नहीं किये, वो ऐसी बेहूदा ह़रकात से ख़ुद ही बेज़ार थे। ऐसे ही वो बुज़ुर्ग भी हैं जिनकी क़ब्रों पर ढोल ताशे बजाए जा रहे हैं।

ने कि नबी करीम (ﷺ) बैतुल्लाह में दाख़िल हुए तो उसमें हज़रत इब्राहीम और हज़रत मरयम (अलै.) की तस्वीरें देखीं, आपने फ़र्माया कि क़ुरैश को क्या हो गया? हालाँकि उन्हें मा'लूम है कि फ़रिश्ते किसी ऐसे घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें तस्वीरें रखी हों, ये हज़रत इब्राहीम (अलै.) की तस्वीर है और वो भी पांसा फेंकते हुए। (राजेअ : 398)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْبَيْتَ فَوَجَدَ فِيْهِ صُورَةَ إِبْرَاهِيْمَ وَصُورَةَ مَرْيَمَ فَقَالَ: ﷺ: أَمَّا هُمْ فَقَدْ سَمِعُوا أَنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيْهِ صُورَةٌ، هَذَا إِبْرَاهِيْمُ مُصَوَّرٌ، فَمَا لَهُ يَسْتَقْسِمُ)). [راجع: ٣٩٨]

तश्रीह : अ़रब के मुश्रिकों ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) की मूति बनाकर उनके हाथ में पांसे का तीर दिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीर को पांसा बनाना, उससे जुआ खेलना या फ़ाल निकालना किसी भी नबी की शान नहीं हो सकती। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि मक्का के काफ़िर जब सफ़र वग़ैरह पर निकलते तो उन पांसों से फ़ाल निकाला करते थे। इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि बतौरे मा'बूद किसी बुत को पूजा जाए या किसी नबी और वली की क़ब्र या मूरत को, शिर्क होने में दोनों बराबर हैं। जो नादान मुसलमान कहते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में जिस शिर्क की मज़म्मत है वो क़ाफ़िरों की बुतपरस्ती मुराद है। हम मुसलमान औलिया अल्लाह को महज़ बतौरे वसीला पूजते हैं। उन नादानों का ये कहना सरासर फ़रेब नफ़्स है।

3352. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हे मअ़मर ने, उन्हें अय्यूब ने, उन्हे इक्रिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब बैतुल्लाह मे तस्वीरें देखीं तो अंदर उस वक़्त तक दाख़िल न हुए जब तक वो मिटा न दी गईं और आपने इब्राहीम (अलै.) और इस्माईल (अलै.) की तस्वीरें देखीं कि उनके हाथों में तीर (पांसे के) थे तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह उन पर बर्बादी लाए। वल्लाह उन हज़रात ने कभी तीर नहीं फेंके। (राजेअ : 398)

٣٣٥٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ لَمَّا رَأَى الصُّوَرَ فِي الْبَيْتِ لَمْ يَدْخُلْ حَتَّى أَمَرَ بِهَا فَمُحِيَتْ. وَرَأَى إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ بِأَيْدِيْهِمَا الأَزْلاَمُ فَقَالَ : قَاتَلَهُمُ اللهُ، وَاللهِ إِنِ اسْتَقْسَمَا بِالأَزْلاَمِ قَطُّ)). [راجع: ٣٩٨]

या'नी उन बुज़ुर्गों ने फ़ाल निकालने के लिये कभी तीर इस्ते'माल नहीं किये, वो ऐसी बेहूदा हरकात से ख़ुद ही बेज़ार थे। ऐसे ही वो बुज़ुर्ग भी हैं जिनकी क़ब्रों पर ढोल ताशे बजाए जा रहे हैं।

3353. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि हम हुज़ूर (ﷺ) से इसके बारे में नहीं पूछते। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर अल्लाह के नबी यूसुफ़ (अलै.) बिन नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह बिन ख़लीलुल्लाह (सबसे ज़्यादा शरीफ़

٣٣٥٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((قِيْلَ يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَتْقَاهُمْ. فَقَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ، قَالَ: فَيُوسُفُ نَبِيُّ اللهِ ابْنُ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ خَلِيْلِ

3369. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी। उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन मुहम्मद बिन अ़म्र बिन हज़्म ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें अ़म्र बिन सुलैम ज़रक़ी ने, उन्होंने कहा मुझको अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आप पर किस तरह दरूद भेजा करें? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों पर और उनकी औलाद पर जैसा कि तू ने रहमत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर और अपनी बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों और औलाद पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर। बेशक तो इंतिहाई ख़ूबियों वाला और अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 6360)

٣٣٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَمْرِو بْنُ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُمْ قَالُوا: ((يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ: إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)). [طرفه في : ٦٣٦٠].

आल से मुराद वो लोग हैं जिन पर ज़कात हराम है। आपके अहले बैत या'नी हज़रत अ़ली और हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हसन व हुसैन (रज़ि.) हैं। दरूद से मुराद ये है कि आपकी नस्ल बरकत के साथ दुनिया में हमेशा बाक़ी रहे।

3370. हमसे क़ैस बिन हफ़्स और मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू क़ुर्रह मुस्लिम बिन सालिम हम्दानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा क्यूँ न मैं तुम्हें (हदीष़ का) एक तोहफ़ा पहुँचा दूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ मुझे ये तोहफ़ा ज़रूर इनायत फ़र्माइये। उन्होंने बयान किया कि हमने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा था या रसूलल्लाह (ﷺ) हम आप पर और आपके अहले बैत पर किस तरह दरूद भेजा करें? अल्लाह तआ़ला ने सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें ख़ुद ही सिखा दिया है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद (ﷺ) पर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर जैसा कि तूने अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम (ﷺ) पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और

٣٣٧٠- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالاَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا أَبُو قُرَّةَ مُسْلِمُ بْنُ سَالِمٍ الْهَمْدَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عِيسَى سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ: أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقُلْتُ: بَلَى فَأَهْدِهَا لِي، فَقَالَ: سَأَلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ الصَّلاَةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ، فَإِنَّ اللهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ. قَالَ : ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)).

[طرفاه في : ٤٧٩٧، ٦٣٥٧].

आले मुहम्मद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बड़ी अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 4797, 6357)

तश्रीह : अहले बैत या'नी हज़रत अ़ली और हज़रत फ़ातिमा और हस्नैन मुराद हैं।

٣٣٧١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الْمِنْهَالِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ وَيَقُولُ: إِنَّ أَبَاكُمَا كَانَ يُعَوِّذُ بِهَا إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ)).

3371. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मिन्हाल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज़रत ह़सन व हुसैन (रज़ि.) के लिये पनाह त़लब किया करते थे और फ़र्माते थे कि तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा (इब्राहीम अलै.) भी उन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह इस्माईल और इस्हाक़ (अलै.) के लिये मांगा करते थे, मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे पूरे कलिमात के ज़रिये हर एक शैत़ान से और हर ज़हरीले जानवर से और हर नुक़्सान पहुँचाने वाली नज़रे बद से।

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ तक जिस क़दर अह़ादीष़ इस बाब के तह़त में बयान की हैं उन सब में किसी न किसी पहलू से हज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम का ज़िक्र मौजूद है और बाब और अह़ादीष़ में यही वजहे मुनासबत है। ज़िम्नी त़ौर पर अह़ादीष़ में और भी बहुत से मसाइल का ज़िक्र आ गया है जो तदबीर करने से मा'लूम किये जा सकते हैं। दरूद से मुराद दीन व दुनिया की वो बरकतें जो अल्लाह पाक ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनकी औलाद को अ़ता फ़र्माईं कि आज भी बेशतर अक़्वामे आ़लम का नस्ली ता'ल्लुक़ हज़रत इब्राहीम (अलै.) से मिलता है और बिला शक अल्लाह पाक ने यही बरकात हज़रत सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़ता की हैं कि आपका कलिमा पढ़ने वाले आज रूए ज़मीन पर करोड़ों-करोड़ की ता'दाद में मौजूद हैं और रोज़ाना पंजवक़्ता फ़िज़ाए आसमानी में आपकी रिसालते ह़क़्क़ा का ऐलान इस शान से किया जाता है कि दुनिया के तमाम पेशवायाने मज़हब में नज़ीर नामुम्किन है। **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम आमीन**

١١- بَابُ قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ﴾ الآيَة [الحجر: ٥١] ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾ الآيَة [البقرة : ٢٦٠]

बाब 11 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह ह़िज्र में फ़र्माया, ऐ नबी! उन लोगों को इब्राहीम (अलै.) के मेहमानों का क़िस्सा सुनाइये

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मर्दों को ज़िन्दा किस त़रह करेगा लेकिन ये सिर्फ़ मैं इसलिये चाहता हूँ कि मेरे दिल को और ज़्यादा इत्मीनान हो जाए तक।

उनसे स़फ़्वान बिन सुलैम ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। (राजेअ़ : 3443)

عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [راجع: ٣٤٤٣]

अ़लाती भाई वो जिनका बाप एक हो, माँ जुदा जुदा हों। इसी त़रह़ तमाम अंबिया का दीन एक है और फ़ुरूई मसाइल जुदा जुदा हैं।

3444. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने एक शख़्स़ को चोरी करते हुए देखा फिर उससे दरयाफ़्त फ़र्माया तूने चोरी की है? उसने कहा कि हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं। ह़ज़रत ईसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मेरी आँखों को धोखा हुआ।

٣٤٤٤- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَى عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَجُلاً يَسْرِقُ، فَقَالَ لَهُ: أَسَرَقْتَ؟ قَالَ: كَلاَّ وَاللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ. فَقَالَ عِيْسَى: آمَنْتُ بِاللهِ، وَكَذَّبْتُ عَيْنِي)).

तश्रीह : या'नी मोमिन झूठी क़सम नहीं खा सकता जब उसने क़सम खा ली तो मा'लूम हुआ कि वो सच्चा है। आँख से ग़लती मुम्किन है मष़लन उसके जैसा कोई दूसरा शख़्स़ हो। या दरह़क़ीक़त उसका फ़ेअ़ल चोरी न हो। उस माल में उसका कोई ह़क़ मुतअ़य्यन हो। बहुत से एह़तिमाल हो सकते हैं। कुछ ने कहा ऐसा कहने से ह़ज़रत ईसा की मुराद ये थी कि मोमिन को मोमिन की क़सम पर ऐसा भरोसा होना चाहिये जैसे आँख से देखने पर बल्कि इससे ज़्यादा। कुछ ने ये कहा मत़लब ये था कि क़ाज़ी को अपने इ़ल्म और मुशाहिदे पर हुक्म देना दुरुस्त नहीं जब तक बाक़ायदा जुर्म के लिये षुबूत मुहय्या न हो जाए। (वह़ीदी)

3445. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुहरी से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को मिम्बर पर ये कहते सुना था कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, मुझे मेरे मर्तबे से ज़्यादा न बढ़ाओ जैसे ईसा इब्ने मरयम (अलै.) को नस़ारा ने उनके मर्तबे से ज़्यादा बढ़ा दिया है। मैं तो स़िर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिये यही कहा करो (मेरे बारे में) कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। (राजेअ़ : 2462)

٣٤٤٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى ابْنَ مَرْيَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا : عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)). [راجع: ٢٤٦٢]

तश्रीह : अल्लाह का ग़ुलाम, अल्लाह के ह़बीब, अल्लाह के ख़लील, अशरफ़ुल अंबिया आपकी ता'रीफ़ की ह़द यही है। जब क़ुर्आन में आपको अल्लाह का बन्दा फ़र्माया ये आयत उतरी, **लम्मा क़ाम अ़ब्दुल्लाहि** (अल जिन्न : 19) तो आप निहायत ही ख़ुश हुए अल्लाह की उ़बूदियते ख़ालिस़ा बहुत बड़ा मर्तबा है। ये जाहिल क्या जानें। उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) की नअ़त यही समझ रखी है कि आपको अल्लाह बना दें या अल्लाह से भी एक दर्जा आगे चढ़ा दें। **कबुरत कलिमतन तख़रूजु मिन अफ़्वाहिहिम.** (वहीदी)

कि वहाँ ताऊन है, वापस लौट आए। लोगों ने कहा आप अल्लाह की तक़्दीर से भागते हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हम अल्लाह की तक़्दीर से अल्लाह की तक़्दीर ही की तरफ़ भागते रहे हैं। ताऊन में पहले शदीद बुख़ार होता है फिर बग़ल या गर्दन में गिल्टी निकलती है और आदमी मर जाता है। ताऊन की मौत शहादत है।

3474. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे दाऊद बिन अबी फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन यअमर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से ताऊन के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि ये एक अज़ाब है, अल्लाह तआला जिस पर चाहता है भेजता है लेकिन अल्लाह तआला ने उसको मोमिनों के लिये रहमत बना दिया है। अगर किसी शख़्स की बस्ती में ताऊन फैल जाए और वो सब्र के साथ अल्लाह की रहमत से उम्मीद लगाए हुए वहीं ठहरा रहे कि होगा वही जो अल्लाह तआला ने क़िस्मत में लिखा है तो उसे शहीद के बराबर षवाब मिलेगा।

(दीगर मक़ाम : 5734, 6619)

٣٤٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ : ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، وَأَنَّ اللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لاَ يُصِيبُهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيدٍ)). [طرفاه في : ٥٧٣٤، ٦٦١٩].

3475. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि मख़्ज़ूमिया ख़ातून (फ़ातिमा बिन्ते अस्वद) जिसने (ग़ज़्व-ए-फ़तह के मौक़े पर) चोरी कर ली थी, उसके मामले ने क़ुरैश को फ़िक्र में डाल दिया। उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि उस मामला पर आँहज़रत (ﷺ) से बातचीत कौन करे? आख़िर ये तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आपको बहुत अज़ीज़ हैं। उनके सिवा और कोई उसकी हिम्मत नहीं कर सकता। चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से इस बारे में कुछ कहा तो आपने फ़र्माया। ऐ उसामा! क्या तू अल्लाह की हुदूद में से एक हद के बारे में मुझसे सिफ़ारिश करता है? फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया (जिसमें) आपने फ़र्माया। पिछली बहुत सी उम्मतें इसलिये हलाक हो गईं कि जब उनका कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते और अल्लाह की क़सम! अगर

٣٤٧٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمْ شَأْنُ الْمَرْأَةِ الْمَخْزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتْ، فَقَالُوا: وَمَنْ يُكَلِّمُ فِيهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَقَالُوا : وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَهُ أُسَامَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَاخْتَطَبَ، ثُمَّ قَالَ : ((إِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِينَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ. وَايْمُ اللهِ! لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ ابْنَتِ

फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँ। (राजेअ : 2638)

مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا)).
[راجع: ٢٦٤٨]

इस ह़दीष़ की शरह़ किताबुल हुदूद में आएगी। चोर का हाथ काट डालना शरीअ़ते मूसवी में भी था। जो कोई उस सज़ा को वह़शियाना बताए वो ख़ुद वह़शी है और जो कोई मुसलमान होकर उस सज़ा को ख़िलाफ़े तहज़ीब कहे वो काफ़िर और इस्लाम के दायरे से ख़ारिज है। (वह़ीदी) ह़ज़रत उसामा रसूलुल्लाह (ﷺ) के बड़े ही चहेते बच्चे थे क्योंकि उनके वालिद ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़ारिषा की परवरिश रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी। यहाँ तक कि कुछ लोग उनको रसूले करीम (ﷺ) का बेटा समझते और उसी त़रह़ पुकारते मगर आयते करीमा **उदऊ़हुम लिआबाइहिम** (अल अह़ज़ाब : 5) ने उनको इस त़रह़ पुकारने से मना कर दिया।

3476. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, कहा कि मैंने नज़्ज़ाल बिन सब्रह हिलाली से सुना और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक सह़ाबी (अ़म्र बिन आ़स) को क़ुर्आन मजीद की एक आयत पढ़ते सुना। वही आयत नबी अकरम (ﷺ) से उसके ख़िलाफ़ क़िरात के साथ में सुन चुका था, इसलिये मैं उन्हें साथ लेकर आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपसे ये वाक़िया बयान किया लेकिन मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर उसकी वजह से नाराज़ी के आष़ार देखे। आपने फ़र्माया तुम दोनों अच्छा पढ़ते हो। आपस में इख़्तिलाफ़ न किया करो। तुमसे पहले लोग इसी क़िस्म के झगड़ों से तबाह हो गये। (राजेअ : 2410)

٣٤٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَّالَ بْنَ سَبْرَةَ الْهِلاَلِيَّ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً قَرَأَ آيَةً وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ خِلاَفَهَا، فَجِئْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهِيَةَ وَقَالَ: كِلاَكُمَا مُحْسِنٌ، وَلاَ تَخْتَلِفُوا، فَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اخْتَلَفُوا فَهَلَكُوا)).
[راجع: ٢٤١٠]

तश्रीह़ : या'नी क़ुर्आन मजीद में जो इख़्तिलाफ़े क़िरात है, उसमें हर आदमी को इख़्तियार है जो किरात चाहे वो पढ़े। इस अम्र में लड़ना झगड़ना मना है। ऐसे ही फ़ुरूई और क़यासी मसाइल में लड़ना झगड़ना मना है और ख़ामख़्वाह किसी को क़यासी मसाइल के लिये मजबूर करना कि वो स़िर्फ़ ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह) या स़िर्फ़ ह़ज़रत इमाम शाफ़िई (रह) के इज्तिहाद पर चले ये नाह़क़ का तह़ाकुम और जबर और ज़ुल्म है।

3477. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे बाप ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा मैं गोया नबी करीम (ﷺ) को इस वक़्त देख रहा हूँ। आप बनी इस्राईल के एक नबी का वाक़िया बयान कर रहे थे कि उनकी क़ौम ने उन्हें मारा और ख़ून आलूद कर दिया। लेकिन वो नबी ख़ून स़ाफ़ करते जाते और ये दुआ़ करते कि, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम की मग़्फ़िरत फ़र्मा। ये लोग जानते नहीं हैं। (दीगर मक़ाम : 6929)

٣٤٧٧- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ عَبْدُ اللهِ : كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوهُ، وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ)). [طرفه في : ٦٩٢٩].

तश्रीह़ : कहते हैं किये ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहिस्सलाम) का वाक़िया है मगर उस सूरत में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी(रह) इस ह़दीष़

दादों की तरफ़ अपनी निस्बत करना

الإِسْلاَمِ وَالْجَاهِلِيَّةِ

या'नी ये बयान करना कि मैं फ़लाँ की औलाद में से हूँ अगरचे वो आबा व अज्दाद ग़ैर–मुस्लिम ही क्यूँ न हों मगर ऐसा बयान करना जाइज़ है। ये इस्लाम की वो ज़बरदस्त अख़्लाक़ी ता'लीम है जिस पर मुसलमान फ़ख़्र कर सकते हैं। हिन्दुस्तान की बेशतर क़ौमें नव-मुस्लिम हैं। वो भी अपने ग़ैर–मुस्लिम आबाअ व अज्दाद का ज़िक्र करें तो शरअ़न उसमें कोई क़बाहत नहीं है बशर्ते कि ये ज़िक्र हुदूदे शरई के अंदर हो।

और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लैहिस्सलाम) थे। और बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ الْكَرِيْمَ ابْنَ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ)). وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)).

आँहज़रत (ﷺ) ने अपने आपको अ़ब्दुल मुत्तलिब की तरफ़ मन्सूब किया इससे बाब का मतलब षाबित हुआ।

3525. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी, ऐ पैग़म्बर! अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के क़रीबी रिश्तेदारों को डराया, तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ क़बीलों को बुलाया, ऐ बनी फ़हर! ऐ बनी अ़दी! जो क़ुरैश के ख़ानदान थे। (राजेअ़ : 1394)

٣٥٢٥– حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ [الشعراء: ٢١٤] جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيٍّ))، بِبُطُونِ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3526. (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने) कहा कि हमसे क़बीसा ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें ह़बीब बिन अबी षाबित ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये, उतरी तो आँहज़रत (ﷺ) ने अलग अलग क़बीलों को (दीने इस्लाम की) दा'वत दी। (राजेअ़ : 1394)

٣٥٢٦– وَقَالَ لَنَا قَبِيْصَةُ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيْبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُوهُمْ قَبَائِلَ قَبَائِلَ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3527. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमको अबुज़्ज़िनाद ने ख़बर दी, उन्हें

٣٥٢٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ أَخْبَرَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अब्दे मुनाफ़ के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह से ख़रीद लो (या'नी नेक काम करके उन्हें अल्लाह तआला के अ़ज़ाब से बचा लो) ऐ अब्दुल मुत्तलिब के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह तआला से ख़रीद लो। ऐ ज़ुबैर बिन अव्वाम की वालिदा! रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी, ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! तुम दोनों अपनी जानों को अल्लाह से बचा लो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की बारगाह में कुछ इख़्तियार नहीं रखता। तुम दोनों मेरे माल में जितना चाहो मांग सकती हो। (राजेअ़ : 2753)

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا أُمَّ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، اشْتَرِيَا أَنْفُسَكُمَا مِنَ اللهِ، لاَ أَمْلِكُ لَكُمَا مِنَ اللهِ شَيْئًا سَلاَنِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمَا)). [راجع: ٢٧٥٣]

तश्रीह : बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन ख़ानदानों को उनके पुराने आबा व अज्दाद ही के नामों से पुकारा, मा'लूम हुआ कि ऐसी निस्बत अल्लाह के नज़दीक मअ़यूब (बुरी) नहीं है जैसे यहाँ के बेशतर मुसलमान अपने पुराने ख़ानदानों ही के नाम से अपनी पहचान कराते हैं । दूसरी रिवायत में यूँ है ऐ आइशा! ऐ हफ़्सा! ऐ उम्मे सलमा! ऐ बनी हाशिम! अपनी अपनी जानों को दोज़ख़ से छुड़ाओ। मा'लूम हुआ कि अगर ईमान न हो तो पैग़म्बर (अ़लैहिस्सलाम) की रिश्तेदारी क़यामत में कुछ काम न आएगी। इस ह़दीष़ से इस शिर्किया शिफ़ाअ़त का बिलकुल रद्द हो गया जो कुछ नाम के मुसलमान अंबिया और औलिया की निस्बत ये ए'तिक़ाद रखते हैं कि जिसके दामन को चाहेंगे पकड़कर अपनी शिफ़ाअ़त कराके बख़्शवा लेंगे, ये अ़क़ीदा सरासर बातिल है।

बाब 14 : किसी क़ौम का भांजा या आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है

١٤- بَابُ ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ، وَمَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ

3528. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को ख़ास़ त़ौर से एक मर्तबा बुलाया, फिर उनसे पूछा क्या तुम लोगों मे कोई ऐसा शख़्स भी रहता है जिसका ता'ल्लुक़ तुम्हारे क़बीले से न हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि सिर्फ़ हमारा एक भांजा ऐसा है। आपने फ़र्माया कि भांजा भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है।

٣٥٢٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الأَنْصَارَ فَقَالَ: ((هَلْ فِيكُمْ أَحَدٌ مِنْ غَيْرِكُمْ؟)) قَالُوا: لاَ إِلاَّ ابْنُ أُخْتٍ لَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ)).

तश्रीह : अंसार के इस बच्चे का नाम नोअमान बिन मुक़रिन था। इमाम अह़मद की रिवायत में उसकी स़राह़त है। बाब का तर्जुमा में मौला का ज़िक्र है लेकिन इमाम बुख़ारी मौला (आज़ादकर्दा ग़ुलाम) की कोई ह़दीष़ नहीं लाए। कुछ ने कहा उन्होंने मौला के बाब में कोई ह़दीष़ अपनी शर्त पर नहीं पाई होगी। ह़ाफ़िज़ ने कहा ये स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह) ने फ़राइज़ में ये ह़दीष़ निकाली है कि किसी क़ौम का मौला भी उन ही में दाख़िल है और मुम्किन है कि इमाम बुख़ारी (रह) ने इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया हो जिसको बज़्ज़ार ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला है। उसमें मौला और ह़रीफ़ और भांजे तीनों मज़्कूर हैं। तैसीर में है कि ह़नीफ़ा ने उसी ह़दीष़ से दलील ली है कि जब अ़स्बा और ज़ुल् फ़ुरूज़ न हों तो भांजा मामूँ का वारिष़ होगा।

(राजेअ : 1360)

تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ﴾ [القصص : ٥٦].

[راجع: ١٣٦٠]

3885. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह इब्ने इल्हाद ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) की मज्लिस में आप (ﷺ) के चचा का ज़िक्र हो रहा था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया शायद क़यामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअत काम आ जाए और उन्हें सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में रखा जाए जिससे उनका दिमाग़ खौलेगा।

٣٨٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ- وَذُكِرَ عِنْدَهُ عَمُّهُ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ تَنْفَعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُجْعَلُ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ يَغْلِي مِنْهُ دِمَاغُهُ)). حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ

रिवायत में अबू तालिब का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबू हाज़िम और दरावर्दी ने बयान किया यज़ीद से इसी मज़्कूरा हदीष की तरह, अल्बत्ता इस रिवायत में ये भी है कि अबू तालिब के दिमाग़ का भेजा उससे खौलेगा। (दीगर मक़ाम : 6564)

حَمْزَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيّ عَنْ يَزِيْدَ بِهَذَا وَقَالَ: تَغْلِي مِنْهُ أُمُّ دِمَاغِهِ.

[طرفه في : ٦٥٦٤].

बाब 41 : बैतुल मक़्दिस तक जाने का क़िस्सा

और अल्लाह तआला ने सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया, पाक ज़ात है वो जो अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया।

٤١- بَابُ حَدِيْثِ الإِسْرَاءِ، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الأَقْصَى﴾

3886. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कि मुझसे कहा अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया था कि जब क़ुरैश ने (मेअराज के वाक़िये के सिलसिले में) मुझको झुठलाया था तो मैं हतीम में खड़ा हो गया और अल्लाह तआला ने मेरे लिये बैतुल मक़्दिस को रोशन कर दिया और मैंने उसे देखकर क़ुरैश से उसके पते और निशान बयान करना शुरू कर दिये।

(दीगर मक़ाम : 4710)

٣٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِالرَّحْمَنِ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ تَجَلَّى اللهُ لِي بَيْتَ الْمَقْدِسِ، فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ)).

[طرفه في : ٤٧١٠].

अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ अहद करके आता था, उस ख़तरे की वजह से कि कहीं वो फ़ित्ना में न पड़ जाए लेकिन अब अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया है और आज (सर ज़मीने अरब में) इंसान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अल्बत्ता जिहाद और जिहाद की निय्यत का षवाब बाक़ी है। (राजेअ : 3080)

إِلَى اللهِ تَعَالَى إِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةَ أَنْ يُفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللهُ الإِسْلاَمَ، وَالْيَوْمَ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

[راجع: ٣٠٨٠]

3901. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने बयान किया कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि उससे ज़्यादा मुझे और कोई चीज़ पसन्दीदा नहीं कि तेरे रास्ते में, मैं उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला, ऐ अल्लाह! लेकिन ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारे और उनके बीच लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है। और अबान बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (ये अल्फ़ाज़ सअद रज़ि. फ़र्माते थे) मिन क़ौमिन कज़्ज़बू नबिय्यका व अख़रजूहू मिन क़ुरैश या'नी जिन्होंने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया, बाहर निकाल दिया। इससे क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं।

(राजेअ : 463)

٣٩٠١- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: هِشَامٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبِي ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أُجَاهِدَهُمْ فِيكَ مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْرَجُوهُ، اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ)).

وَقَالَ أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ: ((مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا نَبِيَّكَ وَأَخْرَجُوهُ مِنْ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ٤٦٣]

हज़रत सअद को ये गुमान हुआ कि जंगे अहज़ाब में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की पूरी ताक़त लग चुकी है और आख़िर में वो भाग निकले तो अब क़ुरैश में लड़ने की ताक़त नहीं रही। शायद अब हममें और उनमें जंग न हो।

3902. हमसे मतर बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को चालीस साल की उम्र में रसूल बनाया गया था। फिर आप (ﷺ) पर मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक वह्य आती रही उसके बाद आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) ने हिजरत की हालत में दस साल गुज़ारे, (मदीना में) जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

٣٩٠٢- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بُعِثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَرْبَعِينَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فَهَاجَرَ عَشْرَ سِنِينَ، وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ)).

3903. मुझसे मतर बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह

٣٩٠٣- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا

कर बैठी थीं कि हिम्मत हार दें, जबकि ह़ाल ये कि अल्लाह दोनों का मददगार था। सुफ़यान ने बयान किया कि हम दो जमाअतें बनू ह़ारिष़ और बनू सलाम थे। ह़ालाँकि इस आयत में हमारे बोदेपन का ज़िक्र है, मगर हमको ये पसन्द नहीं कि ये आयत न उतरती क्योंकि उसमें ये मज़्कूर है कि अल्लाह उन दोनों गिरोहों का मददगार (सरपरस्त) है। (राजेअ़ : 5051)

تفشلا واللهُ وليُّهما﴾ قال: نحنُ الطَّائفتانِ بنو حارثةَ، وبنو سلِمةَ، وما نُحبُّ وقال سُفيانُ مرَّةً: وما يسرُّني أنَّها لم تنزلْ لقولِ اللهِ: ﴿واللهُ وليُّهما﴾.

[راجع: ٥٠٥١]

इससे बढ़कर और फ़ज़ीलत क्या होगी कि विलायते इलाही हमको ह़ासिल हो गई। हमारे बोदेपन का जो ज़िक्र है वो स़ह़ीह़ है। इस फ़ज़ीलत के सामने हमको इस ऐब के फ़ाश होने का बिलकुल मलाल नहीं।

बाब 9 : आयत 'लैस लक मिनल्अम्रि शैउन' की तफ़्सीर या'नी, आपको इस अम्र में कोई दख़ल नहीं कि ये हिदायत क्यूँ नहीं क़ुबूल करते अल्लाह जिसे चाहे उसे हिदायत मिलती है।

٩- باب قوله ﴿ليس لك من الأمر شيءٌ﴾

4559. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे सालिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़ज्र की दूसरी रकअ़त के रुकूअ़ से सर उठाकर ये बद्दुआ की, 'ऐ अल्लाह! फ़लाँ फ़लाँ और फ़लाँ काफ़िर पर ला'नत कर', ये बद्दुआ आपने समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदह् और रब्बना लकल ह़म्द के बाद की थी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी, 'आपको उसमें कोई दख़ल नहीं' आख़िर आयत फ़इन्नहुम ज़ालिमून तक। इस रिवायत को इस्ह़ाक़ बिन राशिद ने ज़ुह्री से नक़ल किया है। (राजेअ़ : 4069)

٤٥٥٩- حدَّثنا حِبَّانُ بنُ موسى، أخبرنا عبدُ اللهِ، أخبرنا معمرٌ عن الزُّهريِّ. قال: حدَّثني سالمٌ عن أبيهِ أنَّهُ سمعَ رسولَ اللهِ ﷺ إذا رفعَ رأسَهُ منَ الرُّكوعِ في الرَّكعةِ الآخرةِ منَ الفجرِ يقولُ: ((اللَّهمَّ العنْ فُلانًا وفُلانًا وفُلانًا)) بعدَ ما يقولُ: ((سمعَ اللهُ لمنْ حمدهُ ربَّنا ولكَ الحمدُ)) فأنزلَ اللهُ ليسَ لكَ منَ الأمرِ شيءٌ إلى قولهِ ﴿فإنَّهم ظالمونَ﴾. رواهُ إسحاقُ بنُ راشدٍ عنِ الزُّهريِّ.

[راجع: ٤٠٦٩]

तश्रीह : इस्ह़ाक़ बिन राशिद की रिवायत को त़बरानी ने मुअ़जमे कबीर में वस़्ल किया है। आपने चार शख़्सों का नाम लेकर बद्दुआ की थी। स़फ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन उ़मैर, ह़ारिष़ बिन हिशाम और अ़म्र बिन आस़ (रज़ि.) और बाद में ये चारों मुसलमान हो गये। अल्लाह को उनका मुस्तक़्बिल मा'लूम था, इसीलिये अल्लाह ने उन पर ला'नत करने से मना किया।

4560. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलाम बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.)

٤٥٦٠- حدَّثنا موسى بنُ إسماعيلَ، حدَّثنا إبراهيمُ بنُ سعدٍ، حدَّثنا ابنُ شهابٍ، عنْ سعيدِ بنِ المُسيَّبِ، وأبي

١٥- باب قوله ﴿وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ
الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا﴾

बाब 15 : आयत 'वल तस्मउ़ना मिनल्लज़ीन ऊतुल किताब' की तफ़्सीर या'नी,

और यक़ीनन तुम लोग बहुत सी दिल दुखाने वाली बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी सुनोग जो मुश्रिक हैं।

या'नी यहूद व नसारा व बुतपरस्त क़ौमें हमेशा तकलीफ़ देने पर आमादा रहेंगी मगर तुमको सब्र व इस्तिक़ामत के साथ ये सारे मसाइब बर्दाश्त करने होंगे।

٤٥٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ
عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَوْلُهُ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ
الزُّبَيْرِ، أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ
عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَكِبَ
عَلَى حِمَارٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ وَأَرْدَفَ
أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ
فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ
بَدْرٍ، قَالَ : حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ اللهِ
بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ
عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ فَإِذَا فِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ

4566. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे की पुश्त पर फ़िदक की बनी हुई एक मोटी चादर रखने के बाद सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे बिठाया। आप (ﷺ) बनू ह़ारिष़ बिन ख़ज़रज में सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। रास्ते में एक मजलिस से आप गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) भी मौजूद था, ये अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के ज़ाहिरी इस्लाम लाने से भी पहले का क़िस्सा है। मज्लिस में मुसलमान और मुश्रिकीन या'नी बुतपरस्त और यहूदी सब ही

مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ قَوْلِهِ عَبَدَةِ
الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَالْمُسْلِمِينَ وَفِي
الْمَجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا
غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ
عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ
تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ
ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ
عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ
سَلُولَ أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ
إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِينَا بِهِ فِي مَجْلِسِنَا

तरह के लोग थे, उन्हीं में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) भी थे। सवारी की (टापों से गर्द उड़ी और) मज्लिस वालों पर पड़ी तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने चादर से अपनी नाक बन्द कर ली और बतौरे तह़क़ीर कहने लगा कि हम पर गर्द न उड़ाओ, इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी क़रीब पहुँच गये और उन्हें सलाम किया, फिर आप सवारी से उतर गये और मज्लिस वालों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाया और क़ुर्आन की आयतें पढ़कर सुनाईं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल कहने लगा, जो कलाम आपने पढ़कर सुनाया है, उससे उ़म्दह कोई कलाम नहीं हो सकता। अगरचे ये कलाम बहुत अच्छा है, फिर भी हमारी मज्लिसों में आ आकर आप हमें तकलीफ़ न दिया करें, अपने घर बैठें, अगर कोई आपके पास जाए तो उसे अपनी बातें सुनाया करें। (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने

4648. मुझसे अहमद बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे स़ाहिबुज़्ज़यादी अ़ब्दुल ह़मीद ने जो कुरदीद के स़ाहबज़ादे थे, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि अबू जहल ने कहा था कि, ऐ अल्लाह! अगर ये कलाम तेरी त़रफ़ से वाक़ई ह़क़ है तो, हम पर आसमानों से पत्थर बरसा दे या फिर कोई और ही अ़ज़ाबे दर्दनाक ले आ! तो उस पर, आयत हालाँकि अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब दे इस ह़ाल में कि आप उनमें मौजूद हों, और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब लाएगा इस ह़ाल में कि, वो इस्तिग़फ़ार कर रहे हों। उन लोगों के लिये क्या वजह कि अल्लाह उन पर अ़ज़ाब (ही सिरे से) न लाए। ह़ाल ये है कि वो मस्जिदे ह़राम से रोकते हैं। आख़िर आयत तक।

(दीगर मक़ाम : 4649)

٤٦٤٨- حدَّثني أَحْمَدُ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ هُوَ بْنُ كُرْدِيدٍ صَاحِبِ الزِّيَادِيِّ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَبُو جَهْلٍ: ﴿اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾ فَنَزَلَتْ: ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ وَمَا لَهُمْ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمُ اللهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾. الآيَةَ.

[طرفه في : ٤٦٤٩].

अबू जहल की दुआ़ क़ुबूल हुई और बद्र में वो ज़िल्लत की मौत मरा। आयत और ह़दीष़ में यही मज़्कूर हुआ है अगर वो लोग तौबा इस्तिग़फ़ार करते तो अल्लाह तआ़ला भी ज़रूर उन पर रह़म करता मगर उनकी क़िस्मत में इस्लाम न था। व ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ इससे इस्तिग़फ़ार की भी बड़ी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई।

बाब 5 : आयत 'व मा कानल्लाहु लियुअज़्ज़िबहुम'

अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी, और अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब करे इस ह़ाल में कि ऐ नबी! आप उनमें मौजूद हों और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब लाएगा इस ह़ालत में कि वो इस्तिग़फ़ार कर रहे हों।

٥- باب قَوْلِهِ : ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ﴾.

4649. हमसे मुह़म्मद बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे स़ाहिबुज़्ज़ियादी अ़ब्दुल ह़मीद ने और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू जहल ने कहा था कि ऐ अल्लाह! अगर ये कलाम तेरी त़रफ़ से वाक़ई ह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या फिर कोई और ही अ़ज़ाब ले आ। उस पर ये आयत नाज़िल हुई, हालाँकि अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब दे इस ह़ाल में कि आप उनमें मौजूद हों और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब

٤٦٤٩- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ النَّضْرِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ صَاحِبِ الزِّيَادِيِّ، سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ أَبُو جَهْلٍ: ﴿اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾ فَنَزَلَتْ : ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللهُ مُعَذِّبَهُمْ

बाब 5 : आयत 'व मा कानल्लाहु लियुअज़्ज़िबहुम'

५- باب قَوْلِهِ : ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ﴾.

अल्अऩ्फ़ाल की तफ़्सीर या'नी, और अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब करे इस हाल में कि ऐ नबी! आप उनमें मौजूद हों और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब लाएगा इस हालत में कि वो इस्तिग़फ़ार कर रहे हों।

٤٦٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ النَّضْرِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ صَاحِبِ الزِّيَادِيِّ، سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ : قَالَ أَبُو جَهْلٍ: ﴿اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾ فَنَزَلَتْ : ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ وَمَا لَهُمْ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمُ اللهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾. الآيَةَ. [راجع: ٤٦٤٨]

4649. हमसे मुहम्मद बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे स़ाहिबुज़्ज़ियादी अ़ब्दुल ह़मीद ने और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू जहल ने कहा था कि ऐ अल्लाह! अगर ये कलाम तेरी त़रफ़ से वाक़ई ह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या फिर कोई और ही अ़ज़ाब ले आ। उस पर ये आयत नाज़िल हुई, हालाँकि अल्लाह ने ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब दे इस ह़ाल में कि आप उनमें मौजूद हों और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब

लाएगा, इस ह़ाल में कि वो इस्तिग़फ़ार कर रहे हों। उन लोगों को अल्लाह क्यूँ न अ़ज़ाब करे जिनका ह़ाल ये है कि वो मस्जिदे हराम से रोकते हैं। आख़िर आयत तक। (राजेअ़ : 4648)

लाएगा, इस हाल में कि वो इस्तिग़्फ़ार कर रहे हों। उन लोगों को अल्लाह क्यूँ न अ़ज़ाब करे जिनका हाल ये है कि वो मस्जिदे हराम से रोकते हैं। आख़िर आयत तक। (राजेअ : 4648)

وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ وَمَا لَهُمْ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمُ اللهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾. الآيَةَ. [راجع: ٤٦٤٨]

बाब 6 : आयत 'व कातिलूहुम हत्ता ला तकून फ़ित्ना' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب قوله

﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ للهِ﴾

और उनसे लड़ो, यहाँ तक कि फ़ित्ना बाक़ी न रह जाए।

4650. हमसे ह़सन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यह़्या ने, कहा हमसे ह़ैवा बिन शुरैह़ ने, उन्होंने बक्र बिन अ़म्र से, उन्होंने बुकैर से, उन्होंने नाफ़ेअ़ से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि एक शख़्स़ (ह़ब्बान या अ़लाअ बिन अ़रार नामी) ने पूछा अबू अ़ब्दुर्रह़मान! आपने क़ुर्आन की ये आयत नहीं सुनी कि जब मुसलमानों की दो जमाअ़तें लड़ने लगें अल्अख़, इस आयत के ब-मौजिब तुम (ह़ज़रत अ़ली और मुआ़विया रज़ि दोनों से) क्यूँ नहीं लड़ते जैसे अल्लाह ने फ़र्माया फक़ातिलुल्लती तब्गी। उन्होंने कहा मेरे भतीजे अगर मैं इस आयत की तावील करके मुसलमानों से न लड़ूं तो ये मुझको अच्छा मा'लूम होता है बनिस्बत उसके कि मैं इस आयत व मंय्यक़्तुल मूमिनन मुतअ़म्मिदन की तावील करूं, वो शख़्स़ कहने लगा अच्छा उस आयत का क्या करोगे जिसमें मज़्कूर है कि उनसे लड़ो ताकि फ़ित्ना बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह का हो जाए। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा (वाह वाह) ये लड़ाई तो हम आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़हद में कर चुके, उस वक़्त मुसलमान बहुत थोड़े थे और मुसलमान को इस्लाम इख़्तियार करने पर तकलीफ़ दी जाती। क़त्ल करते, क़ैद करते यहाँ तक कि इस्लाम फैल गया। मुसलमान बहुत हो गये अब फ़ित्ना जो उस आयत में मज़्कूर है वो कहाँ रहा, जब उस शख़्स़ ने देखा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) किसी त़रह लड़ाई पर उसके मुवाफ़िक़ नहीं होते तो कहने लगा अच्छा बतलाओ अ़ली (रज़ि.) और उ़स्मान (रज़ि.) के बारे में तुम्हारा क्या ए'तिक़ाद है? उन्होंने कहा हाँ ये कहा तो सुनो, अ़ली (रज़ि.) और उ़स्मान (रज़ि.) के बारे में अपना ए'तिक़ाद बयान करता हूँ। उ़स्मान (रज़ि.) का जो क़ुसूर तुम बयान करते

٤٦٥٠- حدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ نَافِعٍ. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلاً جَاءَهُ فَقَالَ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَلاَ تَسْمَعُ مَا ذَكَرَ اللهُ فِي كِتَابِهِ ﴿وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ، فَمَا يَمْنَعُكَ أَنْ لاَ تُقَاتِلَ كَمَا ذَكَرَ اللهُ فِي كِتَابِهِ؟ فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي أَغْتَرُّ بِهَذِهِ الآيَةِ وَلاَ أُقَاتِلُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَغْتَرَّ بِهَذِهِ الآيَةِ الَّتِي يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا﴾ إِلَى آخِرِهَا قَالَ: فَإِنَّ اللهَ يَقُولُ: ﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ﴾ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: قَدْ فَعَلْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ كَانَ الإِسْلاَمُ قَلِيلاً، فَكَانَ الرَّجُلُ يُفْتَنُ فِي دِينِهِ إِمَّا يَقْتُلُوهُ، وَإِمَّا يُوثِقُوهُ، حَتَّى كَثُرَ الإِسْلاَمُ فَلَمْ تَكُنْ فِتْنَةٌ فَلَمَّا رَأَى أَنَّهُ لاَ يُوَافِقُهُ فِيمَا يُرِيدُ قَالَ: فَمَا قَوْلُكَ فِي عَلِيٍّ وَعُثْمَانَ؟ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: مَا قَوْلِي فِي

नहीं है वो शवा है। इज़ून गिरोह गिरोह इसका मुफ़रद इज़तुन है।
ये सूरह मक्की है इसमें 44 आयात और दो रुकूअ हैं।

सूरह नूह की तफ़्सीर

[٧١] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अत्वार कभी कुछ कभी कुछ मष़लन मनी फिर गोश्त का लौथड़ा अरब लोग कहते हैं अदा त़ौरूहू अपने अंदाज़ से बढ़ गया। कुब्बार (बतशदीद बाअ) में कुबार से ज़्यादा मुबालग़ा है या'नी बहुत ही बड़ा, जैसे जमील ख़ूबसूरत जुम्माल बहुत ही ख़ूबसूरत ग़र्ज़ कुब्बार का मा'नी बड़ा कभी उसको कुब्बार तख़्फ़ीफ़ बाअ से भी पढ़ा है। अरब लोग कहते हैं हुस्सान और जुम्माल (तशदीद से) और हुसान और जुमाल (तख़्फ़ीफ़ से) दय्यारा दौर से निकला है। इसका वज़न फ़यआल है (अस़्ल में दीवार था) जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अल ह़य्युल् क़य्यूम को अल् ह़य्युल क़ियाम पढ़ा है। ये क़यामत क़ुम्तु से निकला है (तो अस़्ल में क़यवाम था) औरों ने कहा दय्यारा के मअ़नी किसी को तबारा हलाकत। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा मिदरारा एक के पीछे दूसरा या'नी लगातार बारिश। वक़ारा अज़्मत बड़ाई मुराद है।

﴿أَطْوَارًا﴾ طَوْرًا كَذَا وَطَوْرًا كَذَا يُقَالُ عَدَا طَوْرَهُ أَيْ قَدْرَهُ. وَالْكُبَّارُ أَشَدُّ مِنَ الْكُبَارِ وَكَذَلِكَ جُمَّالٌ وَجَمِيلٌ لأَنَّهَا أَشَدُّ مُبَالَغَةً وَكُبَّارٌ الْكَبِيرُ وَكُبَارًا أَيْضًا بِالتَّخْفِيفِ وَالْعَرَبُ تَقُولُ رَجُلٌ حُسَّانٌ وَجُمَّالٌ وَحُسَانٌ مُخَفَّفٌ وَجُمَالٌ مُخَفَّفٌ. دَيَّارًا مِنْ دَوْرٍ وَلَكِنَّهُ فَيْعَالٌ مِنَ الدَّوَرَانِ كَمَا قَرَأَ عُمَرُ الْحَيُّ الْقَيَّامُ وَهِيَ مِنْ قُمْتُ وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿دَيَّارًا﴾ أَحَدًا ﴿تَبَارًا﴾ هَلاَكًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿مِدْرَارًا﴾ يَتْبَعُ بَعْضُهَا بَعْضًا. ﴿وَقَارًا﴾ عَظَمَةً.

ये सूरत मक्की है इसमें 28 आयात और दो रुकूअ हैं।

बाब 'वद्दा वला सुवाअंव् वला यग़ूष़वं् व यऊक़ व नस्र' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب ﴿وَدًّا وَلاَ سُوَاعًا وَلاَ يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا﴾

4920. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने और अ़ता ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जो बुत ह़ज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम मे पूजे जाते थे बाद मे वही अरब में पूजे जाने लगे। वद्दा दौमतुल जन्दल में बनी कल्ब का बुत था। सुवाअ़ बनी हुज़ैल का। यग़ूष़ बनी मुराद का और मुराद की शाख़ बनी ग़ुतैफ़ का जो वादी जौफ़ में क़ौमे सबा के पास रहते थे यऊक़ बनी हम्दान का बुत था। नस्र हिम्यर का बुत था जो ज़ुल कलाअ की आल

٤٩٢٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : صَارَتِ الأَوْثَانُ الَّتِي كَانَتْ فِي قَوْمِ نُوحٍ فِي الْعَرَبِ بَعْدُ، أَمَّا وُدٌّ كَانَتْ لِكَلْبٍ بِدَوْمَةِ الْجَنْدَلِ، وَأَمَّا سُوَاعٌ كَانَتْ لِهُذَيْلٍ، وَأَمَّا يَغُوثُ فَكَانَتْ لِمُرَادٍ، ثُمَّ لِبَنِي غُطَيْفٍ

(रज़ि.) के शौहर एक ह़ब्शी ग़ुलाम थे। उनका मुग़ीष़ नाम था, वो बनी फ़लाँ के ग़ुलाम थे। जैसे वो मंज़र अब भी मेरी आँखों में है कि वो मदीना की गलियों में बरीरह (रज़ि.) के पीछे पीछे फिर रहे हैं। (राजेअ़ : 5280)

बाब 16 : बरीरह (रज़ि.) के शौहर के बारे में नबी करीम (ﷺ) का सिफ़ारिश करना

5283. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि बरीरह (रज़ि.) के शौहर ग़ुलाम थे और उनका नाम मुग़ीष़ था। गोया मैं इस वक़्त उसको देख रहा हूँ जब वो बरीरह (रज़ि.) के पीछे-पीछे रोते हुए फिर रहे थे और आंसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो रही थी। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, अ़ब्बास! क्या तुम्हें मुग़ीष़ की बरीरह से मुह़ब्बत और बरीरह की मुग़ीष़ से नफ़रत पर ह़ैरत नहीं हुई? आख़िर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) से फ़र्माया काश! तुम उसके बारे में अपना फ़ैसला बदल देतीं। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप मुझे उसका हुक्म फ़र्मा रहे हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं स़िर्फ़ सिफ़ारिश कर रहा हूँ। उन्होंने इस पर कहा कि मुझे मुग़ीष़ के पास रहने की ख़्वाहिश नहीं है। (राजेअ़ : 5280)

बाब : 17

5284. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें ह़कम ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उन्हें अस्वद ने कि आइशा (रज़ि.) ने बरीरह (रज़ि.) को ख़रीदने का इरादा किया लेकिन उनके मालिकों ने कहा कि वो इसी शर्त पर उन्हें बेच सकते हैं कि बरीरह का तर्का हम लें और उनके साथ विलाअ (आज़ादी के बाद) उन्हीं से क़ायम हो। आइशा (रज़ि.) ने जब उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो तर्का तो उसी को मिलेगा जो लौण्डी ग़ुलाम को आज़ाद करे और विलाअ भी उसी के साथ क़ायम हो सकती है जो आज़ाद करे और नबी करीम (ﷺ) के सामने गोश्त लाया गया फिर

M-09825696131

زَوْجُ بَرِيرَةَ عَبْدًا أَسْوَدَ يُقَالُ لَهُ: مُغِيثٌ، عَبْدًا لِبَنِي فُلاَن، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ وَرَاءَهَا فِي سِكَكِ الْمَدِينَةِ.[راجع: ٥٢٨٠

١٦- باب شَفَاعَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي زَوْجِ بَرِيرَةَ

٥٢٨٣- حدثني مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ زَوْجَ بَرِيرَةَ كَانَ عَبْدًا يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ خَلْفَهَا يَبْكِي وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلَى لِحْيَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبَّاسٍ: ((يَا عَبَّاسُ أَلاَ تَعْجَبُ مِنْ حُبِّ مُغِيث بَرِيرَةَ، وَمِنْ بُغْضِ بَرِيرَةَ مُغِيثًا)). فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَوْ رَاجَعتِيهِ)) قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، تَأْمُرُنِي. قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا أَشْفَعُ)). قَالَتْ لاَ حَاجَةَ لِي فيه.

[راجع: ٥٢٨٠]

١٧- باب

٥٢٨٤- حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاء أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ أَنَّ عَائِشَةَ أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِي بَرِيرَةَ فَأَبَى مَوَالِيهَا إِلاَّ أَنْ يَشْتَرِطُوا الْوَلاَءَ، فَذَكَرَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ:((اشْتَرِيهَا وَأَعْتِقِيهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). وَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيلَ: إِنَّ هَذَا مَا تُصُدِّقَ عَلَى

शख़्स मुब्तला हो तो उसे मौत की तमन्ना नहीं करनी चाहिये और अगर कोई मौत की तमन्ना करने ही लगे तो ये कहना चाहिये, ऐ अल्लाह! जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर है मुझे ज़िन्दा रख और जब मौत मेरे लिये बेहतर हो तो मुझको उठा ले। (दीगर मक़ामात : 6351, 7233)

أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ مِنْ ضُرٍّ أَصَابَهُ فَإِنْ كَانَ لاَ بُدَّ فَاعِلاً فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي)).[طرفاه في: ٦٣٥١، ٧٢٣٣].

मा'लूम हुआ कि जब तक दुनिया में रहे अपनी बेहतरी और भलाई की दुआ करता रहे और बेहतरीन वफ़ात की दुआ मांगे।

5672. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने और उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) के यहाँ उनकी इयादत को गये उन्होंने अपने पेट में सात दाग़ लगवाए थे फिर उन्होंने कहा कि हमारे साथी जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में वफ़ात पा चुके वो यहाँ से इस हाल में रुख़सत हुए कि दुनिया उनका अज्रो-ष़वाब कुछ न घटा सकी और उनके अमल में कोई कमी नहीं हुई और हमने (माल व दौलत) इतनी पाई कि जिसके खर्च करने के लिये हमने मिट्टी के सिवा और कोई महल नहीं पाया (लगे इमारतें बनवाने) और अगर नबी करीम (ﷺ) ने हमें मौत की दुआ करने से मना न किया होता तो मैं उसकी दुआ करता फिर हम उनकी ख़िदमत में दोबारा हाज़िर हुए तो वो अपनी दीवार बनारहे थे उन्होंने कहा मुसलमान को हर उस चीज़ पर ष़वाब मिलता है जिसे वो ख़र्च करता है मगर इस (कमबख़्त) इमारत में ख़र्च करने का ष़वाब नहीं मिलता। (दीगर मक़ामात : 6349, 6350, 6430, 6431, 7234)

٥٦٧٢- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ دَخَلْنَا عَلَى خَبَّابٍ نَعُودُهُ وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعَ كَيَّاتٍ فَقَالَ: إِنَّ أَصْحَابَنَا الَّذِينَ سَلَفُوا مَضَوْا وَلَمْ تَنْقُصْهُمُ الدُّنْيَا وَإِنَّا أَصَبْنَا مَا لاَ نَجِدُ لَهُ مَوْضِعًا إِلاَّ التُّرَابَ وَلَوْ لاَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوَ بِالْمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِهِ ثُمَّ أَتَيْنَاهُ مَرَّةً أُخْرَى وَهُوَ يَبْنِي حَائِطًا لَهُ فَقَالَ: إِنَّ الْمُسْلِمَ يُؤْجَرُ فِي كُلِّ شَيْءٍ يُنْفِقُهُ إِلاَّ فِي شَيْءٍ يَجْعَلُهُ فِي هَذَا التُّرَابِ

[أطرافه في: ٦٣٤٩، ٦٣٥٠، ٦٤٣٠، ٦٤٣١، ٧٢٣٤].

बेफ़ायदा इमारत बनवाना और उन पर पैसा ख़र्च करना बदतरीन फ़िज़ूलख़र्ची है मगर आज अक्षर इसी में मुब्तला हैं। इससे जहाँ तक हो सके महफ़ूज़ रहने की कोशिश करे यही बेहतर है।

5673. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा हमें अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के गुलाम अबू इबैद ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया किसी शख़्स का अमल उसे जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकेगा। सहाबा किराम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपका भी नहीं? आपने फ़र्माया नहीं, मेरा भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह अपने फ़ज़ल व रहमत से मुझे नवाज़े इसलिये (अमल में)

٥٦٧٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو عُبَيْدٍ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَنْ يُدْخِلَ أَحَدًا عَمَلُهُ الْجَنَّةَ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ

5673. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा हमें अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) के ग़ुलाम अबू उ़बैद ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया किसी शख़्स का अ़मल उसे जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकेगा। सहाबा किराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपका भी नहीं? आपने फ़र्माया नहीं, मेरा भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह अपने फ़ज़ल व रहमत से मुझे नवाज़े इसलिये (अ़मल में)

٥٦٧٣- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو عُبَيْدٍ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَنْ يُدْخِلَ أَحَدًا عَمَلُهُ الْجَنَّةَ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ

म्यानारवी इख़्तियार करो और क़रीब क़रीब चलो और तुममें कोई शख़्स मौत की तमन्ना न करे क्योंकि या वो नेक होगा तो उम्मीद है कि उसके आ़माल में और इज़ाफ़ा हो जाए और अगर वो बुरा है तो मुम्किन है वो तौबा ही कर ले। (राजेअ : 39)

بِفَضْلٍ وَرَحْمَةٍ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَلاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزْدَادَ خَيْرًا وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعْتِبَ)). [راجع: ٣٩]

M-09825696131

بفضل وَرَحْمَةٍ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَلَا يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزْدَادَ خَيْرًا وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعْتِبَ)). [راجع: ٣٩]

म्यानारवी इख़्तियार करो और क़रीब क़रीब चलो और तुममें कोई शख़्स मौत की तमन्ना न करे क्योंकि या वो नेक होगा तो उम्मीद है कि उसके आमाल में और इज़ाफ़ा हो जाए और अगर वो बुरा है तो मुम्किन है वो तौबा ही कर ले। (राजेअ : 39)

٥٦٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ مُسْتَنِدٌ إِلَيَّ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الأَعْلَى)). [راجع: ٤٤٤٠]

5674. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे अ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) मेरा सहारा लिये हुए थे (मर्ज़ुल मौत में) और फ़र्मा रहे थे ऐ अल्लाह तआ़ला! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा मुझ पर रह़म कर और मुझको अच्छे रफ़ीक़ों (फ़रिश्तों और पैग़म्बरों) के साथ मिला दे। (राजेअ : 4440)

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस ह़दीष़ को बाब के आख़िर में इसलिये लाए कि मौत की आरज़ू करना उस वक़्त तक नहीं है जब तक मौत की निशानियाँ न पैदा हुई हों लेकिन जब मौत बिलकुल सर पर आन खड़ी हो उस वक़्त दुआ़ करना मना नहीं है।

٢٠- باب دُعَاءِ الْعَائِدِ لِلْمَرِيضِ

बाब 20 : जो शख़्स बीमार की एयादत को जाए वो क्या दुआ़ करे और

وَقَالَتْ عَائِشَةُ بِنْتُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهَا: ((اللَّهُمَّ اشْفِ سَعْدًا)). قاله النبي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

आ़इशा ने जो सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) की बेटी थी अपने वालिद से रिवायत की कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये यूँ दुआ़ की कि या अल्लाह! सअ़द को तंदरुस्त कर दे।

٥٦٧٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، كَانَ إِذَا أَتَى مَرِيضًا أَوْ أُتِيَ بِهِ إِلَيْهِ قَالَ: ((أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اشْفِ وَأَنْتَ الشَّافِي لاَ شِفَاءَ إِلاَّ شِفَاؤُكَ شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا)). وَقَالَ عَمْرُو بْنُ أَبِي قَيْسٍ وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ وَأَبِي الضُّحَى إِذَا أُتِيَ بِالْمَرِيضِ.

5675. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी मरीज़ के पास तशरीफ़ ले जाते या कोई मरीज़ आपके पास लाया जाता तो आप ये दुआ़ फ़र्माते, ऐ परवरदिगार लोगों के! बीमारी दूर कर दे, ऐ इंसानों के पालने वाले! शिफ़ा अ़ता फ़र्मा, तू ही शिफ़ा देने वाला है। तेरी शिफ़ा के सिवा और कोई शिफ़ा नहीं, ऐसी शिफ़ा दे जिसमें मर्ज़ बिलकुल बाक़ी न रहे। और अ़म्र बिन अबी क़ैस और इब्राहीम बिन त़हमान ने मंसूर से बयान किया, उन्होंने इब्राहीम और अबुज़्ज़ुहा से कि, जब कोई मरीज़ आँह़ज़रत (ﷺ) के पास लाया जाता। (दीगर मक़ामात : 5743, 5744,

तरफ़ देखा और फ़र्माया कि जो अल्लाह की मख़्लूक़ पर रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता।

رَسُولَ اللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ : ((مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ)).

मज़ीद तशरीह नीचे वाली हदीष़ में आ रही है।

5998. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा आप लोग बच्चों को बोसा देते हैं, हम तो उन्हें बोसा नहीं देते। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहम निकाल दिया है तो मैं क्या कर सकता हूँ?

٥٩٩٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ فَقَالَ: تُقَبِّلُونَ الصِّبْيَانَ فَمَا نُقَبِّلُهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوْ أَمْلِكُ لَكَ إِنْ نَزَعَ اللهُ مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ)).

5999. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए क़ैदियों में एक औ़रत थी जिसका पिस्तान दूध से भरा हुआ था और वो दौड़ रही थी, इतने में एक बच्चा उसको क़ैदियों में मिला उसने झट अपने पेट से लगा लिया और उसको दूध पिलाने लगी। हमसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम ख़याल कर सकते हो कि ये औ़रत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है हमने अ़र्ज़ किया कि नहीं जब तक इसको क़ुदरत होगी ये अपने बच्चे को आग में नहीं फेंक सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि अल्लाह अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा रहम करने वाला है। जितना ये औ़रत अपने बच्चे पर मेहरबान हो सकती है।

٥٩٩٩ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ سَبْيٌ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ تَحْلُبُ ثَدْيَهَا تَسْقِي إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ ((أَتُرَوْنَ هَذِهِ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟)) قُلْنَا لَا وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لَا تَطْرَحَهُ فَقَالَ: ((اللهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هَذِهِ بِوَلَدِهَا)).

तश्रीह : ग़ालिबन ये उस औ़रत का गुमशुदा बच्चा था जो उसे मिल गया और उसको उसने इस मुहब्बत के साथ अपने पेट से चिमटा लिया।

बाब 19 : अल्लाह तआला ने अपनी रहमत के सौ हिस्से बनाए हैं

١٩ - باب جَعَلَ اللهُ الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ

6000. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा हमको सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने रहमत के सौ हिस़्से बनाए और अपने

٦٠٠٠ - حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيِّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((جَعَلَ اللهُ

ابنِ شهابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: دَخَلَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكُمْ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَفَهِمْتُهَا فَقُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ، قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)). فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ)).

[راجع: ٢٩٣٥]

स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा ह़ज़रत आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा अस्सामु अ़लैकुम (तुम्हें मौत आए) मैं उसका माना समझ गई और मैंने उनका जवाब दिया कि व अलैकुमुस्सामु वल्लअ़नतु (या'नी तुम्हें मौत आए और ला'नत हो) बयान किया कि उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ठहरो, ऐ आइशा! अल्लाह तआला तमाम मामलात में नर्मी और मुलाइमत को पसंद करता है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने सुना नहीं उन्होंने क्या कहा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसका जवाब दे दिया था कि व अ़लैकुम (और तुम्हें भी) (राजेअ : 2935)

٦٠٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَامُوا إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُزْرِمُوهُ)) ثُمَّ دَعَا بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَصُبَّ عَلَيْهِ.

6025. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे स़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया था। स़ह़ाबा किराम उनकी त़रफ़ दौड़े लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उसके पेशाब को मत रोको। फिर आपने पानी का डोल मंगवाया और वो पेशाब की जगह पर बहा दिया गया।

तश्रीह : अख़्लाक़े मुह़म्मदी का एक नमूना इस ह़दीष़ से ही ज़ाहिर है कि देहाती ने मस्जिद के कोने में पेशाब कर दिया मगर आपने उसे रोकने के बजाय उस पर पानी डलवा दिया बाद में बड़ी नर्मी से उसे समझा दिया। (ﷺ)

٣٦- باب تَعَاوُنِ الْمُؤْمِنِينَ بَعْضِهِمْ بَعْضًا

बाब 36 : एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की मदद करना

٦٠٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، بُرَيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. [راجع: ٤٨١]

6026. हमसे मुह़म्मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा बुरैद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि मुझे मेरे दादा अबू बुर्दा ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इस त़रह़ है जैसे इमारत कि उसका एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को थामे रहता है (गिरने नहीं देता) फिर आपने अपनी उँगलियों को क़ैंची की त़रह़ कर लिया। (राजेअ : 481)

सलमा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 6103)

أَبَا سَلَمَةَ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ
[راجع: ٦١٠٣]

तश्रीह : जिसको काफ़िर कहा वो वाक़ई में काफ़िर है तब तो वो काफ़िर है और जब वो काफ़िर नहीं तो कहने वाला काफ़िर हो गया। इसीलिये अहले ह़दीष़ ने तक्फ़ीर में बड़ी एह़तियात़ बरती है, वो कहते हैं कि हम किसी अहले क़िब्ला को काफ़िर नहीं कहते लेकिन बाद वाले फ़ुक़हा अपनी किताबों में अदना अदना बातों पर अपने मुख़ालिफ़ीन की तक्फ़ीर करते हैं, स़ाहिबे दुर्रे-मुख़्तार ने बड़ी जुर्अत (बहादुरी) से ये फ़त्वा दर्ज कर दिया, **फलअ़नतु रबिना इअ़दादु रम्लिन अ़ला मन रद्द क़ौल अबी ह़नीफ़त** या'नी जो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा के किसी क़ौल को रद्द कर दे उस पर इतनी ला'नत हो जितने दुनिया में ज़र्रात हैं। कहिये इस उसूल के मुवाफ़िक़ तो सारे अइम्मा-ए-दीन मल्ऊ़न ठहरे जिन्होंने बहुत से मसाइल में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के क़ौल को रद्द किया है। ख़ुद ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़ .) के शागिर्दों ने कितने ही मसाइल में ह़ज़रत इमाम से इख़्तिलाफ़ किया है तो क्या स़ाहिबे दुर्रे-मुख़्तार के नज़दीक वो भी सब मल्ऊ़न और मत्रूद थे। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) को ऐसे लोगो ने पैग़म्बर समझ लिया है या आयत **इत्तख़ज़ू अह़बारहुम व रुहबानहुम** के तह़त उनको अल्लाह बना लिया है, ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) एक आ़लिमे दीन थे, उनसे कितने ही मसाइल में ख़त़ा हुई वो मा'सूम नहीं थे। इस ह़दीष़ से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो बिला तह़क़ीक़ मह़ज़ गुमान की बिना पर मुसलमानों को मुश्रिक या काफ़िर कह देते हैं। (वह़ीदी)

6104. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह .) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख़्स ने भी अपने किसी भाई को कहा कि ऐ काफ़िर! तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो गया।

٦١٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ قَالَ لأَخِيهِ: يَا كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا)).

6105. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे ष़ाबित बिन ज़ह्ह़ाक (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस्लाम के सिवा किसी और मज़हब की झूठ मूट क़सम खाई तो वो वैसा ही हो जाता है, जिसकी उसने क़सम खाई है और जिसने किसी चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली तो उसे जहन्नम में उसी से अ़ज़ाब दिया जाएगा और मोमिन पर ला'नत भेजना उसे क़त्ल करने के बराबर है और जिसने किसी मोमिन पर कुफ़्र की तोह्मत लगाई तो ये उसके क़त्ल के बराबर है। (राजेअ़ : 1363)

٦١٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ بِمِلَّةٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ: وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عُذِّبَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ، وَلَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ، وَمَنْ رَمَى مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٦٣]

किसी मज़हब पर क़सम खाना मष़लन यूँ कहा कि अगर मैं ने ये काम किया तो मैं यहूदी या नसरानी वग़ैर[illegible] ये बहुत बुरी क़सम है अआ़ज़नल्लाहु मिन्हू

बाब 74 : अगर किसी ने कोई वजह मा'कूल रखकर किसी को काफ़िर कहा या नादानिस्ता तो वो काफ़िर होगा और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने

لَمْ يَرَ إِكْفَارَ مَنْ قَالَ لاَ وَقَالَ عُمَرُ لِحَاطِبِ

बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुमैदी बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से जिसने लात व उ़ज़्ज़ा की (या दूसरे बुतों की क़सम) खाई तो उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना चाहिये और जिसने अपने साथी से कहा कि आओ जुआ खेलें तो उसे बतौरे कफ़्फ़ारा सदक़ा देना चाहिये। (राजेअ़ : 4860)

الزُّهْرِيُّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ مِنْكُمْ فَقَالَ فِي حَلَفِهِ: بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ)). [راجع: ٤٨٦٠]

तश्रीह : लात व उ़ज़्ज़ा बुतों की क़सम वही लोग खा सकते हैं जो उनको मा'बूद जानते होंगे, लिहाज़ा अगर कोई मुसलमान ऐसी क़सम खा बैठे तो लाज़िम है कि वो दोबारा कलिमा तय्यिबा पढ़कर ईमान की तज्दीद करे। ग़ैरुल्लाह में सब दाख़िल हैं बुत हों या अवतार या पैग़म्बर या शहीद या वली या फ़रिश्ते किसी भी बुत या हजर वग़ैरह की क़सम खाने वाला दोबारा कलिमा तय्यिबा पढ़कर तज्दीदे ईमान के लिये मामूर है।

6108. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि वो हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास पहुँचे जो चंद सवारों के साथ थे, उस वक़्त हज़रत उ़मर (रज़ि.) अपने वालिद की क़सम खा रहे थे। उस पर रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें पुकारकर कहा, आगाह हो, यक़ीनन अल्लाह पाक तुम्हें मना करता है कि तुम अपने बाप दादों की क़सम खाओ, पस अगर किसी को क़सम ही खानी है तो वो अल्लाह की क़सम खाए, वरना चुप रहे। (राजेअ़ : 2679)

٦١٠٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَدْرَكَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فِي رَكْبٍ وَهُوَ يَحْلِفُ بِأَبِيهِ فَنَادَاهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ إِنَّ اللهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، فَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ وَإِلاَّ فَلْيَصْمُتْ)). [راجع: ٢٦٧٩]

दूसरी ह़दीष़ में आया है कि ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना मना है अगर किसी की ज़ुबान से ग़ैरुल्लाह की क़सम निकल गई तो उसे कलिमा तौहीद पढ़कर फिर ईमान की तज्दीद करना चाहिये अगर कोई इरादतन किसी पीर या बुत की अ़ज़्मत मिष़्ले अ़ज़्मते इलाही के जानकर उनके नाम की क़सम खाएगा तो वो यक़ीनन मुश्रिक हो जाएगा एक ह़दीष़ में जो अफ़्लह व अबीहि इन सदक़ के लफ़्ज़ आए हैं । ये ह़दीष़ पहले की है। लिहाज़ा यहाँ क़सम का जवाज़ मन्सूख़ है।

बाब 75 : ख़िलाफ़े शरअ़ काम पर ग़ुस्सा और सख़्ती करना, और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया सूरह बरात में, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद कर और उन पर सख्ती कर

٧٥- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الْغَضَبِ وَالشِّدَّةِ لأَمْرِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ﴾.

6109. हमसे बुसरा बिन स़फ़्वान ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे ज़ु ह्री ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और घर में एक पर्दा लटका हुआ था जिस पर तस्वीरें थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया, फिर

٦١٠٩- حَدَّثَنَا يَسَرَةُ بْنُ صَفْوَانَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى النَّبِيُّ ﷺ وَفِي الْبَيْتِ قِرَامٌ فِيهِ صُوَرٌ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ تَنَاوَلَ السِّتْرَ فَهَتَكَهُ وَقَالَتْ:

लग सकता।

وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ)).

एक ही बार धोखा खाता है फिर होशियार रहता है। सच कहा गया है कि,

आदमी बनता है लाखों ठोकरें खाने के बाद, रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद

बाब 84 : मेहमान के हक़ के बयान में

٨٤- باب حَقِّ الضَّيْفِ

6134. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ बिन उबादा ने, कहा हमसे हुसैन ने, उनसे यह्या बिन अबीबक्र ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, क्या ये मेरी ख़बर स़हीह़ है कि तुम रात भर इबादत करते रहते हो और दिन में रोज़े रखते हो? मैंने कहा कि जी हाँ ये स़हीह़ है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, इबादत भी कर और सो भी, रोज़े भी रख और बिला रोज़े भी रह, क्योंकि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर हक़ है, तुमसे मुलाक़ात के लिये आने वालों का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है, उम्मीद है कि तुम्हारी उ़म्र लम्बी हो क्योकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है, इस तरह ज़िंदगी भर का रोज़ा होगा। उन्होंने बयान किया कि मैंने सख़्ती चाही तो आपने मेरे ऊपर सख़्ती कर दी, मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे ज़्यादा की त़ाक़त रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हर हफ़्ते तीन रोज़ा रखा कर, बयान किया कि मैंने और सख़्ती चाही और आपने मेरे ऊपर और सख़्ती कर दी। मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे भी ज़्यादा की त़ाक़त रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के नबी दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) जैसा रोज़ा रख। मैंने पूछा, अल्लाह के नबी दाऊद (अ़लैहि.) का रोज़ा कैसा था? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्तार गोया आधी उ़म्र के रोज़े। (राजेअ़ : 1131)

٦١٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ))، قُلْتُ: بَلَى قَالَ: ((فَلاَ تَفْعَلْ قُمْ وَنَمْ، وَصُمْ وَأَفْطِرْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّكَ عَسَى أَنْ يَطُولَ بِكَ عُمُرٌ، وَإِنَّ مِنْ حَسْبِكَ أَنْ تَصُومَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَمْثَالِهَا فَذَلِكَ الدَّهْرُ كُلُّهُ))، قَالَ فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : فَإِنِّي أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ مِنْ كُلِّ جُمُعَةٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ)) قَالَ: فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ صَوْمَ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ)) قُلْتُ: وَمَا صَوْمُ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ؟ قَالَ : ((نِصْفُ الدَّهْرِ)).

[راجع: ١١٣١]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शादे गिरामी का हासिल ये है कि अल्लाह पाक ने इंसान को मिल्की और बहीमी दोनों त़ाक़तें देकर मअ़जूने मुरक्कब पैदा फ़र्माया है। अगर एक कुव्वत को बिलकुल तबाह करके इंसान फ़रिश्ता बन जाए तो गोया वो अपनी फ़ित़रत बिगाड़ता है। मंशा-ए-कुदरत ये है कि आदमी को आदमी ही रहना चाहिये, इबादते इलाही

वजह से कि उनके मुबारक हाथ को सदमा पहुँचता है तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक ख़ादिम मांगने के लिये हाज़िर हुईं। आँहज़रत (ﷺ) घर में मौजूद नहीं थे। इसलिये उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से ज़िक्र किया। जब आप तशरीफ़ लाए तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आपसे इसका ज़िक्र किया। हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए हम उस वक़्त तक अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे, मैं खड़ा होने लगा तो आपने फ़रमाया कि क्या मैं तुम दोनों को वो चीज़ें न बता दूँ जो तुम्हारे लिये ख़ादिम से भी बेहतर हो। जब तुम अपने बिस्तर पर जाने लगो तो तैंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर तैंतीस मर्तबा सुब्हानल्लाह और तैंतीस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह कहो, ये तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है और शुअबा से रिवायत है उनसे ख़ालिद ने, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया कि सुब्हानल्लाह चौंतीस मर्तबा कहो।

(राजेअ : 3113)

شَكَتْ مَا تَلْقَى فِي يَدِهَا مِنَ الرُّحَى فَأَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تَجِدْهُ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ قَالَ: فَجَاءَنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْتُ أَقُومُ فَقَالَ: ((مَكَانَكِ)) فَجَلَسَ بَيْنَنَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، فَقَالَ: ((أَلاَ أَدُلُّكُمَا عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ؟ إِذَا أَوَيْتُمَا إِلَى فِرَاشِكُمَا أَوْ أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَسَبِّحَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَاحْمَدَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، فَهَذَا خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ))، وَعَنْ شُعْبَةَ عَنْ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ: التَّسْبِيحُ أَرْبَعٌ ثَلاَثُونَ. [راجع: ٣١١٣]

तश्रीह : मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी शहज़ादी साहिबा से पूछा मैंने सुना है कि तुम मुझसे मिलने को आई थी लेकिन मैं नहीं था कहो क्या काम है? उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत अब्बाजान मैंने सुना है कि आपके पास लौण्डी और गुलाम आए हैं। एक गुलाम या लौण्डी हमको भी दे दीजिए क्योंकि आटा पीसने या पानी लाने में मुझको सख़्त मशक़्क़त हो रही है, उस वक़्त आपने ये वज़ीफ़ा बतलाया। दूसरी रिवायत में यूँ है कि आपने फ़र्माया सुफ़्फ़ा वाले लोग भूखे हैं, उन गुलामों को बेचकर उनके खिलाने का इंतिज़ाम करूँगा।

बाब 12 : सोते वक़्त शैतान से पनाह मांगना और तिलावते क़ुर्आन करना

١٢ - باب التَّعَوُّذِ وَالْقِرَاءَةِ عِنْدَ الْمَنَامِ

6319. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उर्वा ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) लेटते तो अपने हाथों पर फूँकते और मुअव्विज़ात पढ़ते और दोनों हाथ अपने जिस्म पर फेरते। (राजेअ : 5017)

٦٣١٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ نَفَثَ فِي يَدَيْهِ وَقَرَأَ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ بِهِمَا جَسَدَهُ.

[راجع: ٥٠١٧]

6320. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे

٦٣٢٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا

नेक अ़मल कभी करना, कभी छोड़ देना महमूद नहीं जो भी हो उस पर हमेशगी होना महमूद है।

6463. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे किसी शख़्स को उसका अ़मल नजात नहीं दिला सकेगा। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया और आपको भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया और मुझे भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी रह़मत के साये में ले ले। पस तुमको चाहिये कि दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और मियाना रवी इख़्तियार करो। सुबह़ और शाम, इसी त़रह़ रात को ज़रा सा चल लिया करो और ए'तिदाल के साथ चला करो मंज़िले मक़्सूद को पहुँच जाओगे। (राजेअ़ : 39)

٦٤٦٣- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَنْ يُنَجِّيَ أَحَدًا مِنكُمْ عَمَلُهُ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِرَحْمَةٍ، سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاغْدُوا وَرُوحُوا، وَشَيْءٌ مِنَ الدُّلْجَةِ وَالْقَصْدَ الْقَصْدَ تَبْلُغُوا)).

[راجع: ٣٩]

मक़्सूद ये है कि आदमी सुबह़ व शाम को इसी त़रह़ रात को थोड़ी सी इ़बादत कर लिया करे और हमेशा करता रहे। ये तीन वक़्त निहायत मुतबर्रक हैं। आयत **अक़िमिस़्स़लात लिदुलूकिश्शम्सि** से ज़ुहर और **हाफ़िज़ू अलस़्स़लवाति वस़्स़लातिल्वुस्ता** (अल बक़र : 238) से अ़स्र इस त़रह़ से कुर्आनि करीम से पंजवक़्त इ़बादत का तक़ाज़ा है।

6464. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दरम्यानी चाल इख़्तियार करो और बुलंद परवाज़ी न करो और अ़मल करते रहो, तुममें से किसी का अ़मल उसे जन्नत में नहीं दाख़िल कर सकेगा, मेरे नज़दीक सबसे पसंदीदा अ़मल वो है जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह कम ही क्यूँ न हो। (दीगर : 6467)

٦٤٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاعْلَمُوا أَنْ لَنْ يُدْخِلَ أَحَدَكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ، وَأَنَّ أَحَبَّ الأَعْمَالِ أَدْوَمُهَا إِلَى اللهِ وَإِنْ قَلَّ)). [طرفه في : ٦٤٦٧].

फ़राइज़े इलाही में कमी बेशी का सवाल ही नहीं है। ये तमाम नफ़्ली इ़बादतों का ज़िक्र है।

6465. मुझसे मुहम्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कौनसा अ़मल अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा पसंद है? फ़र्माया कि जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह वो थोड़ा ही हो और फ़र्माया नेक काम करने में उतनी ही तकलीफ़ उठाओ जितनी त़ाक़त है (जो हमेशा निभ सके)।

٦٤٦٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ: أَيُّ الأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: ((أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ. وَقَالَ اكْلَفُوا مِنَ الأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ)).

6466. मुझसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अ़ल्क़मा ने बयान किया कि मैंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा उम्मुल मोमिनीन! नबी करीम (ﷺ) क्यूँकर इ़बादत किया करते थे क्या आपने कुछ ख़ास़ दिन ख़ास़ कर रखे थे? बतलाया कि नहीं, आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़मल में हमेशगी होती थी और तुममें कौन है जो उन अ़मलों की त़ाक़त रखता हो जिनकी आँह़ज़रत (ﷺ) त़ाक़त रखते थे। (राजेअ़ : 1987)

٦٤٦٦- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ قُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ كَيْفَ كَانَ عَمَلُ النَّبِيِّ ﷺ، هَلْ كَانَ يَخُصُّ شَيْئًا مِنَ الأَيَّامِ؟ قَالَتْ: لاَ، كَانَ عَمَلُهُ دِيمَةً وَأَيُّكُمْ يَسْتَطِيعُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَطِيعُ.
[راجع: ١٩٨٧]

सारी रात इ़बादत में गुज़ार देता यहाँ तक कि पैरों में वरम हो जाना सिवाय ज़ाते कुदसी स़िफ़ात फ़िदाहू रूह़ी के और किसमें ऐसी त़ाक़त हो सकती है।

6467. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ज़िब्रिक़ान ने, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया देखो जो नेक काम करो ठीक त़ौर से करो और ह़द से न बढ़ जाओ बल्कि उसके क़रीब रहो (म्यानारवी इख़्तियार करो) और ख़ुश रहो और याद रखो कि कोई भी अपने अ़मल की वजह से जन्नत में नहीं जाएगा। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया, और मैं भी नहीं सिवा उसके कि अल्लाह की मग़्फ़िरत व रह़मत के साये में मुझे ढाँक ले। मदीनी ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि मूसा बिन उ़क़्बा ने ये ह़दीष़ अबू सलमा से अबुन् नस़्र के वास्त़े से सुनी है। अबू सलमा ने आ़इशा (रज़ि.) से। और अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सलमा (रज़ि.) से सुना और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और ख़ुश रहो। और मुजाहिद ने बयान किया कि सदादन सदीदा दोनों के मा'नी स़दक़ के हैं। (राजेअ़ : 6464)

٦٤٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الزِّبْرِقَانِ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا، فَإِنَّهُ لاَ يَدْخِلُ أَحَدًا الْجَنَّةَ عَمَلُهُ))، قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا، إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِمَغْفِرَةٍ وَرَحْمَةٍ)). قَالَ: أَظُنُّهُ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ. وَقَالَ عَفَّانُ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((سَدِّدُوا وَأَبْشِرُوا)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: سَدَادًا سَدِيدًا: صِدْقًا.
[راجع: ٦٤٦٤]

तश्रीह़ : या'नी सच्चाई को हर ह़ाल में इख़्तियार करो तुम आमाले ख़ैर करोगे तुमको जन्नत की बल्कि दुनिया में भी कामयाबी की बशारत है। क़ुर्आन की आयत, **क़ूलू क़ौलन सदीदा** (अल अह़ज़ाब : 70) की त़रफ़ इशारा है। अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के उस्ताद हैं इस सनद को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अ़ली बिन

ह़िसाब दाख़िल होंगे

بغَيْرِ حِسَابٍ

6541. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुज़ैल ने, कहा हमसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे उसैद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया कि मैं सईद बिन जुबैर की ख़िदमत में मौजूद था उस वक़्त उन्होंने बयान किया कि मुझसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे सामने उम्मतें पेश की गईं किसी नबी के साथ पूरी उम्मत गुज़री, किसी नबी के साथ चंद आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ दस आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ पाँच आदमी गुज़रे और कोई नबी तन्हा गुज़रा। फिर मैंने देखा तो इंसानों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त दूर से नज़र आई। मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा क्या ये मेरी उम्मत है? उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि उफ़ुक़ की त़रफ़ देखो। मैंने देखा तो एक बहुत ज़बरदस्त जमाअ़त दिखाई दी। फ़र्माया कि ये है आपकी उम्मत और ये जो आगे आगे सत्तर हज़ार की ता'दाद है उन लोगों से ह़िसाब न लिया जाएगा और न उन पर अ़ज़ाब होगा। मैंने पूछा, ऐसा क्यूँ होगा? उन्होंने कहा कि इसकी वजह ये है कि ये लोग दाग़ नहीं लगवाते थे, दम झाड़ नहीं करवाते थे शगुन नहीं लेते थे, अपने रब पर भरोसा करते थे। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रफ़ उ़क्काशा बिन मिह़सन (रज़ि.) उठकर बढ़े और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर दुआ करें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन लोगों में कर दे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इन्हें भी उनमें से कर दे। उसके बाद एक और स़ह़ाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे लिये भी दुआ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उनमें से कर दे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उ़क्काशा इसमें तुमसे आगे बढ़ गये। (राजेअ़ : 3410)

٦٥٤١- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَسِيدُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ حُصَيْنٍ، قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، فَقَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ، فَأَخَذَ النَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الأُمَّةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ النَّفَرُ، وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمُرُّ مَعَهُ الْعَشَرَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الْخَمْسَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ وَحْدَهُ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ قُلْتُ: يَا جِبْرِيلُ هَؤُلاَءِ أُمَّتِي؟ قَالَ: لاَ، وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الأُفُقِ فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ، قَالَ : هَؤُلاَءِ أُمَّتُكَ، وَهَؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا قُدَّامَهُمْ لاَ حِسَابَ عَلَيْهِمْ، وَلاَ عَذَابَ، قُلْتُ : وَلِمَ؟ قَالَ : كَانُوا لاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَلاَ يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ))، فَقَامَ إِلَيْهِ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ. ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ)) ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ قَالَ : ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ : ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

तशरीह़ : ये उ़क्काशा बिन मिह़सन असदी बनी उमय्या के ह़लीफ़ हैं। जंगे बद्र में इनकी तलवार टूट गई थी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने इनको एक छड़ी दे दी जो उनके हाथ में तलवार हो गई। बाद की लड़ाइयों में भी शरीक रहे। फ़ाज़िल स़ह़ाबा मे से थे जो ख़िलाफ़ते स़िद्दीक़ी में बउ़म्र 45 साल फ़ौत हुए। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और उनकी बहन उम्मे क़ैस (रज़ि.) इनसे रिवायत करती हैं। सनद में ह़ज़रत सईद बिन जुबैर का नाम आया है जिन्हें

قال: ((وَيْحَكُمْ -أَوْ وَيْلَكُمْ- لاَ تَرْجِعُنَّ بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

बन जाना कि एक-दूसरे की गर्दन मारने लगो।

(राजेअ़ : 1742)

इस ह़दीष़ से ज़ाहिर है कि मुसलमान का अल्लाह के नज़दीक कितना बड़ा मुक़ाम है। जिसका लिहाज़ रखना हर मुसलमान का अहम फ़रीज़ा है।

١١- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ وَالاِنْتِقَامِ لِحُرُمَاتِ الله

बाब 11 : हुदूद क़ायम करना और अल्लाह की हुर्मतों को जो कोई तोड़े उससे बदला लेना

٦٧٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ اخْتَارَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمٌ، فَإِذَا كَانَ الإِثْمُ كَانَ أَبْعَدَهُمَا مِنْهُ، وَالله مَا انْتَقَمَ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ يُؤْتَى إِلَيْهِ قَطُّ، حَتَّى تُنْتَهَكَ حُرُمَاتُ الله فَيَنْتَقِمُ لله. [راجع: ٣٥٦٠]

6786. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को जब भी दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया तो आपने उनमे से आसान ही को पसंद किया, बशर्तेकि उसमें गुनाह का कोई पहलू न हो, अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर होते। अल्लाह की क़सम! आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी अपने ज़ाती मामले में किसी से बदला नहीं लिया अल्बत्ता जब अल्लाह की हुर्मतों को तोड़ा जाता तो आप अल्लाह के लिये बदला लेते थे। (राजेअ़ : 3560)

١٢- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ عَلَى الشَّرِيفِ وَالْوَضِيعِ

बाब 12 : कोई बुलंद मर्तबा शख़्स हो या कम मर्तबा सब पर बराबर ह़द क़ायम करना

ये नहीं कि अशराफ़ (ऊँचे दर्जे के लोगों) को छोड़ दिया जाए।

٦٧٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أُسَامَةَ كَلَّمَ النَّبِيَّ ﷺ فِي امْرَأَةٍ فَقَالَ: ((إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا يُقِيمُونَ الْحَدَّ عَلَى الْوَضِيعِ، وَيَتْرُكُونَ الشَّرِيفَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ فَاطِمَةُ فَعَلَتْ ذَلِكَ، لَقَطَعْتُ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

6787. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उसामा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक औ़रत की (जिस पर ह़द का मुक़द्दमा होने वाला था) सिफ़ारिश की तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमसे पहले के लोग इसलिये हलाक हो गये कि वो कमज़ोरों पर तो ह़द क़ायम करते और बुलंद मर्तबा लोगों को छोड़ देते थे। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर (मेरी बेटी) फ़ातिमा (रज़ि.) ने भी (चोरी) की होती तो मैं उसका भी हाथ काट लेता। (राजेअ़ : 2648)

इस्लामी हुदूद का अज्र बहरहाल हमेशा के लिये है बशर्ते कि इस्लामी स्टेट में इस्लामी अ़दालत में हो।

बाब 13 : जब हद्दी मुक़द्दमा हाकिम के पास पहुँच जाए फिर सिफ़ारिश करना मना है

١٣- باب كَرَاهِيَةِ الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ إِذَا رُفِعَ إِلَى السُّلْطَانِ

बल्कि गुनाहे अ़ज़ीम है।

6788. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मख़्ज़ूमी औ़रत का मामला जिसने चोरी की थी, क़ुरैश के लोगों के लिये अहमियत इख़्तियार कर गया और उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से इस मामले में कौन बात कर सकता है उसामा (रज़ि.) के सिवा, जो आँहज़रत (ﷺ) को बहुत प्यारे हैं और कोई आपसे सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकता? चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से बात की तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम अल्लाह की हदों में सिफ़ारिश करने आए हो। फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया ऐ लोगों! तुमसे पहले के लोग इसलिये गुमराह हो गये कि जब उनमें कोई बड़ा आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते लेकिन अगर कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते थे और अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) ने भी चोरी की होती तो मुहम्मद (ﷺ) उसका हाथ ज़रूर काट डालते। (राजेअ : 2648)

٦٧٨٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّتْهُمُ الْمَرْأَةُ الْمَخْزُومِيَّةُ الَّتِي سَرَقَتْ فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَخَطَبَ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا ضَلَّ مَنْ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ الضَّعِيفُ فِيهِمْ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَايْمُ اللهِ لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعَ مُحَمَّدٌ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

इस सिफ़ारिश पर आपने हज़रत उसामा को तम्बीह फ़र्माई।

बाब 14 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह माइदह में फ़र्माया और चोर मर्द और चोर औ़रत का हाथ काटो

١٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا﴾

(कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए हज़रत अ़ली रज़ि. ने पहुँचे से हाथ कटवाया था। और क़तादा ने कहा अगर किसी औ़रत ने चोरी की और ग़लती से उसका बायाँ हाथ काट डाला गया तो बस अब दाहिना हाथ न काटा जाएगा।)

وَفِي كَمْ يُقْطَعُ؟ وَقَطَعَ عَلِيٌّ مِنَ الْكَفِّ وَقَالَ قَتَادَةُ: فِي امْرَأَةٍ سَرَقَتْ فَقُطِعَتْ شِمَالُهَا لَيْسَ إِلاَّ ذَلِكَ.

इस बाब में ये बयान है कि कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए। बयान की गई अहादीष़ से मा'लूम होता कि कम अज़्कम तीन दिरहम की मालियत पर हाथ काटा जाएगा।

6789. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा

٦٧٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

ख़िलाफ़त मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्द कर दी, इस शर्त पर कि वो अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अमल करते रहें। लोग हज़रत हसन (रज़ि.) को कहने लगे **या आरिल मुस्लिमीन** या'नी मुसलमानों के नंग। आपने जवाब दिया **अल आर ख़ैरुम् मिनन्नार।** जो सुलहनामा क़रार पाया था उसमें ये भी शर्त थी कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बाद फिर ख़िलाफ़त हज़रत हसन को मिलेगी। मुहम्मद बिन क़ुदामा ने ब सनद सहीह और इब्ने अबी ख़ुषैमा ने ऐसा ही रिवायत किया है कि हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से इसी शर्त पर बेअत की थी।

7110. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा कि अम्र ने बयान किया, उन्हें मुहम्मद बिन अली ने ख़बर दी, उन्हें उसामा (रज़ि.) के ग़ुलाम हरमला ने ख़बर दी। अम्र ने बयान किया कि मैंने हरमला को देखा था। हरमला ने बयान किया कि मुझे उसामा ने अली (रज़ि.) के पास भेजा और मुझसे कहा, उस वक़्त तुमसे अली (रज़ि.) पूछेंगे कि तुम्हारे साथी (उसामा रज़ि.) जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन से क्यूँ पीछे रह गये थे तो उनसे कहना कि उन्होंने आपसे कहा है कि अगर आप शेर के मुँह में हों तब भी मैं उसमें भी आपके साथ रहू लेकिन ये मामला ही ऐसा है या'नी मुसलमानों की आपस की जंग तो (उसमें शिर्कत सहीह) नहीं मा'लूम हुई (हरमला कहते हैं कि) चुनाँचे उन्होंने कोई चीज़ नहीं दी। फिर मैं, हसन, हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) के पास गया तो उन्होंने मेरी सवारी पर इतना माल लदवा दिया जितना कि ऊँट उठा न सकता था।

٧١١٠- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ الله، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ ان حَرْمَلَةَ مَوْلَى أُسَامَةَ أَخْبَرَهُ قَالَ عَمْرٌو: وَقَدْ رَأَيْتُ حَرْمَلَةَ قَالَ: أَرْسَلَنِي أُسَامَةُ إِلَى عَلِيٍّ وَقَالَ: إِنَّهُ سَيَسْأَلُكَ الآنَ فَيَقُولُ :مَا خَلَّفَ صَاحِبَكَ؟ فَقُلْ لَهُ : يَقُولُ لَكَ لَوْ كُنْتَ فِي شِدْقِ الأَسَدِ لأَحْبَبْتُ أَنْ أَكُونَ مَعَكَ فِيهِ، وَلَكِنْ هَذَا أَمْرٌ لَمْ أَرَهُ فَلَمْ يُعْطِنِي شَيْئًا فَذَهَبْتُ إِلَى حَسَنٍ وَحُسَيْنٍ وَابْنِ جَعْفَرٍ فَأَوْقَرُوا لِي رَاحِلَتِي.

तश्रीह : हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) हज़रत उम्मे ऐमन के बतन से पैदा हुए जो आप (ﷺ) के वालिद जनाब अब्दुल्लाह की आज़ादकर्दा लौण्डी थी जिसने आँहज़रत (ﷺ) की परवरिश की थी। हज़रत उसामा आँहज़रत (ﷺ) के महबूबतरीन ख़ादिम थे। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उम्र बीस साल की थी। वादियुल क़ुरा में सन 54 हिजरी में शहीद हुए, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू।

बाब 21 : कोई शख़्स लोगों के सामने एक बात कहे फिर उसके पास से निकलकर दूसरी बात कहने लगे तो ये दग़ाबाज़ी है।

٢١- باب إِذَا قَالَ عِنْدَ قَوْمٍ شَيْئًا ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ بِخِلاَفِهِ

7111. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि जब अहले मदीना ने यज़ीद बिन मुआविया की बेअत से इंकार किया तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने ख़ादिमों और लड़कों को जमा किया और कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि हर बहाना करने वाले के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा खड़ा किया जाएगा

٧١١١- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَمَّا خَلَعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَزِيدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ جَمَعَ ابْنُ عُمَرَ حَشَمَهُ وَوَلَدَهُ فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ،

बाब 21 : कोई शख़्स लोगों के सामने एक बात कहे फिर उसके पास से निकलकर दूसरी बात कहने लगे तो ये दग़ाबाज़ी है।

٢١- باب إِذَا قَالَ عِنْدَ قَوْمٍ شَيْئًا ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ بِخِلاَفِهِ

7111. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि जब अहले मदीना ने यज़ीद बिन मुआविया की बेअत से इंकार किया तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने ख़ादिमों और लड़कों को जमा किया और कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि हर बहाना करने वाले के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा खड़ा किया जाएगा

٧١١١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَمَّا خَلَعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَزِيدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ جَمَعَ ابْنُ عُمَرَ حَشَمَهُ وَوَلَدَهُ فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ،

और हमने उस शख़्स (यज़ीद) की बेअत अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर की है और मेरे इल्म में कोई बहाना इससे बढ़कर नहीं है कि किसी शख़्स से अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर बेअत की जाए और फिर उससे जंग की जाए और देखो मदीनावालों! तुममें से जो कोई यज़ीद की बेअत को तोड़े और दूसरे किसी से बेअत करे तो मुझमें और उसमें कोई रिश्ता नहीं रहा, मैं उससे अलग हूँ। (राजेअ : 3188)

وَإِنَّا قَدْ بَايَعْنَا هَذَا الرَّجُلَ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ غَدْرًا أَعْظَمَ مِنْ أَنْ يُبَايَعَ رَجُلٌ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، ثُمَّ يُنْصَبُ لَهُ الْقِتَالُ وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ أَحَدًا مِنْكُمْ خَلَعَهُ وَلاَ بَايَعَ فِي هَذَا الأَمْرِ إِلاَّ كَانَتِ الْفَيْصَلُ بَيْنِي وَبَيْنَهُ)).

[راجع: ٣١٨٨]

तश्रीह : हुआ ये था कि पहले पहल मदीना वालों ने यज़ीद का अच्छा समझा तो उससे बेअत कर ली थी फिर लोगों को उसके हाल पूछने के बाद यज़ीद के नाइब उष्मान बिन मुहम्मद इब्ने अबी सुफ़यान को मदीना से निकाल दिया और यज़ीद की बेअत तोड़ दी।

وَإِنَّا قَدْ بَايَعْنَا هَذَا الرَّجُلَ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ غَدْرًا أَعْظَمَ مِنْ أَنْ يُبَايَعَ رَجُلٌ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، ثُمَّ يُنْصَبُ لَهُ الْقِتَالُ وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ أَحَدًا مِنْكُمْ خَلَعَهُ وَلاَ بَايَعَ فِي هَذَا الأَمْرِ إِلاَّ كَانَتِ الْفَيْصَلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ)).

[راجع: ٣١٨٨]

और हमने उस शख़्स (यज़ीद) की बेअ़त अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर की है और मेरे इल्म में कोई बहाना इससे बढ़कर नहीं है कि किसी शख़्स से अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर बेअ़त की जाए और फिर उससे जंग की जाए और देखो मदीनावालों! तुममें से जो कोई यज़ीद की बेअ़त को तोड़े और दूसरे किसी से बेअ़त करे तो मुझमें और उसमें कोई रिश्ता नहीं रहा, मैं उससे अलग हूँ। (राजेअ : 3188)

तश्रीह : हुआ ये था कि पहले पहल मदीना वालों ने यज़ीद का अच्छा समझा तो उससे बेअ़त कर ली थी फिर लोगों को उसके ह़ाल पूछने के बाद यज़ीद के नाइब उ़स्मान बिन मुहम्मद इब्ने अबी सुफ़यान को मदीना से निकाल दिया और यज़ीद की बेअ़त तोड़ दी।

٧١١٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ، عَنْ عَوْفٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ قَالَ: لَمَّا كَانَ ابْنُ زِيَادٍ وَمَرْوَانُ بِالشَّأْمِ وَوَثَبَ ابْنُ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ وَوَثَبَ الْقُرَّاءُ بِالْبَصْرَةِ، فَانْطَلَقْتُ مَعَ أَبِي إِلَى أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَيْهِ فِي دَارِهِ وَهُوَ جَالِسٌ فِي ظِلِّ عُلِّيَّةٍ لَهُ مِنْ قَصَبٍ، فَجَلَسْنَا إِلَيْهِ فَأَنْشَأَ أَبِي يَسْتَطْعِمُهُ الْحَدِيثَ فَقَالَ: يَا أَبَا بَرْزَةَ أَلاَ تَرَى مَا وَقَعَ فِيهِ النَّاسُ؟ فَأَوَّلُ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ تَكَلَّمَ بِهِ إِنِّي احْتَسَبْتُ عِنْدَ اللهِ أَنِّي أَصْبَحْتُ سَاخِطًا عَلَى أَحْيَاءِ قُرَيْشٍ إِنَّكُمْ يَا مَعْشَرَ الْعَرَبِ كُنْتُمْ عَلَى الْحَالِ الَّذِي عَلِمْتُمْ مِنَ الذِّلَّةِ وَالْقِلَّةِ وَالضَّلاَلَةِ، وَإِنَّ اللهَ أَنْقَذَكُمْ بِالإِسْلاَمِ وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ حَتَّى بَلَغَ بِكُمْ مَا تَرَوْنَ وَهَذِهِ الدُّنْيَا الَّتِي أَفْسَدَتْ بَيْنَكُمْ إِنَّ ذَاكَ الَّذِي بِالشَّأْمِ وَاللهِ إِنْ يُقَاتِلُ إِلاَّ عَلَى الدُّنْيَا، وَإِنَّ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ

7112. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शिहाब ने, बयान किया उनसे औ़फ़ ने बयान किया, उनसे अबी मिन्हाल ने बयान किया कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ियाद और मरवान शाम में थे और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने मक्का में और ख़वारिज ने बस़रा में क़ब्ज़ा कर लिया था तो मैं अपने वालिद के साथ ह़ज़रत अबू बर्ज़ा असलमी (रज़ि.) के पास गया। जब हम उनके घर में एक कमरे के साये में बैठे हुए थे जो बांस का बना हुआ था, हम उनके पास बैठ गये और मेरे वालिद उनसे बात करने लगे और कहा ऐ अबू बर्ज़ा! आप नहीं देखते लोग किन बातों में आफ़त और इख़्तिलाफ़ में उलझ गये हैं। मैंने उनकी ज़ुबान से सबसे पहली बात ये सुनी कि मैं जो उन क़ुरैश के लोगों से नाराज़ हूँ तो महज़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये, अल्लाह मेरा अज्र देने वाला है। अ़रब के लोगों! तुम जानते हो पहले तुम्हारा क्या हाल था तुम गुमराही में गिरफ़्तार थे, अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिये और ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) के ज़रिये तुमको उस बुरी ह़ालत से नजात दी। यहाँ तक कि तुम इस रुत्बे को पहुँचे। (दुनिया के ह़ाकिम और सरदार बन गये) फिर इसी दुनिया ने तुमको ख़राब कर दिया। देखो! ये शख़्स जो शाम में ह़ाकिम बन बैठा है या'नी मरवान दुनिया के लिये लड़ रहा है। ये लोग जो तुम्हारे सामने हैं (ख़वारिज) वल्लाह! ये लोग सिर्फ़ दुनिया के लिये लड़ रहे हैं और वो जो मक्का में है अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) वल्लाह! वो भी सिर्फ़ दुनिया के

बदलना और अ़रब में फिर बुतपरस्ती का शुरू होना

الأَوْثَانُ

7116. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बरदी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि क़बीला दौस की औ़रतों का ज़ुल ख़ल्स़ा का (त़वाफ़ करते हुए) खोए से खूब उछलेगा और ज़ु ल ख़ल्स़ा क़बीला दौस का बुत था जिसको वो ज़माना जाहिलियत में पूजा करते थे।

٧١١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلْيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ عَلَى ذِي الْخَلَصَةِ، وَذُو الْخَلَصَةِ طَاغِيَةُ دَوْسٍ الَّتِي كَانُوا يَعْبُدُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ)).

तश्रीह़ : कूल्हे मटकाने से मुराद ये है कि उसके गिर्द त़वाफ़ करेंगी मा'लूम हुआ कि का'बा के सिवा और किसी क़ब्र या झण्डे या शद्दे या बुत का त़वाफ़ करना शिर्क है। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि पहले शिर्क और बुतपरस्ती औ़रतों से निकलेगी क्योंकि औ़रतें ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद होती हैं, जल्दी से कुफ़्र की बातें इख़्तियार कर लेती हैं, ह़दीष़ से ये भी निकला कि क़यामत तक कुछ न कुछ इस्लाम बाक़ी रहेगा मगर ज़ईफ़ हो जाएगा। जैसे दूसरी ह़दीष़ में है, **बदअल इस्लामु ग़रीबन व सयऊदु कमा बदअ।** अरब ही के मुल्क से सारे जहान में तौह़ीद फैली है। क़यामत के क़रीब वहाँ भी शिर्क होने लगेगा। दूसरे मुल्कों का क्या कहना वो तो अब भी शिर्क और मुश्रिकों से पटे पड़े हैं। दूसरी रिवायत मे यूँ है कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक लात और उ़ज़्ज़ा की फिर से पूजा न शुरू होगी। तीसरी रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले बुत परस्ती शुरू न कर देंगे। ह़ाकिम की रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि बनी आ़मिर की औ़रतों के मूँढ़ ज़ुल ख़ल्स़ा के पास न लड़ें और और टक्कर न खाएँ। एक रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले मुश्रिकों से न मिल जाएँ। मआ़ज़ल्लाह! हमारे पैग़म्बर स़ाह़ब दुनिया में इसीलिये तशरीफ़ लाए थ कि अल्लाह की तौह़ीद जारी करें शिर्क और कुफ़्र और बुतपरस्ती की कमर तोड़ें। बस जो शख़्स़ शिर्क और शिर्क के मक़ामात को मिटाए, बुतों और थानों और झण्डों और क़ब्रों और गुम्बदों को जहाँ पर शिर्क किया जाता है, उनसे दिली नफ़रत करे वही दरह़क़ीक़त पैग़म्बर स़ाह़ब का पैरोकार है और यूँ तो हर कोई दा'वा करता है में पैग़म्बर का आ़शिक़ हूँ, पर ए'लानिया शिर्क होते देखता है और मुँह से एक ह़र्फ़ नहीं निकालता ऐसा ज़ुबानी दा'वा कुछ काम नहीं आएगा।

7117. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि क़ह़त़ान का एक शख़्स़ (बादशाह बनकर) निकलेगा और लोगों को अपने डंडे से हाँकेगा। (राजेअ़ : 3517)

٧١١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ)).

[راجع: ٣٥١٧]

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन स़ख़र है। जंगे ख़ैबर में मुसलमान होकर अस़्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में दाख़िल हुए और सुह़बते नबवी में हमेशा ह़ाज़िर रहे। 78 साल की उ़म्र में 58 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। एक छोटी सी बिल्ली पाल रखी थी, उसी से अबू हुरैरह (रज़ि .) मशहूर हुए रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू। क़यामत के क़रीब

जब तक उसे मअ़सियत का हुक्म न दिया जाए। फिर जब उसे मअ़सियत का हुक्म दिया जाए तो न सुनना बाक़ी रहता है न इत़ाअ़त करना। (राजेअ़ : 2955)

بِمَعْصِيَةٍ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلاَ سَمْعَ وَلاَ طَاعَةَ)). [راجع: ٢٩٥٥]

अमीर हा या इमाम मुज्तहिद ग़लती होने का इम्कान सबसे है, इसलिये ग़लती में उनकी इत़ाअ़त करना जाइज़ नहीं है। इसी से अंधी तक़्लीद की जड़ कटती है। आजकल किसी इमाम मस्जिद का इमाम व ख़लीफ़ा बन बैठना और अपने न मानने वालों को इस ह़दीष़ का मिस्दाक़ ठहराना इस ह़दीष़ का मज़ाक़ उड़ाना है और लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल का मिस्दाक़ बनना है जबकि ऐसे इमाम अग़्यार की ग़ुलामी में रहकर ख़लीफ़ा कहलाकर ख़िलाफ़ते इस्लामी का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7145. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दस्ता भेजा और उस पर अंस़ार के एक शख़्स़ को अमीर बनाया और लोगों को हुक्म दिया कि इनकी इत़ाअ़त करें। फिर अमीर फ़ौज के लोगों पर ग़ुस्सा हुए और कहा कि क्या आँह़ज़रत (ﷺ) ने तुम्हें मेरी इत़ाअ़त का हुक्म नहीं दिया है? लोगों ने कहा कि ज़रूर दिया है। इस पर उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि लकड़ी जमा करो और उससे आग लगाओ और उसमें कूद पड़ो। लोगो ने लकड़ी जमा की और आग जलाई, जब कूदना चाहा तो एक दूसरे को लोग देखने लगे और उनमें से कुछ ने कहा कि हमने आँह़ज़रत (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी आग से बचने के लिये की थी, क्या फिर हम इसमें ख़ुद ही दाख़िल हो जाएँ। इसी दौरान में आग ठण्डी हो गई और अमीर को ग़ुस्सा भी जाता रहा। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि अगर ये लोग उसमे कूद पड़ते तो फिर उसमें से न निकल सकते। इत़ाअ़त सिर्फ़ अच्छी बातों में है। (राजेअ़ : 3340)

٧١٤٥– حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ، فَغَضِبَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: عَزَمْتُ عَلَيْكُمْ لَمَا جَمَعْتُمْ حَطَبًا وَأَوْقَدْتُمْ نَارًا ثُمَّ دَخَلْتُمْ فِيهَا، فَجَمَعُوا حَطَبًا فَأَوْقَدُوا فَلَمَّا هَمُّوا بِالدُّخُولِ فَقَامَ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّمَا تَبِعْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِرَارًا مِنَ النَّارِ أَفَنَدْخُلُهَا؟ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ خَمَدَتِ النَّارُ وَسَكَنَ غَضَبُهُ فَذُكِرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ دَخَلُوهَا مَا خَرَجُوا مِنْهَا أَبَدًا، إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٣٣٤٠]

ग़लत बातों में इत़ाअ़त जाइज़ नहीं है। ये अमीरे लश्कर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी अंस़ारी (रज़ि.) थे ग़ुस्से में उनसे ये बात हुई ग़ुस्सा ठण्डा होने तक वो आग भी ठण्डी हो गई।

बाब 5 : जिसे बिन मांगे सरदारी मिले तो अल्लाह उसकी मदद करेगा

٥– باب مَنْ لَمْ يَسْأَلِ الإِمَارَةَ أَعَانَهُ اللهُ

अल्लाह ने आपको सिखाई है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर फ़लाँ फ़लाँ दिन फ़लाँ फ़लाँ जगह जमा हो जाओ। चुनाँचे औरतें जमा हुई और आँहज़रत (ﷺ) उनके पास आये और उन्हें उसकी ता'लीम दी जो अल्लाह ने आपको सिखाया था। फिर आपने फ़र्माया, तुममें से जो औरत भी अपनी ज़िंदगी में अपने तीन बच्चे आगे भेज देगी (या'नी उनकी वफ़ात हो जाएगी) तो वो उसके लिये दोज़ख़ से रुकावट बन जाएँगे। इस पर उनमें से एक ख़ातून ने कहा, या रसूलल्लाह! दो? उन्होंने इस कलिमे को दो मर्तबा दोहराया, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ दो, दो, दो भी यही दर्जा रखते हैं। (राजेअ : 101)

تَعَلَّمْنَا مِمَّا عَلَّمَكَ اللهُ فَقَالَ : اجْتَمِعْنَ فِي يَوْمِ كَذَا وَكَذَا فِي مَكَانِ كَذَا وَكَذَا فَاجْتَمَعْنَ فَأَتَاهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَعَلَّمَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ، ثُمَّ قَالَ: ((مَا مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تُقَدِّمُ بَيْنَ يَدَيْهَا مِنْ وَلَدِهَا ثَلاَثَةً، إِلاَّ كَانَ لَهَا حِجَابًا مِنَ النَّارِ)) فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ يَا رَسُولَ اللهِ وَاثْنَيْنِ قَالَ : فَأَعَادَتْهَا مَرَّتَيْنِ ثُمَّ قَالَ: ((وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ)).

[راجع: ١٠١]

बाब का मतलब यहीं से निकलता है। किरमानी ने कहा इस क़ौल से कि वो उसके लिये दोज़ख़ से आड़ होंगे क्योंकि ये अम्र बग़ैर अल्लाह के बतलाए क़यास और राय से मा'लूम नहीं हो सकता।

बाब 10 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद, मेरी उम्मत की एक जमाअत हक़ पर ग़ालिब रहेगी

और जंग करती रहेगी और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि उस गिरोह से दीन के आलिमों का गिरोह मुराद है।

١٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ عَلَى الْحَقِّ، يُقَاتِلُونَ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ)).

अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी उस्ताद इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि इससे जमाअ़त अहले हदीष़ मुराद है।

7311. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने, उनसे मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा (उसमें इल्मी व दीनी ग़ल्बा भी दाख़िल है) यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी और वो ग़ालिब ही रहेंगे। (राजेअ : 3640)

٧٣١١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ)). [راجع: ٣٦٤٠]

तश्रीह : ये दूसरी हदीष़ के ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें ये है कि क़यामत बदतरीन ख़ल्कुल्लाह पर क़ायम होगी क्योंकि ये बदतरीन लोग एक मुक़ाम में होंगे और वो गिरोह दूसरे मुक़ाम में होगा या इस हदीष़ में अम्रुल्लाह से ये मुराद है यहाँ तक कि क़यामत क़रीब आन पहुँचे तो क़यामत से कुछ पहले ये फ़िर्क़ा वाले मर जाएँगे और निरे बुरे लोग रह जाएँगे दूसरी हदीष़ में है कि क़यामत के क़रीब एक हवा चलेगी जिससे हर मोमिन की रूह क़ब्ज़ हो जाएगी।

7312. हमसेइस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना, वो ख़ुत्बा दे

٧٣١٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ

7312. हमसेइस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना, वो ख़ुत्बा दे

٧٣١٢- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ

रहे थे, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह जिसके साथ ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ फ़र्मा देता है और मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ और देता अल्लाह है और इस उम्मत का मामला हमेशा दुरुस्त रहेगा, यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाए या (आपने यूँ फ़र्माया कि) यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचे। (राजेअ़ : 71)

أَبِي سُفْيَانُ يَخْطُبُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَيُعْطِي اللهُ وَلَنْ يَزَالَ أَمْرُ هذِهِ الأُمَّةِ مُسْتَقِيمًا حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، أَوْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ)).

[راجع: ٧١]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि अल्लाह का दीन इस्लाम क़यामत तक क़ायम रहेगा मुआनिदीने इस्लाम लाख कोशिश करें मगर,

फूँकों से ये चराग़ बुझाया न जाएगा

रहे थे, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह जिसके साथ ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ फ़र्मा देता है और मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ और देता अल्लाह है और इस उम्मत का मामला हमेशा दुरुस्त रहेगा, यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाए या (आपने यूँ फ़र्माया कि) यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचे। (राजेअ : 71)

أَبِي سُفْيَانُ يَخْطُبُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَيُعْطِي اللهُ وَلَنْ يَزَالَ أَمْرُ هَذِهِ الأُمَّةِ مُسْتَقِيمًا حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، أَوْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ)). [راجع: ٧١]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि अल्लाह का दीन इस्लाम क़यामत तक क़ायम रहेगा मुआनिदीने इस्लाम लाख कोशिश करें मगर,

फूँकों से ये चराग़ बुझाया न जाएगा

बाब 11 : अल्लाह तआला का सूरह अन्आम में यूँ फ़र्माना कि या वो तुम्हारे कई फ़िर्क़े कर दे

١١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:
﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾ [الأنعام : ٦٥]

7313. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ये आयत नाज़िल हुई कि, कहो कि वो इस पर क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अज़ाब भेजे। तो आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे बाअज़्मत व बुज़ुर्ग मुँह की पनाह मांगता हूँ, या तुम्हारे पैरों के नीचे से (अज़ाब भेजे) तो उस पर फिर आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे मुबारक मुँह की पनाह मांगता हूँ, फिर जब ये आयत नाज़िल हुई कि, या तुम्हें फ़िर्क़ों में बांट दे और तुममें से कुछ को कुछ का डर चखाए, तो आपने फ़र्माया कि ये दोनों आसान व सहल हैं। (राजेअ : 4628)

٧٣١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قال أَعُوذُ بِوَجْهِكَ ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قَالَ أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَلَمَّا نَزَلَتْ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ﴾ قَالَ هَاتَانِ أَهْوَنُ أَوْ أَيْسَرُ. [راجع: ٤٦٢٨]

ऊपर से पत्थरों या बारिश का अज़ाब मुराद है। नीचे से ज़लज़ला और ज़मीन में धंस जाना मुराद है।

बाब 12 : एक अम्रे मा'लूम को दूसरे अम्रे वाज़ेह से तश्बीह देना जिसका हुक्म अल्लाह ने बयान कर दिया है ताकि पूछने वाला समझ जाए

١٢- باب مَنْ شَبَّهَ أَصْلاً مَعْلُومًا بِأَصْلٍ مُبَيَّنٍ، قَدْ بَيَّنَ اللهُ حُكْمَهُمَا لِيَفْهَمَ السَّائِلُ.

तश्रीह : इसी को क़यास कहते हैं। बाब की दोनों अहादीष़ से क़यास का जवाज़ निकलता है लेकिन इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने सहाबा में से और आमिर शअबी और इब्ने सीरीन ने फ़ुक़हा में से क़यास का इंकार किया है। बाक़ी तमाम फ़ुक़हा ने क़यास के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ किया है। जब इसकी ज़रूरत हो और जुम्हूरे सहाबा और ताबेईन से क़यास मन्क़ूल

किया। बयान किया कि मैंने ये नबी करीम (ﷺ) से सुना और मुझे मा'लूम हुआ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहले यमन के लिये यलमलम (मीक़ात है) और इराक़ का ज़िक्र हुआ तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में इराक़ नहीं था।

الْمَدِينَةِ: قَالَ سَمِعْتُ هَذَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَبَلَغَنِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: قَالَ: ((وَلأَهْلِ الْيَمَنِ ((يَلَمْلَمُ)) وَذُكِرَ الْعِرَاقُ فَقَالَ : لَمْ يَكُنْ عِرَاقٌ يَوْمَئِذٍ.

ये मीक़ात एहरामे हज्ज की मीक़ात हैं इस लिहाज़ से क़ाबिले ज़िक्र हैं यही बाब से मुताबक़त है।

7345. हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मूसा बिन इस्माईल बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे उनके वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) को जबकि आप मुक़ामे ज़ुल हुलैफ़ह में पड़ाव किये हुए थे, ख़्वाब दिखाया गया और कहा गया कि आप एक मुबारक वादी में हैं। (राजेअ : 483)

٧٣٤٥– حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ أُرِيَ وَهُوَ فِي مُعَرَّسِهِ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَقِيلَ لَهُ إِنَّكَ بِبَطْحَاءَ مُبَارَكَةٍ. [راجع: ٤٨٣]

तश्रीह : ज़ुलहुलैफ़ह में एक मुबारक वादी है जिसका ज़िक्र किया गया। हाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में जो अहादीष़ बयान की उससे मदीना की फ़ज़ीलत ज़ाहिर की और इसकी फ़ज़ीलत में शक क्या है? वहाँ वह्य उतरती रही, वहीं आँहज़रत (ﷺ) की क़ब्र है और मिम्बर है जो बहिश्त की एक क्यारी है। कलाम इसमें हैं कि क्या मदीना के आलिम दूसरे मुल्कों के आलिमों पर मुक़द्दम हैं, तो अगर ये मक़सूद हो कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में या उस ज़माने में जब तक सहाबा किराम (रज़ि.) मदीना में जमा थे तो ये मुसल्लम है। अगर ये मुराद हो कि हर ज़माने में तो इसमें नज़ाअ है और कोई वजह नहीं कि मदीने के आलिम हर ज़माने में दूसरे मुल्कों के आलिमों पर मुक़द्दम हों। इसलिये कि अइम्म-ए-मुज्तहिदीन के ज़माने के बाद फिर मदीना में एक भी आलिम ऐसा नहीं हुआ जो दूसरे मुल्कों के किसी आलिम से भी ज़्यादा इल्म रखता हो या दूसरे मुल्कों के सब आलिमों से बढ़कर हो बल्कि मदीना में ऐसे-ऐसे बिदअती और बदनिय्यत लोग जाकर रहे जिसके बिदअती और बदनिय्यत होने में कोई शक नहीं हो सकता।

बाब 17 : अल्लाह तआला का फ़र्मान सूरह आले इमरान में कि ऐ पैग़म्बर! आपको उस काम में कोई दख़ल नहीं आख़िर आयत तक

١٧– باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

7346. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सालिम ने और उन्हे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़ज्र की नमाज़ में ये दुआ रुकूअ से सर उठाने के बाद पढ़ते थे कि, ऐ अल्लाह! फ़लाँ और फ़लाँ को अपनी रहमत से दूर कर दे। उस पर अल्लाह अज़्ज़ व जल ने ये आयत नाज़िल की कि आपको इस मामले में कोई इख़्तियार नहीं है। या

٧٣٤٦– حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ فِي الأَخِيرَةِ)) ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا

बाब 17 : अल्लाह तआला का फ़र्मान सूरह आले इमरान में कि ऐ पैग़म्बर! आपको उस काम में कोई दख़ल नहीं आख़िर आयत तक

١٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

7346. हमसे अह्मद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने और उन्हे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़ज्र की नमाज़ में ये दुआ रुकूअ से सर उठाने के बाद पढ़ते थे कि, ऐ अल्लाह! फ़लाँ और फ़लाँ को अपनी रह्मत से दूर कर दे। उस पर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल ने ये आयत नाज़िल की कि आपको इस मामले में कोई इख़्तियार नहीं है। या

٧٣٤٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ فِي الأَخِيرَةِ)) ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا

अल्लाह! उनकी तौबा क़ुबूल कर ले या उन्हें अ़ज़ाब दे कि बिला शुब्हा वो ह्द से तजावुज़ करने वाले हैं। (राजेअ़ : 469)

وَفُلاَنًا)) فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾ [آل عمران: ١٢٨]. [راجع: ٤٦٩]

وَفُلاَنًا)) فَأَنْزَلَ اللهُ عزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾ [آل عمران: ١٢٨]. [راجع: ٤٦٩]

अल्लाह! उनकी तौबा क़ुबूल कर ले या उन्हें अ़ज़ाब दे कि बिला शुब्हा वो ह़द से तजावुज़ करने वाले हैं। (राजेअ़ : 469)

١٨- باب قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾ [الكهف: ٥٤] وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلاَّ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ﴾ [العنكبوت: ٤٦].

बाब 18 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह कहफ़ में, और इंसान सबसे ज़्यादा झगड़ालू है

और इर्शादे ख़ुदावन्दी सूरह अ़न्कबूत में, और तुम अहले किताब से बह़ष़ न करो लेकिन उस त़रीक़े से जो अच्छा हो या'नी नर्मी के साथ अल्लाह के पैग़म्बरों और उसकी किताबों का अदब मल्हूज़ रखकर उनसे बह़ष़ करो। (अ़न्कबूत : 46)

٧٣٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا عَتَّابُ بْنُ بَشِيرٍ عَنْ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ بِنْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُمْ أَلاَ تُصَلُّونَ فَقَالَ عَلِيٌّ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا أَنْفُسُنَا بِيَدِ اللهِ فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَنَا بَعَثَنَا فَانْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ قَالَ لَهُ ذَلِكَ : وَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيْهِ شَيْئًا، ثُمَّ سَمِعَهُ وَهُوَ مُدْبِرٌ يَضْرِبُ فَخِذَهُ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾. مَا أَتَاكَ لَيْلاً فَهُوَ طَارِقٌ وَيُقَالُ الطَّارِقُ: النَّجْمُ وَالثَّاقِبُ الْمُضِيءُ يُقَالُ: أَثْقِبْ نَارَكَ لِلْمُوقِدِ. [راجع: ١١٢٧]

7347. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि और मुझसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़त्ताब बिन बशीर ने ख़बर दी, उन्हें इस्ह़ाक़ इब्ने अबी राशिद ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हे ज़ैनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके और फ़ात़िमा बिन्ते रसूलुल्लाह (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) के घर एक रात आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया क्या तुम लोग तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ते। अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं पस जब वो हमें उठाना चाहे तो हमको उठा देगा। ज्यों ही मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये कहा तो आप पीठ मोड़कर वापस जाने लगे और कोई जवाब नहीं दिया लेकिन वापस जाते हुए आप अपनी रान पर हाथ मार रहे थे और कह रहे थे कि, और इंसान बड़ा ही झगड़ालू है, अगर कोई तुम्हारे पास रात में आए तो त़ारिक़ कहलाएगा और क़ुर्आन में जो वत्त़ारिक़ का लफ़्ज़ आया है उससे मुराद सितारा है और ष़ाक़िब बमा'नी चमकता हुआ। अ़रब लोग आग जलाने वाले से कहते हैं। अष़्क़ुब नारक या'नी आग रोशन कर। इससे लफ़्ज़े ष़ाक़िब है। (राजेअ़ : 1127)

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ये जवाब बत़रीक़ इंकार के नहीं दिया मगर उनसे नींद की ह़ालत में ये कलाम निकल गया, इसमे शक नहीं कि अगर वो आँह़ज़रत (ﷺ) के फ़र्माने पर उठ खड़े होते और नमाज़ पढ़ते तो और ज़्यादा अफ़ज़ल होता। अगरचे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने जो कहा वो भी दुरुस्त था मगर किसी शख़्स़ का जगाना और बेदार करना भी अल्लाह ही का जगाना और बेदार करना है। ह़ज़रत अ़ली(रज़ि.) का उस मौक़े पर ये कहना कि जब अल्लाह हमको जगाएगा तो उठेंगे मह़ज़ मुजादिला और मुकाबिरा था, इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ये आयत पढ़ते हुए तशरीफ़ ले गये। और तहज्जुद की नमाज़ कुछ फ़र्ज़ न थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) उनको मजबूर करते। दूसरे मुम्किन है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) उसके बाद उठे हों और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी हो। (वह़ीदी)

٧٣٤٨- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ رَسُولُ الله ﷺ فَقَالَ: انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمِدْرَاسِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَنَادَاهُمْ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ يَهُودَ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ قَالَ: فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ الله ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: قَدْ بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ الله ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ)) ثُمَّ قَالَهَا الثَّالِثَةَ فَقَالَ: ((اعْلَمُوا إِنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ مِنْ هَذِهِ الأَرْضِ، فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ، وَإِلاَّ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ)).

[راجع: ٣١٦٧]

7348. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद अबू सईद कैसान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम मस्जिदे नबवी में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया यहूदियों के पास चलो। चुनाँचे हम आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम उनके मदरसे तक पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने खड़े होकर उन्हें आवाज़ दी और फ़र्माया ऐ यहूदियों! इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। इस पर यहूदियों ने कहा कि अबुल क़ासिम! आप (ﷺ) ने अल्लाह का हुक्म पहुँचा दिया। रावी ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने दोबारा उनसे फ़र्माया कि यही मेरा मक़्सद है, इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। उन्होंने कहा कि अबुल क़ासिम! आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया। फिर आपने यही बात तीसरी बार कही और फ़र्माया, जान लो कि सारी ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है और मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस जगह से बाहर कर दूँ। पस तुममें से जो कोई अपनी जायदाद के बदले में कोई क़ीमत पाता हो तो उसे बेच ले वरना जान लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। (तुमको ये शहर छोड़ना होगा)। (राजेअ : 3167)

١٩- باب قَوْلِ الله تَعَالَى : ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ [البقرة ١٤٣] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِلُزُومِ الْجَمَاعَةِ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ.

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, और मैंने इसी त़रह तुम्हें उम्मते वस्त़ बना दिया (या'नी मोतदिल और सीधी राह पर चलने वाली) और उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअ़त को लाज़िम पकड़ने का हुक्म दिया और आपकी मुराद जमाअ़त से अहले इल्म की जमाअ़त थी।

٧٣٤٩- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

7349. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे

बाब 19 : अल्लाह तआला का इर्शाद, और मैंने इसी तरह तुम्हें उम्मते वस्त बना दिया (या'नी मोतदिल और सीधी राह पर चलने वाली) और उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअत को लाज़िम पकड़ने का हुक्म दिया और आपकी मुराद जमाअत से अहले इल्म की जमाअत थी।

١٩ – باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ [البقرة ١٤٣] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِلُزُومِ الْجَمَاعَةِ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ.

7349. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे

٧٣٤٩– حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू सालेह (ज़क्वान) ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन नूह (अ.) को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा, क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो अर्ज़ करेंगे कि हाँ ऐ रब! फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या इन्होंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो कहेंगे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआला हज़रत नूह (अ.) से पूछेगा, तुम्हारे गवाह कौन हैं? नूह (अ.) अर्ज़ करेंगे कि मुहम्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत। फिर तुम्हें लाया जाएगा और तुम लोग उनके हक़ में शहादत (गवाही) दोगे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, और इसी तरह मैंने तुम्हें दरम्यानी उम्मत बनाया, कहा कि वस्त बमा'नी अदल (मियानारवी) है, ताकि तुम लोगों के लिए गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने। इस्हाक़ बिन मंसूर से जा'फ़र बिन औन ने रिवायत किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही हदीष बयान की। (राजेअ : 3339)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ هَلْ بَلَّغَكُمْ فَيَقُولُونَ مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ فَيَقُولُ مَنْ شُهُودُكَ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيُجَاءُ بِكُمْ فَتَشْهَدُونَ)) ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ – قَالَ عَدْلاً – ﴿لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [البقرة ١٤٣]. وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٣٣٩]

तश्रीह : हालाँकि मुसलमानों ने हज़रत नूह (अ.) को दुनिया में नहीं देखा न उनकी उम्मत वालों को मगर यक़ीन के साथ गवाही देंगे क्योंकि जो बात अल्लाह और रसूल के फ़र्माने से और तवातुर के साथ सुनी जाए वो मिष्ल देखी हुई बात की यक़ीनी होती है और दुनिया में भी ऐसी गवाही ली जाती है। मषलन एक शख़्स किसी का बेटा हो और सब लोगों में मशहूर हो तो ये गवाही दे सकते हैं कि वो फ़लाँ शख़्स का बेटा है हालाँकि उसको पैदा होते वक़्त आँख से किसी ने नहीं देखा। इस आयत से कुछ ने ये निकाला है कि इज्माअ हुज्जत है क्योंकि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को उम्मते आदिला फ़र्माया और ये मुम्किन नहीं कि सारी उम्मत का इज्माअ नाहक़ और बातिल पर हो जाए।

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू स़ालेह़ (ज़क्वान) ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन नूह़ (अ.) को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा, क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो अ़र्ज़ करेंगे कि हाँ ऐ रब! फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या इन्होंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो कहेंगे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत नूह़ (अ.) से पूछेगा, तुम्हारे गवाह कौन हैं? नूह़ (अ.) अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत। फिर तुम्हें लाया जाएगा और तुम लोग उनके ह़क़ में शहादत (गवाही) दोगे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, और इसी त़रह़ मैंने तुम्हें दरम्यानी उम्मत बनाया, कहा कि वस्त़ बमा'नी अ़दल (मियानारवी) है, ताकि तुम लोगों के लिए गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने। इस्ह़ाक़ बिन मंसूर से जा'फ़र बिन औ़न ने रिवायत किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ : 3339)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ هَلْ بَلَّغَكُمْ فَيَقُولُونَ مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ فَيَقُولُ مَنْ شُهُودُكَ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيُجَاءُ بِكُمْ فَتَشْهَدُونَ)) ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ – قَالَ عَدْلاً – ﴿لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [البقرة : ١٤٣]. وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.

[راجع: ٣٣٣٩]

तश्रीह : ह़ालाँकि मुसलमानों ने ह़ज़रत नूह़ (अ.) को दुनिया में नहीं देखा न उनकी उम्मत वालों को मगर यक़ीन के साथ गवाही देंगे क्योंकि जो बात अल्लाह और रसूल के फ़र्माने से और तवातुर के साथ सुनी जाए वो मिष़्ल देखी हुई बात की यक़ीनी होती है और दुनिया में भी ऐसी गवाही ली जाती है। मष़लन एक शख़्स़ किसी का बेटा हो और सब लोगों में मशहूर हो तो ये गवाही दे सकते हैं कि वो फ़लाँ शख़्स़ का बेटा है ह़ालाँकि उसको पैदा होते वक़्त आँख से किसी ने नहीं देखा। इस आयत से कुछ ने ये निकाला है कि इज्माअ़ हु़ज्जत है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को उम्मते आ़दिला फ़र्माया और ये मुम्किन नहीं कि सारी उम्मत का इज्माअ़ नाह़क़ और बात़िल पर हो जाए।

बाब 20 : जबकि कोई आ़मिल या ह़ाकिम इज्तिहाद करे और लाइल्मी में रसूल (ﷺ) के हुक्म के ख़िलाफ़ कर जाए तो उसका फ़ैसला नाफ़िज़ नहीं होगा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिसने कोई ऐसा काम किया जिसके बारे में हमारा कोई फ़ैसला नहीं था तो वो रद्द है

٢٠– باب إِذَا اجْتَهَدَ الْعَامِلُ – أَوِ الْحَاكِمُ– فَأَخْطَأَ خِلاَفَ الرَّسُولِ مِنْ غَيْرِ عِلْمٍ، فَحُكْمُهُ مَرْدُودٌ لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ)).

उन कुछ लोगों के क़ौल की तर्दीद मक़्सूद है जो क़ाज़ी के हर फ़ैसले को बहरहाल नाफ़िज़ व ह़क़ क़रार देते हैं।

7350, 7351. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अबूबक्र ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मजीद बिन सुहैल बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यब से सुना, वो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी अ़दी अंसारी के एक साहब सुवाद बिन ग़ज़िया को ख़ैबर का आ़मिल बनाकर भेजा तो वो उम्दह क़िस्म की खजूरें वसूल करके लाए। आँहुज़ूर (ﷺ) ने पूछा क्या ख़ैबर की तमाम खजूरें ऐसी ही हैं? उन्होंने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! हम ऐसी एक साअ़ खजूर दो साअ़ (ख़राब) खजूर के बदले ख़रीद लेते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा न किया करो बल्कि (जिंस को जिंस के बदले) बराबर बराबर में ख़रीदो, या यूँ करो कि रद्दी खजूर नक़द बेच डालो फिर ये खजूर उसके बदले ख़रीद लो। इसी तरह हर चीज़ को जो तौलकर बिकती है उसका हुक्म उन ही चीज़ों का है जो नाप कर बिकती हैं। (राजेअ़: 2201,2202)

٧٣٥٠، ٧٣٥١- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يُحَدِّثُ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ وَأَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعَثَ أَخَا بَنِي عَدِيٍّ الأَنْصَارِيَّ وَاسْتَعْمَلَهُ عَلَى خَيْبَرَ فَقَدِمَ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((أَكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا)) قَالَ: لاَ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا لَنَشْتَرِي الصَّاعَ بِالصَّاعَيْنِ مِنَ الْجَمْعِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لاَ تَفْعَلُوا، وَلَكِنْ مِثْلاً بِمِثْلٍ - أَوْ بِيعُوا هَذَا - وَاشْتَرُوا بِثَمَنِهِ مِنْ هَذَا وَكَذَلِكَ الْمِيزَانُ)). [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

बाब 21 : हाकिम का ष़वाब, जबकि वो इज्तिहाद करे और सेहत पर हो या ग़लती कर जाए

٢١- باب أَجْرِ الْحَاكِمِ إِذَا اجْتَهَدَ فَأَصَابَ أَوْ أَخْطَأَ

ष़वाब बहरहाल मिलेगा।

7352. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद मुक़्री मक्की ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हैवह बिन शुरैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अल्हाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिष़ ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स के मौला अबू क़ैस ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जब हाकिम कोई फ़ैसला अपने इज्तिहाद से करे और फ़ैसला सहीह हो तो उसे दोहरा ष़वाब मिलता है और जब किसी फ़ैसले में इज्तिहाद करे और ग़लती कर जाए तो उसे इकहरा ष़वाब मिलता है (इज्तिहाद का) बयान किया कि फिर मैंने ये ह़दीष़ अबूबक्र बिन अ़म्र बिन हज़म से बयान की तो उन्होंने बयान किया कि मुझसे अबू

٧٣٥٢- حدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِىءُ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ، وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ)) قَالَ: فَحَدَّثْتُ

بِهَذَا الْحَدِيثِ أَبَا بَكْرِ بْنَ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ فَقَالَ: هَكَذَا حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. وَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُطَّلِبِ : عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने इसी त़रह़ बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया। और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुत्तलिब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, उनसे अबू सलमा (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी त़रह़ बयान किया।

तश्रीह़ : या'नी मुर्सलन रिवायत की, उसके वालिद ने मौसूलन रिवायत की थी। इस ह़दीष़ से ये निकला कि हर मसले में ह़क़ एक ही अम्र होता है लेकिन मुज्तहिद अगर ग़लती करे तो भी उससे मुवाख़ज़ा न होगा बल्कि उसको अज्र और ष़वाब मिलेगा। ये उस सूरत में है जब मुज्तहिद जान बूझकर नस़ या इज्माअ़ का ख़िलाफ़ न करे वरना गुनहगार होगा और उसकी अ़दालत जाती रहेगी। जैसे ऊपर गुज़र चुका। इस ह़दीष़ से कुछ ने ये भी निकाला है कि हर क़ाज़ी मुज्तहिद होना चाहिये वरना उसकी क़ज़ा स़ह़ीह़ न होगी। अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है और यही राजेह़ है और ह़नफ़िया ने मुक़ल्लिद क़ाज़ी की भी क़ज़ा जाइज़ रखी है और ये कहा है कि मुक़ल्लिद को अपने इमाम के हुक्म के बरख़िलाफ़ हुक्म देना जाइज़ नहीं मगर उस पर कोई दलील नहीं है। मुम्किन है कि आदमी कुछ मसाइल में मुक़ल्लिद हो कुछ मसाइल में मुज्तहिद हो जिस मसले में आदमी तमाम दलाइल को अच्छी त़रह़ देख ले उसमें वो मुज्तहिद हो जाता है और जब उस मसले में मुज्तहिद हो गया तो अब उसको उस मसले में तक़्लीद दुरुस्त नहीं है बल्कि दलील पर अ़मल करना चाहिये। यही क़ौल ह़क़ और यही ष़वाब है और जिसने इसके ख़िलाफ़ किया है कि दलील मा'लूम होने पर भी उसके ख़िलाफ़ अपने इमाम की तक़्लीद पर जमा रहा उसका क़ौल नामा'कूल और ग़लत़ है। दलील मा'लूम होने के बाद दलील की पैरवी करना ज़रूरी है और तक़्लीद जाइज़ नहीं और अल्लाह तआ़ला ने जाबजा क़ुर्आन मे ऐसे मुक़ल्लिदों की मज़म्मत की है जो दलील मा'लूम होने पर भी तक़्लीद पर जमे रहते थे ये स़रीह़ जिहालत और नाइंसाफ़ी है।

٢٢- باب الْحُجَّةِ عَلَى مَنْ قَالَ : إِنَّ أَحْكَامَ النَّبِيِّ ﷺ كَانَتْ ظَاهِرَةً وَمَا كَانَ يَغِيبُ بَعْضُهُمْ عَنْ مُشَاهِدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأُمُورِ الإِسْلاَمِ

बाब 22 : उस शख़्स़ का रद्द जो ये समझता है

कि आँह़ज़रत (ﷺ) के तमाम अह़काम हर एक स़ह़ाबी को मा'लूम रहते थे इस बाब में ये भी बयान किया है कि बहुत से स़ह़ाबा आँह़ज़रत (ﷺ) के पास से ग़ायब रहते थे और उनको इस्लाम की कई बातों की ख़बर न होती थी।

तश्रीह़ : तो कुछ बात अकाबिर स़ह़ाबा पर जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) या अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) थे, पोशीदा रह जाती। जब दूसरे स़ह़ाबा से सुनते तो फ़ौरन उस पर अ़मल करते और अपनी राय से रुजूअ़ करते। स़ह़ाबा, ताबेईन, अइम्मा-ए-दीन सबके ज़मानों में यही होता रहा कुछ अह़ादीष़ उनको पहुँचीं, कुछ न पहुँचीं क्योंकि उस ज़माने में ह़दीष़ की किताबें जमा नहीं हुई थीं। अब ह़नफ़िया का ये समझना कि इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) को सब अह़ादीष़ पहुँची थीं बिलकुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल और ख़िलाफ़े वाक़िया है। ऐसा होता तो ख़ुद इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ये क्यूँ फ़र्माते कि जहाँ तुमको आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ मिल जाए तो मेरा क़ौल छोड़ दो। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को सब अह़ादीष़ न पहुँची हों तो इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) की निस्बत ये ख़्याल करना क्यूँकर स़ह़ीह़ हो सकता है और जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ मसाइल मे ग़लती हुई है तो और इमाम या मुज्तहिद किस शुमार व क़तार में हैं। पस अस़ल इमाम व मुक़तदा मा'सूम अ़निल ख़त़ा सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) ही हैं। उम्मत में किसी का ये मुक़ाम नहीं है।

٧٣٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءٌ، عَنْ عُبَيْدِ

7353. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज

7353. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज

٧٣٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءٌ، عَنْ عُبَيْدِ

ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह़ ने, उनसे उ़बैद बिन उ़मैर ने बयान किया कि अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) से (मिलने की) इजाज़त चाही और ये देखकर कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मशग़ूल हैं आप जल्दी से वापस चले गये। फिर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैंने अभी अ़ब्दुल्लाह बिन कैस (अबू मूसा रज़ि .) की आवाज़ नहीं सुनी थी? उन्हें बुला लो। चुनाँचे उन्हें बुलाया गया तो उ़मर (रज़ि.) ने पूछा कि ऐसा क्यूँ किया? (कि जल्दी वापस हो गये) उन्होंने कहा कि हमें ह़दीष़ में इसका हुक्म दिया गया है! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि इस ह़दीष़ पर कोई गवाह लाओ, वरना मैं तुम्हारे साथ ये (सख़्ती) करूँगा। चुनाँचे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) अंस़ार की एक मज्लिस में गये। उन्होंने कहा कि इसकी गवाही हममें से सबसे छोटा दे सकता है। चुनाँचे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) खड़े हुए और कहा कि हमें दरबारे नबवी से इसका हुक्म दिया जाता था। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये हुक्म मुझे मा'लूम नहीं था, मुझे बाज़ार के कामों ख़रीद व फ़रोख़्त ने इस ह़दीष़ से ग़ाफ़िल रखा। (राजेअ : 2062)

بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو مُوسَى عَلَى عُمَرَ فَكَأَنَّهُ وَجَدَهُ مَشْغُولاً فَرَجَعَ فَقَالَ عُمَرُ: أَلَمْ أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ائْذَنُوا لَهُ؟ فَدُعِيَ لَهُ فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ فَقَالَ: إِنَّا كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، قَالَ: فَأْتِنِي عَلَى هَذَا بِبَيِّنَةٍ أَوْ لأَفْعَلَنَّ بِكَ، فَانْطَلَقَ إِلَى مَجْلِسٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالُوا: لاَ يَشْهَدُ إِلاَّ أَصَاغِرُنَا، فَقَامَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ فَقَالَ : قَدْ كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، فَقَالَ عُمَرُ: خَفِيَ عَلَيَّ هَذَا مِنْ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ.

[راجع: ٢٠٦٢]

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी निस्यान (भूल) को फ़ौरन तस्लीम करके ह़दीष़े नबवी के आगे सर झुका दिया। एक मोमिन मुसलमान की यही शान होनी चाहिये कि ह़दीष़े पाक के सामने इधर उधर की बातें छोड़कर सरे तस्लीम ख़म कर दे। बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है कि कुछ अह़ादीष़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बाद में मा'लूम हुईं, ये कोई ऐब की बात नहीं है। मज़्मूने ह़दीष़ एक बहुत बड़े अदबी, अख़्लाक़ी, समाजी अम्र पर मुश्तमिल है अल्लाह हर मुसलमान को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन।

ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने, उनसे उ़बैद बिन उ़मैर ने बयान किया कि अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) से (मिलने की) इजाज़त चाही और ये देखकर कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मशग़ूल हैं आप जल्दी से वापस चले गये। फिर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैंने अभी अ़ब्दुल्लाह बिन कैस (अबू मूसा रज़ि .) की आवाज़ नहीं सुनी थी? उन्हें बुला लो। चुनाँचे उन्हें बुलाया गया तो उ़मर (रज़ि.) ने पूछा कि ऐसा क्यूँ किया? (कि जल्दी वापस हो गये) उन्होंने कहा कि हमें ह़दीष़ में इसका हुक्म दिया गया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि इस ह़दीष़ पर कोई गवाह लाओ, वरना मैं तुम्हारे साथ ये (सख़्ती) करूँगा। चुनाँचे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) अंस़ार की एक मज्लिस में गये। उन्होंने कहा कि इसकी गवाही हममें से सबसे छोटा दे सकता है। चुनाँचे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) खड़े हुए और कहा कि हमें दरबारे नबवी से इसका हुक्म दिया जाता था। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये हुक्म मुझे मा'लूम नहीं था, मुझे बाज़ार के कामों ख़रीद व फ़रोख़्त ने इस ह़दीष़ से ग़ाफ़िल रखा। (राजेअ़ : 2062)

بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو مُوسَى عَلَى عُمَرَ فَكَأَنَّهُ وَجَدَهُ مَشْغُولاً فَرَجَعَ فَقَالَ عُمَرُ: أَلَمْ أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ائْذَنُوا لَهُ؟ فَدُعِيَ لَهُ فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ فَقَالَ: إِنَّا كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، قَالَ: فَأْتِنِي عَلَى هَذَا بِبَيِّنَةٍ أَوْ لأَفْعَلَنَّ بِكَ، فَانْطَلَقَ إِلَى مَجْلِسٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالُوا: لاَ يَشْهَدُ إِلاَّ أَصَاغِرُنَا، فَقَامَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ فَقَالَ : قَدْ كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، فَقَالَ عُمَرُ: خَفِيَ عَلَيَّ هَذَا مِنْ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ.

[راجع: ٢٠٦٢]

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी निस्यान (भूल) को फ़ौरन तस्लीम करके ह़दीष़े नबवी के आगे सर झुका दिया। एक मोमिन मुसलमान की यही शान होनी चाहिये कि ह़दीष़े पाक के सामने इधर उधर की बातें छोड़कर सरे तस्लीम ख़म कर दे। बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि कुछ अह़ादीष़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बाद में मा'लूम हुईं, ये कोई ऐब की बात नहीं है। मज़्मूने ह़दीष़ एक बहुत बड़े अदबी, अख़्लाक़ी, समाजी अम्र पर मुश्तमिल है अल्लाह हर मुसलमान को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन।

7354. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, कहा मुझसे ज़ुह्री ने, उन्होंने अअ़रज से सुना, उन्होने बयान किया कि मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि तुम समझते हो कि अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की बहुत ज़्यादा ह़दीष़ बयान करते हैं, अल्लाह के हुज़ूर में सबको जाना है। बात ये थी कि मैं एक मिस्कीन शख़्स था और पेट भरने के बाद हर वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रहना चाहता था लेकिन मुहाजिरीन को बाज़ार के कारोबार मशग़ूल रखते थे और अंस़ार को अपने माला की देखभाल मस़रूफ़ रखती थी। मैं एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर था और आपने फ़र्माया कि कौन अपनी चादर फैलाएगा, यहाँ तक मैं अपनी बात पूरी कर लूँ और फिर वो अपनी चादर समेट ले और उसके बाद कभी मुझसे सुनी हुई कोई

٧٣٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ مِنَ الأَعْرَجِ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يُكْثِرُ الْحَدِيثَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَاللهُ الْمَوْعِدُ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مِسْكِينًا أَلْزَمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى مِلْءِ بَطْنِي، وَكَانَ الْمُهَاجِرُونَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وَكَانَتِ الأَنْصَارُ يَشْغَلُهُمُ الْقِيَامُ عَلَى أَمْوَالِهِمْ، فَشَهِدْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ وَقَالَ: ((مَنْ

बात न भूले। चुनाँचे मैंने अपनी चादर जो मेरे जिस्म पर थी, फैला दी और उस ज़ात की क़सम! जिसने आँहज़रत (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा था फिर कभी मैं आपकी कोई ह़दीष़ जो आपसे सुनी थी, नहीं भूला। (राजेअ : 118)

يَبْسُطْ رِدَاءَهُ حَتَّى أَقْضِيَ مَقَالَتِي ثُمَّ يَقْبِضْهُ فَلَنْ يَنْسَ شَيْئًا سَمِعَهُ مِنِّي؟)) فَبَسَطْتُ بُرْدَةً كَانَتْ عَلَيَّ فَوَ الَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا نَسِيتُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْهُ.[راجع: ١١٨]

तश्रीह : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को पाँच हज़ार से ज़ाइद अह़ादीष़ बरज़ुबान याद थीं। कुछ लोग इस कष़रते ह़दीष़ पर रश्क करते, उनके जवाब में आपने ये बयान दिया जो यहाँ मज़्कूर है बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

बाब 23 : आँहज़रत (ﷺ) से एक बात कही जाए और आप उस पर इंकार न करें जिसे तक़रीर कहते हैं तो ये हुज्जत है। आँहज़रत (ﷺ) के सिवा और किसी की तक़रीर हुज्जत नहीं

٢٣- باب مَنْ رَأَى تَرْكَ النَّكِيرِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ حُجَّةً لاَ مِنْ غَيْرِ الرَّسُولِ

तश्रीह : क्योंकि आप ख़ता से मा'सूम और मह़फ़ूज़ थे और आप (ﷺ) का इंकार न करना इस फ़ेअ़ल के जवाज़ की दलील है। दूसरे लोगों का सुकूत जवाज़ की दलील नहीं हो सकता। कुछ ने कहा अगर एक सह़ाबी ने दूसरे सह़ाबा के सामने या एक मुज्तहिद ने एक बात कही और दूसरे सह़ाबा ने या मुज्तहिदों ने उसको सुनकर उस पर सुकूत किया तो इज्माऐ सुकूती कहलाया जाएगा वो भी हुज्जत है जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मुतआ की हुर्मत पर बरसरे मिम्बर बयान किया और दूसरे सह़ाबा ने उस पर इंकार नहीं किया तो गोया इसकी हुर्मत पर इज्माऐ सुकूती हो गया।

7355. हमसे ह़म्माद बिन हुमैद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने, कहा हमसे हमारे वालिद ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन ह़स्सान ने बयान किया, उनसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को देखा कि वो इब्ने स़य्याद के वाक़िये पर अल्लाह की क़सम खाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप अल्लाह की क़सम खाते हैं? उन्होंने कहा कि मैंने उ़मर (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) के सामने अल्लाह की क़सम खाते देखा और आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर कोई इंकार नहीं किया।

٧٣٥٥- حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَحْلِفُ بِاللهِ إِنَّ ابْنَ الصَّيَّادِ الدَّجَّالُ قُلْتُ تَحْلِفُ بِاللهِ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ يَحْلِفُ عَلَى ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيُّ ﷺ.

तश्रीह : अगर इब्ने स़य्याद दज्जाल न होता तो आप ज़रूर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को उस पर क़सम खाने से मना करते। यहाँ ये इश्काल होता है कि ऊपर किताबुल जनाइज़ में गुज़र चुका है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसकी गर्दन मारना चाही तो आपने फ़र्माया अगर वो दज्जाल है तब तो तू इसकी गर्दन न मार सकेगा। अगर दज्जाल नहीं है तो इसका मारना तेरे ह़क़ में बेहतर न होगा। इससे मा'लूम होता है कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शक था, फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के क़सम खाने पर आपने इंकार क्यूँ नहीं किया। इसका जवाब ये है कि शायद पहले आँहज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शुब्हा हो फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये क़सम खाई उस वक़्त मा'लूम हो गया कि वही दज्जाल है। अबू दाऊद ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से निकाला वो क़सम खाते थे और कहते थे बेशक इब्ने स़य्याद ही मसीह़ दज्जाल है और मुम्किन है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) पर इसलिये इंकार न किया हो कि इब्ने स़य्याद भी उन तीस दज्जालों में से एक दज्जाल